राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(आनरेरि डायरेक्टर)-भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ३३

ढाढी बादररो बणायो

वीरवांण

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

ढाढी बादररी बणायो

वीरवांण

सम्पादिका

श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, रावतसर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२ | ख्रिस्ताब्द १९६०
प्रथमावृत्ति १००० | | मूल्य ४.५०

मुद्रक—मूल पाठ—जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर; भूमिका और परिशिष्ट आदि—
अजन्ता प्रिन्टर्स, जयपुर; कव्हर आदि—साधना प्रेस, जोधपुर।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

ACHARYA JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, (Germany); Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; and Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujarat Puratattva Mandira Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Sinhghi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 33

VEERVANA

OF

DHADHEE BADAR

with

Introduction, Appendices, etc.

* * *

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By
The Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2017] [*1960 A D.*

VEERVANA

OF

DHADHEE BADAR

EDITED

With introduction, appendices etc.

Shreemati Rani Lakshmi Kumari Choondawat
of Rawatsar

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V.S. 2016] [1960 A.D.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी–तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.०० । २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५ । ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५ । ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.०० । ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५ । ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण, मूल्य २.०० । ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.०० । ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५ । १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५० । ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५ । १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५ । १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५ । १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५ । १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५ । १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५० । १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५० । १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.०० । १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.०० । २०. काव्यप्रकाशसङ्केत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००, भाग २, मूल्य ८.२५ । २१. वस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, मूल्य ४.०० ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हड़दे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५ । २. क्यामखांरासा–कवि जान, मूल्य ४.७५ । ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५ । ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५० । ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५ । ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५ । ७. कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य, मूल्य २.०० । ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५ । ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५० । १०. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग २, मूल्य १२.०० । ११. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न.पै. । १२. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा, मूल्य ८-२५ न.पै. । १३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५० । १४. वीरवांण, ढाढी वादर कृत, मूल्य ४.५० ।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित । २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा । ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र । ६. वसन्त-विलास फागु । ७. नृत्यरत्नकोश भाग २ । ८. नन्दोपाख्यान । ९ चान्द्रव्याकरण । १०. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि । ११. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ । १२. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह । १३. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर । १४. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी । १५. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ । १६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध । १७. हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि । १८ ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि ।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी । २ गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन । ३. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम । ४ सुजान संवत–कवि उदयराम । ५. राजस्थानी दूहा संग्रह । ६. राठोड़ांरी वंशावली । ७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची । ८. देवजी वगड़ावत और अन्य वार्ताएँ । ९. वगसीराम और अन्य वार्ताएँ ।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानकी स्थापनाके साथ ही हमारी कामना रही है कि राजस्थानसे सम्बद्ध विविध भाषानिबद्ध साहित्यिक ग्रन्थोंके संग्रह और संरक्षणके साथ ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंका प्रकाशन भी किया जाये। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये हमने 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' का कार्य प्रारंभ किया है जिसमें अब तक ३५ ग्रन्थ प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ राजस्थानी भाषामें रचित है और इतिहास-प्रसिद्ध राठोड़ वीर वीरमजीसे सम्बद्ध है। ढाढी बादर नामक मुस्लिम कविकी यह कृति साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण है। बादर अर्थात् बहादुर कविने प्रस्तुत काव्यमें विपक्षियोंका वर्णन भी पूर्ण निष्पक्षता और उदारतासे किया है किन्तु साहित्यिक क्षेत्रमें यह कृति प्रायः उपेक्षित रही है।

इतिहास-प्रसिद्ध चूण्डावत राजवंशोत्पन्न विदुषी लेखिका श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावतने कुछ साहित्यिक कृतियोंके साथ प्रस्तुत काव्य 'वीरवांण' हमें बताया तो हमने सहर्ष इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। साहित्यिक सेवाओंके कारण श्रीमती रानी चूण्डावतजीको हम धन्यवाद देते हैं। साथ ही यह आशा व्यक्त करते हैं कि राजस्थानके राजवंशोंसे सम्बद्ध अन्य व्यक्ति भी श्रीमती रानी चूण्डावतजीके विद्यानुरागका अनुकरण कर अपने संग्रहकी साहित्यिक रचनाओंको शीघ्र ही प्रकाशमें लानेका उपक्रम करेंगे।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर
दशहरा, २०१७ वि०सं०

मुनि जिनविजय
संमान्य सञ्चालक

विषय-तालिका

++++++

भूमिका

राजस्थान बहुत प्राचीन काल से ही सुसांस्कृतिक प्रदेश रहा है। इस कथन के प्रमाण में शिल्प–स्थापत्य, संगीत, चित्रकला और साहित्य के हजारों ही उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। साहित्य में सम्बन्धित देश की आत्मा के दर्शन होते हैं और साहित्य वास्तव में किसी देश की संस्कृति का प्रतीक एवं प्रतिनिधि कहा जा सकता है। राजस्थान भारतीय साहित्य का भण्डार है। राजस्थान में निर्मित साहित्य द्वारा भारतीय संस्कृति का उत्तम और पूर्ण रूपेण चित्रण हुआ है।

राजस्थान में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, बृजभाषा और खड़ी बोली आदि में प्रचुर साहित्यिक निर्माण का कार्य हुआ है। अन्य भाषाओं में थोड़ा बहुत साहित्य-निर्माण होते रहने पर भी राजस्थानी भाषा में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। राजस्थानी भाषा वास्तव में राजस्थानियों की मातृभाषा है जिससे यह स्वाभाविक ही हुआ है कि इस भाषा में हृदयगत् भावनाओं का सजीव और सरस निरूपण हुआ है। राजस्थानी भाषा का साहित्य गद्य और पद्य दोनों में ही मिलता है। राजस्थानी साहित्य वास्तव में समुद्र की भांति गहन है जिसमें नाना प्रकार के ग्रन्थ–रत्न छिपे हुए हैं। राजस्थानी भाषा में कई वर्षों से खोज–कार्य होते रहने पर भी कई ग्रन्थ–रत्नों की जानकारी साहित्य–क्षेत्र में नहीं के समान हैं। ऐसे ही ग्रन्थ–रत्नों में "वीरवांण" की गणना भी हो सकती है।

"वीरवांण" नामक काव्य ग्रन्थ के अपर नाम "नीसाणी वीरमजीरी," "निसाणी वीरमांणरी", "वीरमांण" और "वीरमायण" आदि भी कहे जाते। किंतु प्राप्त हस्तलिखित प्रति में "वीरवांण" नाम ही मिलता है इसलिये प्रकाशन में इसका नाम "वीरवांण" ही दिया गया है।

इस काव्य-ग्रन्थ के एक से अधिक नाम प्रचलित रहने का प्रधान कारण यही ज्ञात होता है कि इस काव्य को अभी तक प्रकाशन का सुअवसर नहीं मिल सका। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि "वीरवांण" के विषय में सम्बन्धित लोगों को जानकारी नहीं रही है। वास्तव में राजस्थान के साहित्य-रसिकों और विद्वानों में "वीरवांण" की चर्चा बराबर रही है, जिसके परिणामस्वरूप इस काव्य के सम्बन्ध में थोड़ी-थोड़ी पंक्तियां कई ग्रन्थों में प्राप्त होती हैं किन्तु उनसे काव्य और कर्ता के सम्बन्ध में बहुत ही सीमित जानकारी मिलती है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य के विकास एवं उन्नयन में प्रायः सभी वर्गों का थोड़ा-बहुत सहयोग रहा है किन्तु इस क्षेत्र में प्रमुख कार्य चारणों, जैन साधुओं, यतियों, क्षत्रियों, रावों, मोतीसरों और ढ़ाढ़ीयों द्वारा सम्पन्न हुआ है। अब तक ढ़ाढ़ीयों द्वारा रचित साहित्य को विशेष महत्व नहीं दिया गया, इसका मुख्य कारण जातिगत द्वेष और रूढ़िमय विचारों से ढ़ाढ़ीयों को निम्न कोटि का समझा जाना है। भारतीय स्वाधीनता के उपरान्त ऐसे विचारों का स्वतः उन्मूलन हो जाता है। अब सभी वर्गों के साहित्य का अनुसंधान, सम्पादन औ प्रकाशन होना चाहिये तथा साहित्यिक क्षेत्र में सबको समान रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

"वीरवांण" का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढ़ाढ़ी था जैसा कि काव्य से प्रकट होता है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान स्व० पं० रामकरणजी आसोपा ने "वीरवांण" के कर्ता का नाम "रामचन्द्र" बताया है[1] किन्तु बिना ठोस प्रमाणों के यह स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह अनिवार्य नहीं है कि साहित्य रचना का कार्य कोई विशेष वर्ग ही कर सकता है। हमारी वर्गगत उपेक्षा के कारण पता नहीं तथाकथित साहित्यकारों की कितनी रचनाएं नष्ट हो चुकी हैं और कितनी रचनाएं अभी अन्धकार में पड़ी हैं ?

चारणों की साहित्य-सेवा तो सर्व प्रसिद्ध है ही किन्तु कविरावों, मोतीसरों, नगारचियों और ढ़ाढ़ियों का कार्य भी वीरों को काव्यमयी वाणी से प्रोत्साहित करना और अपने आश्रय-दाताओं का यश-वर्णन करना रहा है। मांगलिक अवसरों त्यौंहारों और युद्धों में सुयश का काव्यात्मक वर्णन प्रायः उपरोक्त श्रेणी के साहित्यकारों द्वारा ही होता रहा है। आज भी राजस्थान में यह शुभ परम्परा किसी न किसी प्रकार से प्रचलित है।

ढ़ाढ़ी दमानियों और नगारचियों की श्रेणी में लिये जाते हैं तथा सारंगी अथवा सारंगी के प्रकार का एक वाद्य रबाब बजाते हैं।[2] कृष्ण जन्माष्टमी के दूसरे दिन दधिमहोत्सव अथवा नन्द महोत्सव पर वैष्णव मन्दिरों में ढ़ाढ़ी-ढाढिन का स्वांग बनाकर लोग नाचते हैं जिससे ढ़ाढ़ियों की प्राचीनता की जानकारी मिलती है। ढ़ाढ़ी नीचे दिया हुआ पद्य कह कर राम जन्म के समय अपनी विद्यमानता सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं—

दशरथ रे घर जनमियां, हंस ढ़ाढ़िन मुख बोली।
अठारा करोड़ ले चौक सेलिया, काम करन को छोरी॥

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के दबाव से कई जातियों के लोग मुसलमान हो गये थे। "वीरवांण" ग्रन्थ का कर्ता बहादुर भी मुसलमान ढ़ाढ़ी था और इसके आश्रय दाता जोईया भी मुसलमान थे।

बादर ढ़ाढ़ी ने मुसलमान होते हुए भी अपने आश्रय दाता की उदारता से प्रेरित होकर शत्रु पक्ष के राठौड़ वीर वीरमजी का यश वर्णन भारतीय संस्कृति के अनुरूप किया है।

---

१. राजरूपक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित, भूमिका पृष्ठ २।
२. मुर्दम सुमारी रिपोर्ट राज मारवाड़, सन् १८९५ पृ. ३६८।

इस प्रकार "वीरवांण" वास्तव में एक मुसलमान कवि की राजस्थानी भाषा में लिखित महत्वपूर्ण काव्य कृति है।

राजस्थानी काव्य-ग्रंथ "वीरवांण" में वर्णित विषय का सारांश सम्बन्धित विशेषताओं सहित इस प्रकार है:—प्रारंभ में कवि ने शारदा और गणपति की वंदना करते हुए वीरमजी और सम्बन्धित वीरों के विषय में यथातथ्य निरूपण करने का अपना अभिप्राय प्रकट किया है (१ । १–३) [3] कवि ने लिखा है—

सुणी जिती सारी कहुँ, लहु न झूंठ लगार।
मालजेत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥३॥

तत्पश्चात कवि ने जोधपुर राव सलखाजी (वि० स० १४१४–१४३१ और ई० स० १३५७–१३७४) के चारों पुत्रों की वीरता का संक्षिप्त वर्णन एक ही नीसाणी में किया है–

"सुत च्यारूं सलपेसरा, कुल में किरणाला।
राजस बंका राठवड़ वरवीर बड़ाला॥

साथ लिया दल सामठा वीरदा रूखवाला।
भिड़ोया भारत भीमसा दल पारथ वाला॥

देस दसु दीस दाबिया कीया धक चाला।
केवी धस गीर कंदरां वप संक बड़ाला॥"[4]

फिर जेतसिंह जी की गुजरात पर हुई लड़ाई का वर्णन किया गया है और "मालदेवजीरो समो" लिखा गया है। इस युद्ध में गुजरात के यवन शासक मुहम्मद वेगड़ा द्वारा किये गये तीजणियों के हरण के बदले में जगमाल जी द्वारा व्यापारी के वेश में चढ़ाई कर ईद के अवसर पर बादशाह की पुत्री "गींदोली" को अन्य लड़कियों सहित लाने का और अपनी "तींजणियो" को मुक्ति दिलवाने का वर्णन है। फिर "रावजी मालदेवजी रो पेलो झगड़ो" लिखा गया है, जिसमें दिल्ली सुलतान और मुहम्मद वेगड़े की भीड़गढ़ पर सम्मिलित चढ़ाई और मालदेव जी की विजय का वर्णन है।

मालदेव जी के गींदोली सम्बन्धी युद्धों का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

---

३. पहला अंक पृष्ठ का और दूसरा अंक पद्य संख्या का सूचक है।

४. राव सलखाजी के मल्लीनाथजी, जेतमलजी, वीरमजी और शोभासिंहजी नामक चार पुत्र थे (जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ डा. गोरीशंकरजी हीराचन्दजी ओझा पृ. १८४। जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ के राठोड राजवंस वीरमजी से सम्बन्धित है। बीकानेर दुर्ग के सूर्यपोल द्वारा की प्रशस्ति और वैद्य-कुमार ग्रंथ पत्र ४)

"गींदोलीरी लड़ाई में झगड़ा तीन तो रावल मालदेजी आपरै लोकसु एकला किया। झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावल जी वीरमदेजी कंवर जगमाल जी सोलंखी माधोसिंह जी। पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंह जी एकलां भूतारे जोरसैं कीइयां। पांचमां झगड़ा में तीन लाख आदमी खेत पड़ीया। अठी राठोरां रा आदमीं लाख छा जांमासु आदमीं हजार पचीस खेत महाराई चक्र जुद्ध हुयो।" पृ० ५

वीरवांण और उसके कर्ता के सम्बन्ध में राजस्थानी ग्रंथ में दी गई टिप्पणी महत्व-पूर्ण है जिसमें कहा गया है "मैं बादर ढ़ाढ़ी जोईया का ही हूँ सो मैने पूछकर जैसी हकिकत सुनी वैसी काव्य में प्रकट की है। मैंने अपनी उक्ति अथवा सामर्थ्य के अनुसार रावलजी, जगमालजी और कुंवर जी रिड़मल जी के कहने से यश बनाकर सुनाया। इस युद्ध के बीस वर्ष बाद यह ग्रंथ बनाया है।"[५]

वीरमजी और जोहीयों के सम्बन्ध का वर्णन दूहा छन्द संख्या ६३ से प्रारंभ होता है। प्रारंभ में महामाया का स्मरण करते हुए लुणराव के सात पुत्रों की वीरता का वर्णन किया गया है। फिर प्रकट किया गया है कि जोहीया माधव ने एक बार मुहम्मद शाह के अशर्फियों के ऊंट लूट लिये। तब मुहम्मद शाह ने सारे, जोहियां के सिंध को दबा लेने की धमकी दी। तब जोहिये वीरमजी से मिले—

"मैमंद नै जगमाल रै, जबर वैर ओजांण।
आया सरणै जोहियां, सिंध छोडै साहिबाण॥"

दिल्ली सुलतान की सेना ने वीरमजी पर चढ़ाई की किन्तु वे जोहियों की रक्षा में तत्पर रहे। युद्ध में वीरमजी की विजय हुई जिसके लिये लिखा है:—

वीरम मालै वीरवर, अरिअण दिया उठाय।
सरब फौज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय॥

तदुपरान्त वीरमजी और जोहियों के संघर्ष का कारण बताया गया है, कि जोहियों ने जबाद नामक सुन्दर घोड़ी की बछेरी वीरमजी के भाई मलीनाथ जी के मांग ने पर भी न दी।

---

५. संभव है कि सबन्धित पंक्तियां काव्य की प्रमाणिकता बताने के लिये क्षेपक रूप में जोड़ी गई हो। काव्य का सम्बन्ध मुख्यतः हार्दिक अभिव्यक्ति से होता है। कवि के लिये शास्त्रज्ञ अथवा उच्च शिक्षित होना आवश्यक नहीं होता। क्योंकि विद्यालय की शिक्षा का सम्बन्ध बहुधा बौद्धिक अध्ययन से ही होता है। सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी बहुश्रुत और अपनी कला के धनी होते हैं। किन्तु वे अपनी रचनाओं को कभी कभी शुद्ध लिखने में भी असमर्थ होते हैं। ऐसी अवस्था में काव्य में समय समय पर परिवर्तन होते रहते है। लोकप्रिय होने पर काव्य प्रायः मौखिक ही प्रचलित हो जाते हैं। फिर एसे काव्य में मूल छन्दों का भुलाना और नवीन छंदों का जुड़ना असंभव नहीं होता। ऐसा प्रतित होता है कि पीछे से किसी ने वीरवांण को लिपिबद्ध कर स्पष्टीकरण के लिये गद्यांश जोड़ दिये हैं।

मलीनाथ मांगी सुपां, साकुर माले समाध ।
जकां न दीधी जोहियां, उणसु ं ऋधी उपाध ॥

मलीनाथजी ने मधु जोहिया को रुपयों आदि का लालच दिया साथ ही दला ने भी समझाया किन्तु मधु नहीं माना । तब धोखे से जोहियों को मारने की योजना बनी —

मारै लेसु ं माल, साकुर पण लेसु सरब ।
जोयां पर जगमाल, रचै चूक उण रात रो ॥

एक बुढ़िया मालिन ने जोहियों को इस "चूक" की सूचना दी जिसका सरस वर्णन इस प्रकार किया गया है:--

मालण नै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कान ॥
जद उण मालण जाणीयो, दले दियो बहु दान ।
सीलूं उंणरो सीलणों, कथ आ घालूं कान ॥
डिगती डिगती डोकरी, पूगी दले पास ।
दला चूक तो पर दुभल, नाझ सके तो नास ॥
तलवाडै थाणा तठै, सावै वंदव सात ।
वीरा थां पर बाजसी, रुंक झड़ी अधरात ॥

राठौड़ों द्वारा होने वाली "चूक" का समाचार जान कर दलों ने अपने परिवारों को रवाना कर दिया:--

दलै कविला देस नै, वाहिरज कीधा वेग ।
साथै वंदव सात ही, तिके उरसरी तेग ॥

अब राठौड़ों और जोहियों, दोनों ही दलों की ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी । इसी समय दिल्ली बादशाह कुतबद्दीन की सेवा में जाने वाले तीस अशर्फियों के ऊंटों को वीरमजी ने लूट लिया:—

ऊंटां तीसां ऊपरै असरफीयां आवै ।
सो मेली पतसाह के जोगणपुर जावै ॥
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगां अस लीधां आवै ॥
सब मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै ।
सांमल हुय सारा सुभट मींया फरमावै ॥
ओ धन वीरम आपरै घरमै नहं मावै ।
वीरम औ भख वाघरो पोह केम पड़ावै ॥

बादशाही सेना से हुए युद्ध और उसमें राठौड़ों की विजय का वर्णन इस प्रकार किया गया है:--

घढ घोड़ा भड़ चालीया रज गेण ढकाया।
मिलीया भारत जांगलु अध रतरा आया ॥
मीर केइ रीण मारीया मदु मन चाया।
काट कटकां काढ़ीया खल खेंग खपाया ॥
हुर अपछर हरप अत सुरां वर पाया।
ग्रीधण साकण जोगणी पल पूरा पाया ॥
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया।
सज जुध जोया सांपला वीरम वचवाया ॥
जद पीछा तठ पातसा धर अपणी धाया।
दल जी कोसां दोय तक सामे ले आया ॥
सजे उमंग साहिबाण मैं वीरम अब वाया।
दीध वधाई राइकां जद गोगा जाया ॥
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थाया।
वैरो लप रहवास कुंदलजी दरवाया ॥
बारा गाम ज वगसीया चिता वीरम चाया।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ॥
धाडै धन धुर माभीया मांभी वैमाया।
वीरमकुं देवण वलै लष वैरे लाया ॥

इस युद्ध से राठोड़ों की स्थिति सुदृढ़ हो गई और—

लष वैरे पैदा सलप, सपरी आवै साप।
सापांरा उपजै सदा, लेपे रिपीया लाप ॥

राठौड़ भाई जोहियों से बदला लेने का उपाय करने लगे। एक दिन वीरमजी ने जोहियों की सांढणियां छीन लीः—

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी।
वीरम रै सव सांढीयां निजरां गुजराणी ॥
वीरम चित विटालियां ऊंधी मत आणी।
सात हजारू सांढीयां दिन हेक दगांणी ॥
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी।
दस हजार चढीया दुभल रज गैण ढकांणी ॥
मारै वीरम मेटसां करसां तुरकांणी।
लप वैरे वीरम लियै सांढ्यां आंपांणी ॥
दोय कोसां पूगो दलो लारे लुणीयांणी।
मानों मानों मारकां सचो सलपाणी ॥

मल्लिनाथ जगमाल सु' तिण किसड़ी तांणी ।
आप तणी घर छोड़के आयो आपांणी ॥
आंपां मारण उठींया लप कोट लगांणी ।

कवि ने अपने आश्रयदाता दला जोया की विशेष प्रशंसा की है—

सरणायां साधार, ढलै जिसो नह देपीयो ।
वीरमरा त्रिनधार, जबर गुना जिण जारीयो ॥

दला ने राटौड़ों से समझौते का प्रयत्न भी किया—

दल भेज प्रधांन कु' ए जाव्र अपंदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय पिसंदे ॥
ढाबो ढाबो टाकरां धर पाय धरंदे ।
मद्दु न मांनें माहरी कल काहे करंदे ॥
हेकण जगा न मावही दोय सेर बकंदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय पाग धकंदे ॥
तुम हिंदु गुना करो मुप बोलो मंदे ।
दोय घर डाकण परहरै गाम वणीयां हुंदे ॥

वीरमजी ने दला को उत्तर भेजते हुए लिखा—

आपै वीरम राठवड़ आगल पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जब भूपी थावै ॥
गुण भूलो सारा दलो परधांन मेलावै ।
आप प्रधान सु' अपीयो वीरम वट पावै ॥
सूर उगै साइयांण मै नित धाह घलावै ।
जोयां हुंदी नीपका पोसे ने पावै ॥
दले अरु देपाल कु' नित धाह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ॥
जोइया वडपण जाणनै कथ नीत करावें ।
पौसै फेरू पाजरु' साफरै रापवै ॥

दला के समझौते के प्रयत्न व्यर्थ हुए और वह वीरमजी की अनिति से बहुत दुखी हुआ जिसके लिए कहा गया है—

दोनु' तरफांरों दलो, दुष भुगतै निस दीह ।
झलीया रहै न जोइया, लोपी वीरम लीह ॥

एक दिन वीरमजी ने जोहियों की धरती पर अधिकार कर अपने "दाणी" बैठा दिये और १५ जोहियों को भी मार दिया । तब जोहियों ने राठौड़ों पर चढ़ाई कर दी ।

इसी समय वीरमजी ने एक और चाल चली। जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है:—

बुकणरै दोय बेटीयां गत एक नीहालै।
नाम बड़ी कसमीदे परणो देपालै॥
रांनल कंवरी राजवण अभ अछरां गालै।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हतालै॥
रांनल मुझकुं राजवण भाभी परणालै।
भावज गुण भूलां नहीं ध्रंम षोड़ विचालै॥
कहीयो जद कसमीर दे चढ़ क्रोध अचालै।
हुं परणांसु हिंदवां तुरकां हरटालै॥
सो कुछ हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै।
परणांसुं सगवण करै वीरम विगतालै॥
जद पाछो कहीदो जसु आगम अपतालै।
मानै भासी माहरो वायक सिर मालै॥
वैठी रोसै वापनै कर मुंडे कालै।

विवाह के अवसर पर हुई मारकाट का वर्णन महत्वपूर्ण है जिसमें कवि की अन्य समान कर्मवाली जातियों के प्रति उपेक्षावृत्ति की झलक मिलती है—

चारण चारण कुकतां आरण जगांणा।
बामण भुरी वासता सिर आप दिरांणा॥
भागा मुंडा भाठदां पुत्त दांत पिराणा।
डोफा भागा डुलड़ा झाटक झेरांणा॥
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांणां।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवराणां॥
केतां पावज कटी हातां हेरांणा।
जावै गुणीयण जीव लेकर पांचा तांणा॥
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांणा।
फिर कोइ इसड़ा ब्याग मै मत पाव दिरांणा॥
सलपांणी जिसड़ा सुपह वनड़ा वरवांणा।
बुकणका घर पोःकै धन सोध लिरांणा॥
बुकण सहतां वेलीयां इक पाड़ दिरांणा।
भटीयाणीदे भागका क्या चक्र फिरांणा॥
कह भाटी कसमीर कुं क्या फाग पिलांणा॥

दला जोहिया ने समझौते का प्रयत्न फिर भी चालू रक्खा और वीरमजी को अपने प्रधान द्वारा इस प्रकार सूचित किया—

दलैपान विचार कर परधान पठाया।
लष वरै वीरम कनै ए जाय कैवाया॥

तगड़ तषी षग झार सै भंग वीरम आया।
आया कुं आदर दिया हम लीध वधाया॥

लख वेरो रहवास कुं दलजी दरवाया।
धरती चोवी गांमड़ा सब राज समाया॥

उस मांसुं वीरम तनै आधा वगसाया।
डांण वलै उचका दिया आदा अपणाया॥

चोवी गास चवुतरा कि काज वैठाया।
पोसे इकसठ पाजरु सफरै राषाया॥

जोइया पग मांडे जिती धरे नीहीं रहाया।
हाती रहै न जुटिया कैहर उकराया॥

मीलीयां चिडीयां महलै अहि जाणक आया।
जांणक डोकर पोलडै विच बाघ वसाया॥

क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाया।
षायरहिं दुगुण कियां सब जाय भुलाया॥

वीरम जी की रानी मांगलियाणी भी जिसने सातों जोहियों को अपना राखी भाई बनाया था समझौते का प्रयत्न करने लगी किन्तु उसका कोई परिणाम न हुआ।

युद्ध का मुख्य कारण यह हुआ कि वीरमजी ने दरगाह के "फरास" पेड़ को काट डाला जिसका वर्णन करते हुए मुस्लिम कवि ने अपनी श्रद्धा इस प्रकार व्यक्त की है—

दरपत हरोपल पीरदां विच दरगह सोवै।
जोइया देस वीदेस मै जिण सांमो जोवै॥

पीर प्रचाइल प्रगट दुप दालद षोवै।
राम रहिम जु एक हैं कबु दोय न होवै॥

वीर फरासा बाढ़ बाढ़ वधाती ढ़ोवै।
के मुलां तागा करै हुब हाका होवै॥

फरहास के कटने का समाचार सुन कर दला जोहिया को बहुत दुख हुआ और उसने एक दिन जाकर वीरमजी की गायों को घेर लिया—

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय।
सुण बीरम ग्वालां सबद, लागी उर मै लाय॥

दस हजार जोया दुझल, कठठ साररा कोट।
ढालां जंगा चालणा, ढाला करै न ठोट॥

जोहियों द्वारा गायें घेर लेने पर वीरमजी ने भी विलंब नहीं किया और वे युद्ध के लिये चलने लगे। मांगलियाणी ने उनको समझाया मैं भाई को समाचार भेजती हूँ वह अवश्य ही प्रातः काल गायें लौटा देगा।

वीरमजी ने मांगलियाणी राणी को उत्तर दिया कि लखवेरे की सीमा से जोईये मेरी गायों को लेकर जीवित नहीं जा सकते और यदि मैं तुम्हारे कहने से चुप बैठुंगा तो वे समझेंगे कि राठौड़ कायर हैं। ऐसी अवस्था में मेरा आलस्य कर बैठना असंभव है—

फणधर छांडै फणद सु न भार संभावै।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै॥
त्रिग घटै वींहंगेस को सिव ध्यान भुलावै।
गोरख भूलै ग्यांन कु जत लिछमण जावै॥
सत छाडै सीता सती हणमंत घबरावै।
धणीयां धाडेता तणीकी पबरां पावै॥
हुँ सुक कर बेठु घरे जग उलटो जावै॥

वीरमजी दो हजार सवारों को साथ ले जोइयों पर चढ़ाई करने के लिये तैयार हो गये।

इधर जोहीये दस हजार सवारों सहित युद्ध के लिये तैयार हुए। काव्य में युद्ध के प्रारंभिक वातावरण को सफलता पूर्वक अंकित किया गया है। भूत, प्रेत जोगिनी, गिद्ध आदि का युद्ध भूमि में आना, वीरो की हुँकार आदि का वर्णन वीर रस के अनुरूप हुआ है।

वीरम ने सर्व प्रथम तलवार चलाकर ६५ जोहियों को मार गिराया। फिर वीरम और मदु के बीच भयंकर युद्ध हुआ। दोनों घायल हो गये। कवि ने पुनः वीरमजी की वीरता का बखान करते हुए लिखा है—

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै बारै।
आभ भुजां कुण ओढ मैं कुण सायर जारै॥
मिणधर दे मुप अंगुली मिण कवण लिवारै।
सिंह पटा भर सांप हो कुंण मैंड पघारै॥
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै।
वाद करै रिण वीरमो नर कोण वकारै॥
मदु तो बिन मारको कुंण आसंग धारै।

दोनों ओर के युद्ध का सजीव वर्णन करते हुए कवि ने बताया है कि अन्त में वीर और मदु दोनों ही युद्ध भूमि में मर कर सो गये। कवि कहता है—

अंग वीरमरै ओपीया, घाव एक सो दोय।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढ़ै न कोय॥

तदुपरान्त कवि ने दोनों दलों की ओर से वीर गति प्राप्त करने वाले योद्धाओं के नाम दिये हैं—

निसाणी

पडीया वीरम पाषती संग इतरा सुरा।
सोलंपी माधो सुभट पडपेत सनुरां॥
पडीयो चायल सैंसमल षल कर भप भूरा।
भीम पडै रिण सांपलो तन कर चक चूरा॥
दोलो पड़ मोयल दुझल पत्रवट वट पोर।
हजूरी वनी पड़े दोयण दल दोर॥
पडीयो आहेड़ी पनो झडीयो षग झोर।
सांणी पड़ पांणक सुभट कीर मर तन कोर॥
मांगलीयो मंगलो पडै जग सारौ जाणै।
सहंस दोय पड सूरमा पाषर हय पांणै॥
वीरम संग वीठीया विहद तद ऊंची ताणै।
अछरां वर पोहता इता अग बैठ बिमाणें॥

॥ दूहा ॥

सोडा हाडा सिसोदा, पड़झाला अरु गोड़।
चावड़ा तुर चवांण पड़, रिण पड़ीया राठोड़॥

जोहियों की ओर से मारे गये योद्धाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

जसु रिण में जूझीयों कर जोस हमला।
मदु जैल रिण रहे झड तेगा झला॥
वट फूटा देपालदा धुड़ले वर धला।
दोय सहंस जोया दुझल हुरां संग हला॥
चढीया डोली चारसै गिरणै गलबला।
सब आथ साही बांणमें कर अला अला॥
दलो कहै मै वरजीया मानी नर कोई।
वीरमसु जुध बाजनै सब सेन कराई॥
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारू भाई।
धूड़ बलोइण धाडनै जो कीधी सो पाई॥

वीरमजी के पाँच पुत्र थे, (१) चूंडा, (२) सत्ता, (३) गोगादेव, (४) देवराज और (५) विजय राज ।[1]

उपरोक्त युद्ध के पश्चात् कवि ने चूण्डा के प्रसङ्ग में लिखा है कि एक समय चूंडा सोया हुआ था । तब उस पर सर्प ने अपने फण की छाया की । तब पास ही खड़े बारहठ आला ने जाना कि चूण्डा वास्तव में कोई छत्रपति राजा है । फिर चूण्डा द्वारा घास की गाड़ियों में सैनिक छिपा कर मंडोवर गढ़ में ले जाने और गढ़ पर अधिकार करने का वर्णन है ।

तदुपरान्त गोगादेव द्वारा दला जोहिया से युद्ध कर वीरमजी का बदला लेने का वर्णन है । चूण्डा जी ने गोगादेव से कहा कि "मैं तो मामे को मारूंगा नहीं सो तुम ही युद्ध करो ।"

गोगा देव ने पांच सौ सवारों को साथ लेकर दला जोहिया पर चढ़ाई की और दला को मार दिया ।

दला के मारे जाने का समाचार पूंगल पहुँचाया गया । समाचार प्राप्त कर लुणियाणी जोहीयों ने क्रोधित होकर गोगादेव पर चढ़ाई की । युद्ध मे गोगादेव ने वीरता पूर्वक युद्ध किया और अन्त में वीरगति प्राप्त की जिसके लिये कवि ने लिखा है--

हुय सिद्ध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ॥

अन्त में कवि ने "चितहलोल" गीत में गोगादेव की प्रशंसा करते हुए और काव्य की छन्द-संख्या बताते हुए अपने काव्य को पूर्ण किया है ।[2]

'वीरवाण' में ऐतिहासिक घटनाओं का यथा तथ्य चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है जिससे हम इसको ऐतिहासिक काव्य मान सकते हैं । प्राचीन काल में प्रत्येक विषय के लिये पद्य को प्रधानता दी गई है और गद्य को प्रायः उपेक्षित किया गया है । यों अपवाद स्वरूप राजस्थानी भाषा में गद्य भी प्रचुर मात्रा मे मिलता है । हजारों ही वार्ताएं, ख्यात, विगत और पीढ़ियां आदि राजस्थानी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं । ऐतिहासिक घटनाओं के यथा तथ्य चित्रण की ओर रहता है । प्राचीन काल में कई कवि इतिहासकार भी रहे हैं । ऐसी अवस्था में इतिहास के आगे काव्यत्व की प्रायः उपेक्षा हुई है और ऐतिहासिक पद्यों में काव्यत्व नाम मात्र को ही मिलता है । किन्तु "वीरवांण" के लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता ।

"वीरवांण" में ऐतिहासिक घटनाओं का यथा तथ्य निरूपण किया गया है । साथ ही मार्मिक प्रसङ्गों के अनुकूल भावनापूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी हुई है । काव्य में वर्णित प्रमुख घटनाएं निम्नलिखित हैं--

---

(१) मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग २ (का० ना० प्र० सभा) पृ० ८७ । कवि राजा बांकीदासजी ने वीरमजी के पुत्र ६ माने हैं--

गोगादे १, देवराज २, जैसिघ ३, बीजो ४, चुण्डा ५ व पाची ६ । देखिये बांकीदासरी ख्यात, वार्ता सं० ५२ पृष्ठ ६, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर ।

(२) गोगादेव राठोड़ और सम्बन्धित विषयों में प्राप्त आदेश पर ज्ञातव्य परिशिष्ट में दिये गये हैं ।

(१) जैतसिंह रो झगड़ो—जैतसिंह द्वारा गुजरात के परमारों पर आक्रमण कर राजधरा पर अधिकार करना।

(२) मालदेजी रो समो—अहमदाबाद के मुहम्मद बेगड़ा से युद्ध कर गींदोली का हरण करना। इसमें पांच झगड़ों अर्थात् युद्धों का वर्णन हैं।

(३) वीरम जी और जोहियों का युद्ध जिसमें वीरमजी और जोहियों के सम्बन्ध, युद्ध के कारण, युद्ध का वर्णन और युद्ध के परिणाम दिये गये हैं। इसी प्रसङ्ग में दिल्ली बादशाह के अशर्फियों से लदे ऊंटों की राठौडों द्वारा हुई लूट और युद्ध का वर्णन भी दिया गया है।

(४) वीरमजी के पुत्र चूण्डा द्वारा मंडोवर पर अधिकार करना।

(५) वीरमजी के एक पुत्र गोगादेव द्वारा जोहियों से युद्ध कर वीरमजी की मृत्यु का बदला लेने और वीर गति प्राप्त करने का वर्णन।

उपरोक्त पांचों ही घटनाएं इतिहास-प्रसिद्ध हैं और सम्बन्धित ग्रन्थों से प्रमाणित होती हैं। विशेष प्रमाणों के अभाव में इन घटनाओं को अनैतिहासिक नहीं ठहराया जा सकता। अन्य इतिहास ग्रन्थों से भी किसी न किसी रूप में सम्बन्धित घटनाओं का समर्थन होता है। सम्बन्धित विषय में प्रमुख इतिहासकारों के मत इस प्रकार हैं—

स्व० डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

मुहणोत नैणसी लिखता है—'वीरम महेवे के पास गुढ़ा (ठिकाना) बांध कर रखता था। महेवा में खून कर कोई अपराधी वीरमदेव के गुढ़े में शरण लेता तो वह उसे अपने पास रख लेता। एक समय जोहिया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया, जहां रहते समय उसने अपना विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद वह वहां से अपनी स्त्री सहित स्वदेश की तरफ लौटा। मार्ग में महेवे पहुँच कर वह एक कुम्हारी के घर ठहरा और एक नाई को बुलवाकर अपने बाल बनवाये। नाई ने उसके पास अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री और बहुत सा धन देखा तो तुरन्त जाकर इसकी खबर जगमाल को दी। अनन्तर जगमाल की आज्ञानुसार उसके गुप्तचर कुम्हारी के घर जाकर सब कुछ देख भाल आये। कुम्हारी ने इसका पता पा दल्ला से कहा कि तुम पर चूक होने वाली है। फिर रक्षा का मार्ग पूछे जाने पर उसने उसे वीरम के पास जाने की सलाह दी। तदनुसार दल्ला अविलम्ब स्त्री सहित वीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। पांच - सात दिन तक वीरम ने दल्ला को अपने पास रखा और उसकी भले प्रकार पहुनाहि की। विदा होते समय दल्ला ने कहा कि वीरम, आज का शुभ दिवस मुझे तुम्हारे प्रताप से मिला है। जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी में पहुँचूंगा मैं तुम्हारा राजपूत हूं। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे उसके घर पहुंचवा दिया।

"माला के पुत्रों और वीरमदेव में सदा झगड़ा होता रहता था, (अतएव) वह (वीरम) महेवे का परित्याग कर जैसलमेर गया वहां भी वह ठहर न सका और पीछा आया तथा गांवों को लूटने और धरती का बिगाड़ करने लगा। कुछ दिनों बाद वहां का रहना भी कठिन जान वह जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुंचा। ऊदा ने कहा कि वीरम, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं, कि तुम्हें अपने पास रख सकूं, अतएव आगे जाओ। तुमने नागौर को उजाड़ दिया है, यदि उधर का खान आवेगा तो मैं उसे रोक दूंगा। तब वीरमदेव जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागोर के खान ने चढ़ाई कर जांगलू को घेर लिया, जिस पर गढ़ के द्वार बन्द कर ऊदा भीतर बैठ रहा। खान के कहलाने पर ऊदा उससे मिलने गया, जहां वह बन्दी कर लिया गया। खान ने उससे वीरम का पता पूछा, पर उसने बताने से इन्कार कर दिया। इस पर उसकी माता से पुछवाया गया, पर वह भी डिगी नहीं। दोनों की दृढ़ता से प्रसन्न होकर खान ने ऊदा को मुक्त कर दिया और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया।

'वीरम के जोहियों के पास पहुंचने पर उन्होंने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और दाण में उसका बिस्वा (भाग) नियत कर दिया। तब वीरम के कामदार कभी-कभी सारा का सारा दाण उगाहने लगे। यदि कोई नाहर वीरम की एक बकरी मारे तो यह कह कर कि नाहर जोहियों का है वे बदले में ११ बकरियां ले लेते थे। एक बार ऐसा हुआ कि आभोरिया भाटी बुक्कण को, जो जोहियों का मामा व बादशाह का साला था और अपने भाई सहित दिल्ली में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा। इस पर वह भाग कर जोहियों के पास जा रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत सा माल और वस्त्राभूषण आदि थे। गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर वीरम ने उसे मार डाला और उसका माल असबाब तथा घोड़े आदि ले लिये। इससे जोहियों के मन में उसकी तरफ से शंका हो गई। इसके पांच - सात दिन बाद ही वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड कटवा डाला। इसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुंची पर वे चुप्पी साध गये। एक दिन दल्ला जोहिये को ही मारने का विचार कर वीरम ने उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक प्रकार की छोटी हल्की बैल गाड़ी) पर बैठ कर आया, जिसके एक घोड़ा और एक बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। चूक का पता लगते ही उसने दल्ला को इसका इशारा कर दिया। इस पर जंगल जाने का बहाना कर दल्ला खरसल पर चढ़कर घर की तरफ चल दिया। कुछ दूर पहुँच कर खरसल को तो उसने छोड़ दिया और घोड़े पर सवार होकर घर पहुंचा। वीरम जब राजपूतों सहित वहां पहुंचा उस समय दल्ला जा चुका था। दूसरे दिन ही जोहियों ने एकत्र होकर वीरम की गायों को घेरा। इसकी खबर मिलने पर वीरम ने जाकर उनसे लड़ाई की। वीरम और दयाल[1] परस्पर भिड़े। वीरम ने उसे मार तो लिया पर जीता वह भी न बचा और खेत रहा। वीरम के साथी गांव बड़ेरण से उसकी ठकुराणी (भटियाणी) को लेकर निकले। धाय को अपने

---

(१) मुंहणोत नैणसी का पूर्ण वक्तव्य परिशिष्ट में दिया गया है।

एक वर्ष के पुत्र चूण्डा को आल्हा चारण के पास पहुँचाने का आदेश दे वह राणी मांगलियाणी सहित सती हो गई।

(जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड; पृष्ठ १६३)

श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ

"यह सलखाजी के पुत्र और रावल मल्लिनाथजी के छोटे भाई थे। यद्यपि मल्लिनाथ जी ने इन्हें खेड़ की जागीर दी थी, तथापि जोहिया दला की रक्षा करने के कारण इनके और मल्लीनाथजी के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इससे इन्हें खेड़ छोड़ देना पड़ा। वहां से पहले तो यह सेतरावा की तरफ गए और फिर चूंटीसरा में जाकर कुछ दिन रहे। परन्तु वहां पर भी घटनावश एक काफिले को लूट लेने के कारण शाही फौज ने इन पर चढ़ाई की। इस पर यह जांगलू में सांखला ऊदा के पास चले गये। इसकी सूचना मिलने पर जब बादशाही सेना ने वहां भी इनका पीछा किया, तब यह जोहियों के पास जा रहे। जोहियों के मुखिया कल्ला ने भी इनकी पहले दी हुई सहायता का स्मरण कर इनके सत्कार का पूरा पूरा प्रबन्ध कर दिया। परन्तु कुछ ही दिनों में इनके और जोहियों के बीच झगड़ा हो गया। इसी में वि० सं १४४० (ई० सं० १३८३) में यह लखवेरा गांव के पास वीरगति को प्राप्त हुए। विरमजी के पांच पुत्र थे: १. देवराज, २. चूंडा, ३. जैसिंह, ४. विजा और ५.गोगादेव।

(मारवाड़ का इतिहास प्रथम खण्ड)

"वीरवांण की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कवि ने मुसलमान होते हुए भी धार्मिक उदारता का परिचय दिया है। जोहिया मुसलमानों की सहनशीलता का परिचय भी प्रस्तुत काव्य द्वारा प्राप्त होता है। जोहियों ने वास्तव में वीरमजी और उनके साथियों की हठधर्मी पूर्ण कामों और अपराधों से विवश होकर ही युद्ध किया था। फिर वीरमजी की रानी मांगलियाणी ने जोहिया मुसलमानों को अपना राखीबन्ध भाई बनाया तो दोनों ही पक्षों ने अपने उच्च सम्बन्धों का निर्वाह किया। यहां तक कि चूण्डाजी भी अपने मामा पर तलवार चलाने के लिये नहीं तैयार होते हैं और गोगादेवजी को वीरमजी का बदला लेने के लिये भेजते हैं।

"वीरवाँण" में वीररस का उत्कृष्ण निरूपण हुआ है। "वीरवांण" वास्तव में वीर-रस-प्रधान काव्य है और इसमें आलंबन, उद्दीपन, स्थाई एवं संचारी भावों का विस्तृत वर्णन हुआ है। युद्ध के कारण मध्य युगीन परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप हैं जैसे स्त्री हरण, मार्ग में जाते हुए धन का लूटना, घोड़ों ऊंटों और गायों को घेरना, धार्मिक भावनाओं पर आघात करना आदि। युद्ध का वर्णन तो कवि कल्पना और ओझ से ओतप्रोत हुआ है।

'वीरवांण' की तीसरी विशेषता कथा-वस्तु का सुसंगठित होना है। काव्य सम्बन्धी प्रत्येक घटना पिछली घटनाओं से जुड़ी हुई है और वीरमजी तथा जोहियों के युद्ध में संघर्ष चरम सीमा पर पहुँचता है। संघर्ष का अन्त गोगादेव द्वारा जोहियों से बदला लेने से होता है और यहीं काव्य पूर्ण भी होता है। इस प्रकार काव्य की कथा वस्तु भी पूर्ण संगठित है।

'वीरवांण' की भाषा राजस्थानी है। 'वीरवांण' की भाषा पूर्ण रूपेण परिमाजित नहीं होते हुए भी विषय के अनुरूप ओजपूर्ण है। भाषा में कई स्थलों पर पंजाबी प्रभाव भी

झलकता है। पंजाबी की "दा" "दी" विभक्तियों का प्रयोग "रा" "री" के स्थान पर कई बार हुआ है। बहादुर ढ़ाढ़ी का शास्त्रीय अध्ययन नहीं ज्ञात होता है और इसलिये भाषा दोष और छन्द दोष भी कई स्थानों पर मिल जाते हैं।

'वीरवांण' में राजस्थानी काव्य के प्रिय अलंकार "वैण सगाई" का सफल प्रयोग भी कई छन्दों में किया गया है।

राजस्थान में ढाढ़ी कवियों ने नीसाणी और दूहा छन्दों को अधिक अपनाया है। इतिवृत्तात्मक वर्णन के लिये निसाणी, चौपाई और दूहा छन्द सर्वथा उपयुक्त रहते हैं। इसलिये 'वीरवांण' में भी नीसाणी और दूहों का प्रयोग किया गया है। कवि के शास्त्रीय अज्ञान अथवा प्रतिलिपि कर्ता के अज्ञान से कई छन्दों में मात्रा दोष भी वर्तमान है। काव्य के अन्त में एक गीत चितहिलोल है और यह काव्य कला का अनुपम उदाहरण है।

पद्य के साथ गद्य का प्रयोग कई राजस्थानी ग्रन्थों में मिलता है। राजस्थानी वार्ताओं और ख्यातों मे गद्य की प्रधानता होती है तथा पद्य का प्रयोग न्यून होता है। इसी प्रकार कुछ राजस्थानी काव्यों में कहीं-कहीं गद्य भी मिल जाता है। विषय के स्पष्टिकरण के लिये 'वीरवांण' में कहीं-कहीं गद्य की कुछ पंक्तियां मिल जाती हैं। 'वीरवांण' में प्रयुक्त राजस्थानी गद्य पूर्ण परिमार्जित हैं और इसमें पद्य की तरह तुक मिलाने की प्रवत्ति भी दिखाई देती है।

'वीरवांण' का कर्ता स्व० पं० रामकरणजी आसोपा के लेखानुसार रामचन्द्र नहीं ज्ञात होता जैसा कि उन्होंने स्व० सम्पादित राजरूपक भूमिका में प्रकट किया है। 'वीरवांण' का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढाढ़ी था। ढ़ाढ़ी भी हिन्दु नहीं वरन् मुसलमान ढ़ाढ़ी था जैसा कि हिन्दुओं के लिये किये गये उसके काफिर शब्द-प्रयोग से ज्ञात होता है। कवि के आश्रय दाता भी मुसलमान जोहिये थे और कवि ने अपने आश्रय दाता और इस्लाम धर्म के लिये बहुत ही आदर सूचक प्रयोग स्थान स्थान पर किये हैं।

वास्तव में 'वीरवांण' सम्बन्धित इतिहास के लिये एक आधारग्रन्थ है। 'वीरवांण' काव्य का कर्ता ढ़ाढ़ी बादर सम्बन्धित कई घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी, निष्पक्ष, उदार और काव्य-कला निपुण व्यक्ति ज्ञात होता है। ग्रन्थ की ऐतिहासिक और काव्यात्मक उपयोगिता समझ कर ही हमने अपनी नवीन खोज में प्राप्त तथा सम्बन्धित घटनाओं पर आधारित आढ़ा पाड़खान जी रो रूपक, गोगादेव जी रो, वीरमदेवजी री बात, चूण्डाजी री बात, गोगादेवजी री वात आदि और मुहणोत नैणसी का पूरा वक्तव्य परिशिष्ट में दिये हैं। साथ ही ग्रन्थ के परिशिष्ट में देवगढ़ से प्राप्त 'वीरवांण' की एक अन्य प्रति के पाठान्तर और काव्य-सम्बन्धी कठिन राजस्थानी शब्दों के हिन्दी अर्थ भी दे दिये हैं। वीरवांण की एक प्रति हमें श्री मांगीलाल व्यास, जोधपुर से देखने को मिली किन्तु इसका पाठ नितान्त अशुद्ध होने से हम इसका उपयोग नहीं कर सके।

अन्त में मैं "राजस्थान ओरिन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट" के संमान्य संचालक आदरणीय मुनि श्री जिन विजयजी महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूं जिन्होंने प्रस्तुत उत्कृष्ट काव्य के सम्पादन और प्रकाशन के लिये प्रेरणा दी है।

लक्ष्मी निवास काटेज,
बनी पार्क, जयपुर
श्रावणी तीज, सं० २०१४ वि०

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

ढाढी वादररो वणायो

वीरवांण

॥ श्री गणेशाय नमः । श्री सारदाय नमः ॥

॥ श्री माताजी । श्री रामचन्द्राय नमः ॥

अथ ग्रंथ वीरवांण ढाढी वादरो वणायो लिपंते ।
रावजी श्री सलपेजीरा कंवराँ च्यारांरा परवाड़ा लिपंते ।

दूहा

सुमत समापो सारदा, आपो उकती आप ।
कमंधा जस वरनन करूं, तुझ महर परताप ॥ १

समरूं गणपत सरसती, पाण जोड़ लग पाय ।
गाउं हु सलषाणीयां, विध विध सुजस बणाय ॥ २

सुणी जिती सारी कहुं, लहु न भूंठ लिगार ।
मालजैंत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥ ३

राज समालो नगरमैं, सोभत जैत समीयांण ।
थान षेड़ वीरम थपे, जगजाहर घण जांण ॥ ४

मालदेजी जैतसींघजीरो वीरमदे जिसोवतजीरो राज-वरनन

नीसाणी

सुत च्यारूं सलषेसरा कुलमै किरणाला ।
राजस वंका राठवड वरवीर बडाला ॥
साथ लियां दल सामठा वीरदाँ रूखवाला ।
भिड़िया भारत भीमसा दल पारथ वाळा ॥
देस दसु दीस दाबिया कीदा धकचाळा ।
केवि धस गीर कंदरां वपसंक वड़ाळा ॥ १

जैतसींघरो झगड़ो लिखंते

जैत चढ़े गुजरातकुं सामान सझाया ।
पमंग लिया संग पांचसै चड पुर चलाया ।
सामत चढ़िया सूरमा राडधरै आया ।
चित उजल चोगानमै तंबु तणवाया ।
अषैनंदै मीलणका मनसोभा थाया ॥ २

बीसै विधविध वरजिया मत जावो भाई ।
देस दिषाया जैतकुं आ कुबद कमाई ॥
गोयल षेड गमाडीया उंणहुंत सवाई ।
धर जासी घर लुटसी कर जेज न काई ॥ ३

वीसै वरज्या नह रेया थट भेळा थाया ।
अषानंदा एकठा उठ डैरै आया ।
हुकमज दीयो हजूरियां लष दारू लाया ।
चळु करंता चूक ह्वी अरी काट उड़ाया ।
जैत कमंधज जेण दीन धर श्रोण धपाया ।
पमांरां धर पालटी धर जैतल पाया ।
गांवां अठचालीस सै राड़धरा आया ॥ ४

दूहा

राडधरो कायम कीयो, नरनामी नष तैत ।
मेली रावळ मालनै, जबर बधाई जैत ॥ ५

नीसांणी

लंगर लषुं लार वैह दळ पार न पाई ।
मालबीयो बलराव है जैचंद वीजाई ॥
राज करै धूम रीतसों बध क्रीत सवाई ।
घर घर आणद है घणा थित मंगल थाई ॥
मँहपत रावल मालरी प्रज फूलां छाई ।
मंडलीकां ज्युं मालदे वंका बरदाई ॥ ५

इण रीत रावल मालदेजी गुडै नगर राज करै जकां दिनाँ समीयांणैसु रावल जैतसीजी इडर गुजरातनै चडीया। जाय राडधडै उतरीया। जठै अषैनंदै दोनुं कोटड़ीयां जाय राड़रै पंमारांनै आदमी बांवनसुं मारनै राडधरो लीनो तैरी राड़ संपूरण ।

मालदेजीरो समो लिषंते

दूहा

भायां परधानां भडां, दळबळ अथग दुभ्राल ।
कीधो उछब कांमती, मीण घर रावळ माल ॥ ६

रावल मालो राजवी, राज करै धुम रूप ।
बारा हरचंदरा वहै, सागे सरग सरूप ॥ ७

वीरम भाई बांकडो, ज्यूं बेटो जगमाल ।
दत्तक भाव रचावा दुनी, साह उरांरा साल ॥ ८

तबेलै मालह तणै, पाणी पंथा पमंग ।
सांवत दरगह सूरमां, वे असवार उमंग ॥ ९

तीकां दिनां मणीयर तीसो, दूजो नांही देस ।
घर घर व्यांवे घोड़ीयां, वदै वीछेरा वेस ॥ १०

पड़ मांहि नाहीं पड़ै, घाट ईसै घोड़ांह ।
भड़ चढीया अत सोभ दै, ऐस आ घोड़ाह ।। ११

नग धर मीणीय नीपजै, कोड़ीधर केकांण ।
मैहमंद लेवण मेलीयो, मरवण षान पठांण ।। १२

सिणलागर सागर समै, भरीया नीर तळाव ।
किलमां आय डेरा किया, सोदागरां सुभाव ।। १३

तीजणियां दिन तीजरै, सजे साज सिंणगार ।
हींडे आई हींडबां, अपछररै उणियार ।। १४

अरक तणो पण आथमण, मेह अंधारी रात ।
तीजणीयां लेगा तुरक, घोड़ां ऊपर घात ।। १५

बोले बांमण बाणियां, मालहुंत कह वात ।
तीज तणै मग रैत दिन, सुत मम लेगा सात ।। १६

जिण कारण मेले जगो, छाने हेरा च्यार ।
मांडळरी धर मेलीया, वालण वैर विचार ।। १७

कंवरहुंत हेरु कहै, धुर सुण धणीयांह ।
मांडळपुर मैहमंद घर, बैठी तीजणीयांह ।। १८

मैहमँदसारी डीकरी, गींदोलीरे साथ ।
मैह जीता आवै मुकर, जमैरातरी जात ।। १९

कंवरजी जगमालजी मांडवैसु तीजणीयां लावण नै वा गींदोली लाया वो समो लिषंते

नीसांणी

कथ हेरुकी सुण कंवर कमरां कसवाणी ।
भड चंगा लीधा भला तंग पैगां ताणी ।।

भुजं पारथ ऋन भीम सा ऐहड़ा आ पाणी ।
पाव धाव पंष राव सा अस पंथा पाणी ॥
सुभटां वीसी सातसुं चढीयो मालाणी ।
पूगा दिना दसमें प्रथम मांडलगढ आणी ॥
कहियो मै बंदगी करां आगल उचराणी ।
डेरो कर वेरो दियो जगमाल मालाणी ॥
तीजणीयां सब आवज़ो पूजण पीरांणी ।
कल मैंहमदरै इदरौ मेळो मंडवाणी ॥
आय हुई सब एकठी कथ जेम कहाणी ।
बेलि बा पुकारियां जगमल मालांणी ॥
ऐ तीजणीयां एकठी आई आपांणी ।
सजो सुभटां सूरमां किम जेज करांणी ॥
आ कहतां भड़ ऊठीया वीरा दवी रांणी ।
ज्युं मृग डार ज ऊपरै चीता मलफांणी ॥
तुरंगा चाढी तीजण्यां हुब कुक हुवांणी ।
सापूत बेटी साहरी जगमालै जांणी ॥
गींदोली करसुं ग्रहे हय पीठी चढांणी ।
लेगो ज्युहीं लावीयो जगमाल मांलाणी ॥
चावळ कमधां चाढीयां जसडा कव जांणी ।
कूक गई मैंहमंदके जग सारै जांणी ।
इळ मीणीयर कर ऊजळो तीजणीयां आंणी ॥ ६

दूहा

दी छाने जगमालनै, मैंमदसा फ़रमास ।
दीनी गींदोली देऊं, जूनागढरो वास ॥ २०

हुं मैंमदसा वेगडो, गोरीसाह दुभाल ।
....................................॥ २१

....|

राज गींदोली राषीयां, मरजासो माहाराज ॥ २२

जगो महा भड़ जोरवर, भीरड़ कोट कुळभांण।
महमद गोरी साहरी, कंमध न मानी कांण ॥ २३

वैर सतावी वालीयो, सत्रवां उर साल।
जिणरै उछवरो जवर, मेळो रचियो माल ॥ २४

मैलै रावल मालरै, आया इसड़ा पीर।
जांणक चौसठ जोगणी संग लै बावन वीर ॥ २५

आया कितायक अवलिया, वड़ा बड़ा दरवेस।
पाचांही पंडवां जिसा, उमियां सेत महेस ॥ २६

जैसळ नै तोली जिसा, सबै आवीया साथ।
आइ तषत वैठावियां, निकलंक हुआ सुनाथ ॥ २७

दरसण आया देवता, सिध साधक ले साथ।
चौरासी पीरां सहत, नवही आया नाथ ॥ २८

राणी रूपादे जिसि, सापूत जिका सकत।
धारु जिसड़ा उण घरे, भव भव तणा भगत ॥ २९

मेलै रावळ मालरै, रचीयौ सतजुग राह।
वेरो देवण भीरड़ गढ, चढ़ आया पतसाह ॥ ३०

नीसांणी

दिलीसुं चढी आया दुझल गोरी सुलताणा।
मांडलगढ मैहमंद चढ, पांमद पुरसाणा ॥
सांतु लोपी सायरा मिलपा जजलांणा।
इण विध मैहमंद आवीयो सझ दल घमसांणा ॥

हजरत बेंहुं भेळा हुआ पूरब पिछमांणा ।
है वेहुं घर मोटा वोहत छोटा रहमांणा ॥
षोज गमावण षूनीयां जोडै जमराणा ।
रीस करै ज्यां रोळवै वोळै महरांणा ॥
कवण षून जांरो करै हींदु तुरकाणा ।
जलल करी जगमाल दे करडी कमरांणा ॥
ओरत आणी एकरी एकण धी आणा ।
सभ बेंहुं आया पातसा घुरता नीसांणा ॥
षेड़ तणा वला षोसणा पलटै लंक पाणा ।
आरंभ कीधा ऐहड़ा सज बेहुं सुरतांणा ॥
षंचिया दोळा षेडरै तंबू तूरकांणा ।
घेरो लागो भीरडगढ़ डेरा दरसांणा ॥ ७

रावजी मालदेजीरो पैलो झगडो लिषंते

दूहा

घेरो लागो भीरड़गढ, उडण लागो सोर ।
छूटण लागी नाळीयां, बोलण लागा मोर ॥ ३१

सतगुरसुं कहियो बचन, विदा हुवंता वांण ।
भिलै नहीं गढ भीरड़रो, मलीनाथरो मांण ॥ ३२

निसांणी

इष घडा असुराणरी चित रोस चढाया ।
जागवीया अह रावकै जमराव षिजाया ॥
धोम झलाहळ धेषमैं उठ बाहर आया ।
मुछ धरै कर मालदे सभ कंवर सवाया ॥
जरद कसै भड़ जोरवर अंग रोस न माया ।
कमधज उठियो धूप कर केकांण कसाया ॥

असुर दिली दल ऊपरां अस एम उठाया ।
घाग चमंकी बीज ज्यूं घण घाव लगाया ॥
केता रुंड मुंड काट कर रिण जंग मचाया ।
असुर गया रिण ओसके माले डकराया ॥
कीलम अरावा त्यार कर दूजै दिन आया ॥ ८

रावलजी मालदेजीरो दूजो झगड़ो

भुरजां भुरजां भीरड़ गढ बड़ नाळ गड़की ।
सोर धुंवारिण घोरसुं धर अंवर ढकी ॥
आयर वीज अचींतकी असमान कड़की ।
भुप तुराटां भेळीया जुध कारण जकी ॥
आलम आलम अषीयो धज नेज फरकी ।
रजवट वंका राठवड़ जुटा षळ जकी ॥
म्लेछ तड़फड़ मारका गीधाण गहकी ।
पत्र भरे रत पूरिया वीरांणव भकी ॥
जै जै जपैं जोगणी आसीस अछकी ।
अपछर आय उतावळी हूरां वर तकी ॥
आसुर दळगा ओसके यण घावां छकी ।
सुणियां वायक पातसा सेना वेहु संकी ॥ ९

दूहा

दळ मेले गोरी दुभल, तीजै झगड़ै तैड़ ।
मारां रावळ मालनैं, षोस लेवां गढ पेड़ ॥ ३३

साहां वायक एम सुण, दे डाढी पर हत्थ ।
अला अला उचारकै, दळ मेले समरत्थ ॥ ३४

रावल मालदेजीरो तीजो झगड़ो

नीसांणी

चढ दळ आया षेड़ पर हैदळ षुरसांणी ।
काली दांमण कुंजरां पाहाड़ प्रमांणी ।।
हींस हुवैं ऐराकीयां पोह कीध पलांणी ।
चढीया धुसै वाजतां जंग भिडीयां जाणी ।।
रावळ माला माहा बळी आगळ हिंदवांणी ।
सादुळो किम सांसवै सिरगाळ सहांणी ।।
असमर ले कर ऊठीया जम रुठा जांणी ।
आप दरगह आवीया आयस फुरमांणी ।।
वीड़ंगां चढीया वीरवर सुण रावल बांणी ।
मीर छड़ालां मारीया षग बाढ षीरांणी ।।
केतां अरीयण काटीया धर सोण धपांणी ।
तेरे तुंगा भाजीया माले सलषांणी ।।
दीन धौळे दळ दाटीया चाढे उर वाणी ।
मीर गजां घड़ मारीयां केता मुगलांणी ।।
माले मिणीयर देसमैं पंष चाढचो पांणी ।
मालन भागा मुगळां सांवत सलषांणी ।। १०

दूहा

साह दोऊं मन संकीया, फोज विदा की फेर ।
भिळे नहीं गढ भीरड़रो, माल तणो गिरमेर ।। ३५

राघै वाघै राड़रा, भुज झेला भुरभार ।
चोथे जुध जुड़वा चमुं, लंगर लीधा लार ।। ३६

राघो वागो वीरवर, इका वैहुं अवीह ।
जुध जुटा इण विध जवर, सांकल छूटा सीह ।। ३७

राती वासो दैण रच, मन जुध चोथे माल ।
वींरम घड़सी वरजीया, माधैनै जगमाल ।। ३८

वीरम घड़सी वीरवर, पाल माल परभात ।
अब यां अरीयां उपरा, रचसां जुध अधरात ।। ३९

रावळजी वीरमदेजी कंवरजी जगमालजी रावळजी घड़सीजी भाटी जवाई जेसलमेरीया नै सोलंषी माधोसिंघजी प्रधान वीरमदेजीरा झगड़ा लिषंते ।

नीसांणी

अजबै ऊपर ऊरीयां घड़सी रिण घोड़ा ।
एकण घाव उतारीया जंगम वड जोड़ा ।।
पाहड़षान पछाड़ियो विजड़ां दुजोड़ा ।
तेजलषां जुध तीसरै चिमनो चोथोड़ा ।।
पीरषान रिण पंचमै सारंग छटोड़ा ।
इकां षट ही षूटगा घर ढहगा घोड़ा ।।
जद आयो जैतकर जस षाट भलोड़ा ।
माल वधांवां मोतीयां भर थाळ वडोड़ा ।। ११

घड़सी बाई गरजके बागेषां ऊपर ।
गुरज घमोड़ी बागड़े घड़सीके धु पर ।।
घोड़ा सहतो गुड़ गयो लुटीयो धरती पर ।
जांण कबूतर छुट गयो हातांबाजीगर ।। १२

जितै षाग जगमालदे पछटी बागे पर ।
बगतर सहतो बोटकै निरलंग कियो नर ।।
कीरमिर वाही करगसुं दुजै इका पर ।
जाण चमंकी वीजळी करकाळै डंबर ।। १३

राघै फिर पग रोपीया इकै अड पाई ।
राघै ऊपर रूक रस वीरमदे वाई ।।

घिरतै फिरतै कूदतै ठठर तै ठाई ।
ठाई ठठर ठोर भुज राघेषां वाई ।।
बाई जीतरै वीरमै कर जोर कलाई ।
वीडंग तणा दोय टूक हुय राघा भागाई ।।
रचियो भारथ माधड़ै समसेर चलाई ।
जाण मिरंगां डार पर चिता मलफाई ।।
राघो बाघो कट पडै रिण मांझ सिपाई ।
वीरम घड़सी माधडै जगै वरदाई ।।
पतसाहांरै सामनै समसैर चलाई ।
उरस छिबंतां आवीया भाटी अरु भांई ।
माला वधाया मोतीयां कर कोड किताई ।। १४

दूहा

राळा बोळै रातरा, पैले वषत पधार ।
इका घड़सी मारीया, बैयां आंगळ च्यार ।। ४०

भाटी आगळ भैचकै, नाठा जवन निराठ ।
घड़सीरै जुध जोरमै, जबरी वागी झाट ।। ४१

मैमंदसा नै मालरा, भिडीया बेंहु भीच ।
घड़सी डोळी घालीयौ, बागो षाडा बीच ।। ४२

चढीया डोळी च्यार सै, घड़सी साथे घाय ।
उतै जवन कट आठसै, षांपां दिया षपाय ।। ४३

रावळजी मालदेजीरै पातसारै इकांरी लड़ाई थपी । भाटी घड़सीजी-इका छव मारीयां । पछै राघो और बागो दोनुं ही ईकां आपरीं फोजसुं लड़ाई करी । भाटी घड़सीजी कंवरजी जगमालजी रावळजी वीरमदेजी सोलंषी । माधोसिंघजी प्रधांन वीरमदेजीरा आं च्यारां ही राघे बाघेरी फोजसुं लड़ाई करी और बाघो जगमालजी हाथसुं मारीजीयो । इण रीत जुध हुवो ।

दूहा

राघो बागो रिण रैयो, संक्या साह मन सोय ।
धीरज दीनी उठ घर, दूजां ईका दोय ।। ४४

मंडीया नेड़ा मोरचा, तुरक लगावै ताय्र ।
मालै इमं कहियो मुषां, एं काइ दियैं उठाय ॥ ४५

जगैं अरज कीधी जरां, अभंग मालनैं आय ।
कुंपो है अस कवलीयो, अब दूं फोज उठाय ॥ ४६

मालै इम कहियो मुषां, सुघड़ बात दिल सौज ।
इण अस चढ तूं एकलो, फेरे किण विध फोज ॥ ४७

नीसांणी

आलण कुंपो अथ वहै जाता जैसांएैं ।
रिण मायां भूतां रची, तंवर तेजल आंएैं ॥
आलणकुं तेजल कयो मासी सुत जांएैं ।
मै रिणमैं अवगत गया धि भोजन षांएैं ॥
आलण वेटी आपरी तू रिणमै आंएैं ।
कंवर प्रणावो कुंपकुं जग सारो जाएैं ॥
धि चंवरी लागां धुंवों सुरलोक पयांएैं ।
कुंपैकुं आलणी कही अगल मुष आएैं ॥
कमधज परणी कूपसीं आलण धि आंएैं ।
दीदो भूतां दायजो कवलो केकांएैं ॥
फतेजीत वाजो दियो षांडो षुरसांणे ।
अकथ कुंपैरी इसी जग मालो जांणैं ।
वीरांरै वचनां तणो आयो अवसांएैं ॥ १५

दूहा

अभंग नगारो आपीयो, अरि गंज षाग उचेट ।
कुंपानै अस कवलीयो, भूतां कीदो भेट ॥ ४८

वीरां जद दीनो वचन, हतलेवो छुटवार ।
याद करो जद आपरैं, हाजर वीस हजार ॥ ४९

कुंप कंवर विदा कियो, पांण जोड़ कर प्रीत ।
दीनों भूतां दायजो, कुळमें राषण रीत ॥ ५०

भीरड कोट दळ भेळसी, हणसी हातां हुंत ।
आडा किण दिन आवसी, भीडज कवलींयो भूत ॥ ५१

कुंपादै अस कवलीयो, मुषसुं कहियो माल ।
आलण वचनां याद कर, जुड़सी रिण जगमाल ॥ ५२

कुंपे दीनो कंवलीयो, जद लीनो जगमाल ।
रातीवासो रातरा, देवण सज्यो दुभाल ॥ ५३

अभंग नगारै बंब पड़, अरिगंज षाग उठाय ।
कवलै आगळ धूंप कर, दीयो पागड़ै पाय ॥ ५४

कमधज चढीयो कवलीये, वंध्यो रोस मन मांय ।
दळ फिरिया दरीयाव ज्यूं, ओळा दोळा आय ॥ ५५

मुजरो कर जगमालसुं, भाष्यो इण विध भूत ।
कहो जको कारज करां, राज तणां रजपूत ॥ ५६

जगै हुकुम दे भोकी [या], किलमां पर कैकांण ।
बीस सहस लगि वहण, भूतांरी केवांण ॥ ५७

मीरांरा माथ उडै, मुष बक मारो मार ।
मालावत जगमालरी, वहन लगी तरवार ॥ ५८

वरण साहां घड वीनणी, सभ आई सिंणगार ।
जिणनै परणी जण जगो, कसीयो राजकँवार ॥ ५९

जबर भूत लै जाणीया, दुलही फोज दुभाल ।
जुध हथलेवो जोड़ियो, मालावत जगमाल ॥ ६०

निसांणी

भातीजो वीरम तणो मालारो बेटो ।
जुध चढीयो जगमाल दे कर टोप लपेटो ।।
वगतर कुंठा वीडीया धुब पोरस धेटो ।
सिरपर बांध्यो सेहंरो जस विरदा जेटो ।।
चंवरी रिण कामण चमुं फेरे दे फेटो ।
भुळलीयां संग जानीया हतलेवे पेटो ।।
सावो अध रत साजीयो भारतमें भेटो ।
भांपां भरे कवलीयो रुकां बळ रेटो ।
जिण विध भेटे चालै जो समै भूतावळ भेटो ।।
कुण जाणै वावै कवण पावे नह पेटो ।।
पाडे दळ पतसाहरा षीमे कुण षेटो ।। १६

बटका उडगा वगतरां भटकां कर भाड़ै ।
पतसाहां दळ पाधरै राठौड़ रमाड़ै ।।
घोड़ां आगळ गैबका वाजा वजवाड़ै ।
तेग बहै भूतां तणी राठौड़ अगाड़ै ।।
मारै दळ मुगलांणका भाटां षग भांड़ै ।
धड़ लुटता दीसै धरा मसतक भमाड़ै ।।
पग पग नैजा पाडीया पग पग ढल पाड़ै ।
अबकै ओ मोटो परव महमंद लीलाड़ै ।।
गीदोली बांधी गळै जगमाल अनाड़ै ।
जकौ न देवै जीवतो कुण मार ले राड़ै ।। १७

मैहमंद मांडळ पातसा गुजरात धरांरा ।
एलै फौजां अवीया लषुं अठलारा ।।
दीदो घेरो दोळीयां वीरम पुरारा ।
मैवै रावळ मालदे ओपण अवतारा ।।

परतक पीर पचीस मो चोवीस सिरारा ।
कया विगडै उसका कहो कांम तकरारा ॥
केस वळे मुष केसरी कुण लेवणहारा ।
मिण लेवण वासष मुषां कर कोण पसारा ॥
गींदोली जगमाल घर नह देवणहारा ।
मैमंद गोरी घर गया कर कुच सवारा ॥
माल वधाया मोतीयां भर थाळ सोनारा ॥ १८

दूहा

तीन लाष जुध मैत दिन, घोरा जवन चलाय ।
जुध जीत्यो जगमालदे, लीधो माल बधाय ॥ ६१
पग पग नेजा पाड़ीया, पग पग पाड़ी ढाल ।
बीबी बुजै षांनने जोध किता जगमाल ॥ ६२

गींदोलीरी लड़ाईमें झगड़ा तीन तो रावळ मालदेजी आपरै लोकसुं एकला किया । झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावळजी वीरमदेजी कंवर जगमालजी सोलंषी माधोसिंघजी । पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंघजी एकलां भूतांरे जोरसैं कीइयां । पांचां झगड़ामें तीन लाष आदमीं षेत पड़ीया । अठी राठोड़ांरा आदमीं लाष छा जांमासुँ आदमीं हजार पचीस षेत पड़ीया । माहाराई चक्र जुध हुवो । जोईया राठोड़ां कनै आया जिणसुं वरस पांच पैला ओ झगड़ो हुवो छो । हूं वादर ढाढी जोयारो ही । सो मै पूछनै सुणी जिसी हगीगतसुँ वणावट करी । मारी उकत प्रमांण रावळजी जगमालजी वा कंवरजी रिड़मलजीरै कैणैसुं जस वणाय नै सुणायो । ओ झगड़ो हुवां पछै वरस बीससूँ ओ ग्रन्थ वणायो । जोया वरस पांच अठै राठोड़ां कनै रैया । जितै हुं जोयां साथे हो सो वात सारीसुं वाकब हुवो और वीरमदेजी मधुरे आपसमें फूट पड़ी । झगड़ो हुयनै मारीजिया । धीरदेजी गोगादे की तांई जिती बात सारीसुं मारै आंषीयां आगे हुई । मै जोइयांरै नंगारै माथै हो । हेत बैर सारो निजरां देष्यो । पछै धीरदेजी काम आया । जां पछै तेजमाल जोयै मनै कैयो कै बादर सिरदार मारीजियां जिण तरैं हुई थे देषी जिसी सारी हगीगत वरण करो । जरां जोइयां राठोड़ां कनै आया । धीरदेजी मारीजिया जिता दिनां मै जो जो वात

वा झगड़ो हुवो जिसो वरणो। तिणरी हाजरी जोयांनै साही वाण मैं तैजलरे आगै दीनी। राठोड़ांनै सेतरावै मंडोरकैतुमै चुंडेजी देवराजजीनै हाजरी दीनी। पछै चुडैजी मंडोवर लीवी जिणरी हगीगत मनै कही। जिण रीत जस वणाय हाजरी दीवी। जा पछै नगर जाय जगमालजीनै वा कंवर रिडमलजीनै हाजरी दीनी। जद पैला झगड़ा हुवा जकांसुँ हुं वाकव हो। फेर कितीक हगीगत वाँ कही जिण मुजव पछै वणाय ग्रन्थरै आदमै वरण दीनी छै। हु तै झगड़ै मधु वीरमजीरैं वात हुई जकण ठौड़ मैं कैं दीनो छे नला सला नीवडैं सो जाणैं। अलामैं निजरां देखी वा कांना सुणी जिण मुजव सची-सची वरणन करी छे। सो मारे ग्रन्थमें भूल चूक हुवे तो कवी लोक सुधार लेसी।

दूहा

उकत समापो इसरी, माता सुण महमाय।
गाऊं हुं लुणीयाणीयां, सांचो सुजस वणाय॥ ६३

दलो मधू देपाळ जसू, जैत देवति जमाल।
सुत सांतू लुणरावरा, पतसाहां उर साल॥ ६४

जकां दिनों ए जोइया, लावे दस दिस लूट।
षगधारां ऊपर षिमै, तारां जिम ही तूट॥ ६५.

कोड च्यार रोकड़ कींमक, असरपीयांरां ऊंट।
सांप्रत मैमंदसाहरा, लायो मादव लूंट॥ ६६

दलो मधू देपाळ दे, सिंध गया सब जांण।
तुटी मैमंदसु त दिन, छूटी धर साहि वाण॥ ६७

मैमंद धरि सारो समन, जद यूं लिष्या जवाब।
सिंधां लेसुं सात ही, द्रबरै बदलै दाव॥ ६८

सिंध धणी कद संकीया, मैमदरा सुण बोल।
दो मोहरां पाछी दला, तिण दिन रहसी तोल॥ ६९

जोइयां बदळै जावसी, सहर समेती संध।
दलै समभायो दुभल, मानि न मदू मदंध॥ ७०

तुटि सिंधसुं ईण तरै, जोइयां गहियो जोर ।
सिंध तणी धर सोवनी, मधु उडाया मोर ।। ७१

नीसांणी

जद झडपी सिंध जोइयां सांतू चढ सारी ।
रयत सारी सिंधरी दरबार पुकारी ।।
जंग मचायो जोइयां सुणीयो जग सारी ।
जिण पर जीवणषाननै तद कीध तयारी ।
मदु जीवण मारका भिडिया रिण भारी ।। १९

सार भलां भल साझीया भालां भळकाया ।
सिर तुटा फुटा सुघट रत षाल चलाया ।।
मादु बाहादर मारकै षळ रिण केषाया ।
घट पड़ीया घट घायलां रिण जंग रचाया ।।
जीवण मारै जैतका त्रमंक वजाया ।
लुटै सिंध जंग जीत कर इळ मीणीयर आया ।। २०

दूहा

मैमंद नै जगमालरै, जबर बैर ओ जांण ।
आया सरणै जोइयां, सिंध छोडे साहिबाण ।। ७२

मलीनाथ बंदु मुदै, वीरम करै सु बात ।
अंतहपुर वीरम त्रीया, मांगळीयाणी हात ।। ७३

नीसांणी

माल तणै घर बार मझ वीरम वरदाई ।
सारो वीरमरो सरब थित मंगळ थाई ।।
मिलिया वीरम जोया भेळप दरसाई ।
आया डोढी ऊपरै सामल साराई ।।

मांगलियाणीसुं दलो भलहो धूम भाई।
सात पोंसाषां सातसो मोहरां गुंजराई॥
बेस किसुंमां सुंवणै भूषा सिपवाई।
आया सरणै आपरै ओडी उतराई॥
दलै कयो इण देसमै वैसां मै वाई।
वीरमरा मै सांपरत सह कोय सिपाई॥
अरज करो थे आपसुं मो जाणै भाई।
रावल सरणै राषसी वंको वरदाई॥ २१

दूहा

मांगलीयाणी मोढ मन, पायो जोयो पीर।
दलों, मदु, देपालदे, सांतुं वीर सधीर॥ ७४

राणीजीरी अरज

मारो काको जैतमल, आप तणी की आस।
मांनै तो जगमालरो, मुळ नहीं वैसास॥ ७५

दस हजार जोया दुभल, षरची घररी षाय।
आडा आसी आपरै, अवषी विरीयां मांय॥ ७६

मांगलीयाणी महलरी, धीर म मानी वात।
जरां ढवाया जोइया, सुष पायो सब साथ॥ ७७

मुजरो रावल मालसुं, वीरम दियो कराय।
माल कैयो इण मुलकमैं, बसो षान थे आय॥ ७८

दलो रहै दरवारमै, जोयो आठूं जाम।
जंगा मभ भिडीयां जवन, काढै मोटा कांम॥ ७९

तलवाडै थाणौ तठै, पमंग रहै सो पांच।
माल धणी घर मायनै, आवण दिये न आंच॥ ८०

बंदडै बारा भूंपड़ा, कर षेती विणपार ।
वीर[म]देरै हुकुमसुं, हालै दसुं हजार ।। ८१

नीसांणी

सिंध दिली सुरतांणरी फोजां चढ़ आई ।
सांपो दलो जाइयो भड़ सातों भांई ।।
वीरम बोल्यो बीरवर बंको वरदाई ।
दूं माथो नह दूं दलो वर घर सिर जाई ।।
एण जबानी ऊपरां कमरां कसवाई ।
बीडंगा चढीयां वीरवर समसेर समाई ।।
केता दुसमण काट कर फोजाँ फिरवाई ।
मीर केइ रिण मारीया वीरम वरदाई ।।
आइ न जोयां ऊपरै तिल एक तवाई ।। २२

दूहा

वीरम मालै वीरवर, अरिअण दिया उठाय ।
सरब फोज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय ।। ८२

वरस किताईक बीतिया, जोइया रहिया जाय ।
कीयो ठांण अस काळमी, बेटी भई बलाय ।। ८३

जोइया अस लाया जकी, जिणरो नाम जवाद ।
प्रगटी उणरा पेटरी, साकुर नाम समाद ।। ८४

तिका हुई अस तीनमैं, बसुधा हुवा वषाण ।
मुंडा आगळ मालरै, किणीयक कीधी आण ।। ८५

मुंडा आगळ मालरै, सो आंणी वरहास ।
कैं पाबुरै कालमी कै, सुरज रै सपतास ।। ८६

मलीनाथ मांगी मुंषां, साकुर मोल समाध ।
जकां न दीधी जोइयां उंणसुं वधी उपाध ।। ८७

दस हजार रिपीया देऊ, षैंग देऊ दस षोल ।
आध देऊ सिणली अषी, मदु उरी दे मोल ॥ ८८

दले घणोही दाषीयो, मदु परी दे मोल ।
मदु न जांणै मोट मन, राजवीयांरा तोल ॥ ८९

जका बात जगमालरै, कीधी कीणीयक कांन ।
आग वलंती ऊपरां, दियो मुराड़ो दान ॥ ९०

ए वीरमरा आवगा, जौया रहे जरूर ।
आंपानै न गिणै अबे, मन छाया मगरूर ॥ ९१

सोरठो

मारै लैसुं माल, साकुर पण लेसुं सरब ।
जोयां पर जगमाल, रचै चूक उण रातरो ॥ ९२

दूहा

मालणनै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कांन ॥ ९३

जद उण मालण जाणीयो, दले दियो बहु दान ।
सीलूं उंणरो सीलणो, कथ आ घालूं कान ॥ ९४

डिगती डिगती डोकरी, पूगी दलै पास ।
दला चूक तो पर दुझल, नास सके तो नास ॥ ९५

तलवाडै थाणो तठै, सोवै बंदव सात ।
वीरा थां पर बाजसी, रुक झड़ी अध रात ॥ ९६

नीसांणी

कोट महेवा छंडीया सुध ले साही बांणा ।
दलै षान समाध चढ झांफी उपरांणा ॥
जांण लंका गढ उपरां हनुमान कुदांणा ।
सूता बंधव सातकुं जो सैल जगाणां ॥ २३

दूहा

दलै कबीला देसनै, बहिर ज कीधा वेग ।
साथे बंदव सात ही, तिके उरसरी तेग ।। ९७

षेड मिलणनै आवीयो, वीरमसुं अधरात ।
चौड़े षोली चूकरी, वीरम आगळ बात ।। ९८

मदू न दीनी मोलमै, उणसुं बधी उपाध ।
वीरमनै दीधी बीड़ंग, सागे जका समाध ।। ९९

वीरमरै उणहीज वषत, पमंग हुवा पलाण ।
दलै साथ चढ़ीयो दुझल, जोवण धर साहिवाण ।। १००

कुसले षेमे काढीया, जोइयांने धण जांण ।
जोइया पर वीरम जबर, रोकीया अवसाण ।। १०१

दलो षेड़ पूगो दुझल, हमैं न आवै हात ।
जद धिकीयो जगमालदे, भिडवा कज भारात ।। १०२

नीसांणी

राष्या सरणै राव बड़ जग साष जपंतै ।
मांझी बैदळ मारका मन भार भारमतै ।।
जगड़ षिजाया जोइयां जमराज विरतै ।
सांमा वीरम साळल्या असमान छिबंतै ।। २४

वरदायी वीरम कमध जुडीया जुध जंगा ।
सभ दोऊं दळ सांफला कर तेगां नंगा ।।
वीरम मुडै न वीरवर जावै नह जंगा ।
एकणजोया वास तै हुय सेन विरंगा ।
माल विछोडै मांझीयां कीधा मन चंगा ।। २५

जद धिकीयो जगमाल मन रोस न मावै ।
वीरम काज विगाड़ियो, सो नांहि सुंहावै ।।

ओ अवषांणो याद कर किरणाळ कहावै ।
परत कहै कण पर दलो दोय तेग न आवै ।।
एकण घर दोय राजवी वकवाद वढावै ।
इण घर रहणो आपरो थिर नांही थावै ।। २६

वीरम मालो विछड़े भड़ दोनु भाई ।
वीर भरत ज्यू राम विन बसीयो वन मांई ।।
जुध कर लीनो जोइयां इहां आंच न आई ।
साज मंडाया साकुरा वीरम वरदाई ।।
पण लीनो जल पीणरो माला घर मांई ।
नर चढ़ीयो पाटण नवी की जैज न काई ।। २७

दूहा

माळे कियो मनावणो, मांगलीयांणी तेड़ ।
आ धर वीरम आपरी षित वापोती षेड़ ।। १०३

मालक यो सुष सातमों, पोह वीरम परताप ।
जोया पोहचावै ज दिनां आजे वेगा आप ।। १०४

नीसाणी

वीरम धीरप मालनै चढ पुर चलाया ।
साथ लिया दळ सांवठा थळवटी आया ।।
कमधज भूषा केहरी अंत क्रोध अघाया ।
गहलोतां ऊपर गरज रचित रोस चढाया ।।
षडिया वैगां षेड़सु अण चित्या आया ।
भड असायच भोमीयां सज सुर सवाया ।।
पळ भष पाया पळचरां अछरां वर पाया ।
सूरा कट पड़ीयां समर गुण जोगण गाया ।।

कूट असायच काढ़ीया षग बाड षीराया।
कमंध बतीसु गांवसै सेत्रावा पाया।
सेवै वीरम सधू बड थिर थांनक थाया॥ २८

दूहा

देवराज जैसिंघदे, विजै सहत वरवीर।
सैत्रावै राषै सधर, कंवर तीर कंठीर॥ १०५

नीसांणी

जोइयां पोहचावण ज दिन उमंग मन आणी।
देषण भाड़ंगनेर दिस पोह कीध पलांणी॥
कुंडल वीरमदे कमंध परणे भठीयाणी।
नर गोगादे नेमीयो जग साष जपांणी॥ २९

रचे हगांमा राग रंग रिण तुर रूड़ाया।
दान हज़ारां दरब दै बध रीत सवाया॥
इम जोईयां घर आवीया भूपत मन भाया।
उरड़ मोतीयां थाळ भर वीरम वधवाया।
कर उछब घर घर कितां गुण मंगळ गाया॥ ३०

दूहा

पांनां फूलांमैं प्रकट, दलो पुगावै देस।
आयो वीरम आपरै, नाहर थाहर नेस॥ १०६

नीसांणी

वीरम कुरंगां वळवै कैकांण कुदावै।
जका षटक जगमालरे मनमैं नहीं मावै॥
वीरम भारत वंकडो आगमंणी न आवै।
दलै रीज समाद दी संसार सरावै॥

वीरमसुं जुध बाजकै कुण कुसळै जावै ।
दळ बळसुं जगमालदे पोह बाज न पावै ॥
डेरा समीयांएै दीया वीरम चेतावै ।
मेळ दिलीसु मेलीयो तुरकां तेडावै ॥
चेतवीयोड़ो सिंह थळ हात न ग्रावै ।
वीरम जिसड़ा वीरवर ठहके मठ गावै ॥ ३१

नगर धणी लिष नीतसुं पठ ग्रषर पांनै ।
माल कहै बैमारका मुझ वात न मानै ॥
जोथ केरै जगमालदे छळ घातां छाने ।
मेळ दिलीसुं मेलीयो तेड़ै कां तुरकांनै ॥
वीरम तोसु वाजसो करसी धर कानै ।
काढ कबीला छांन है चढ़ वीरम छानै ॥
जाय कबीला जांगळु घोड़ा घोडाने ।
रेवंत मांण करावरी कर लीधी कानैं ॥
जांण सीचांणे झड़फीया हद ठाळ हुलानै ॥ ३२

लीधा ग्रस फिर लाडणु वीरम वीरथे ।
ग्राय पोहता डांवरै सब मोयल सथे ॥
वीरमको डंड पकड़ीयो भल तरगस भथे ।
चाढ चिमंठी चौट दै ग्रसवार उलथे ॥
क्या निसांणी तीरदी मीरजादा कथे ।
जांण कबुतर छुट गया हुव लथो बथे ॥ ३३

ऊंटां तीसां ऊपरै ग्रसरपीयां ग्रावै ।
सो मेली पतसाहके जोगणपुर जावै ॥
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगां ग्रस लीधां ग्रावै ॥
सब मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै ।
सांमल हुय सारा सुभट मींया फरमावै ॥

श्रो धन वीरम श्रापरै घरमैं नह मावै ।
वीरम श्रौ भष वाघरो पोह केम पड़ावै ॥ ३४

मंडोवरगा नारका मिल मुगलां मीयां ।
वासैं चाढो बाहरां ढोलां पड़ ध्रीहां ॥
तीन सहंस चढ़ीया .तरां श्रस लारैं दीयां ।
जाण न पावै जीवंता श्रसरपीयां लीयां ॥ ३५

मोकळ कला भारभल पुत्रे जिण जाया ।
वीरम वंका वीरवर उदै घर व्याया ॥
इण कारण पड़ीया श्रठे जंगलपुर श्राया ।
सांमत सारा सांषला श्रत वेढ श्रघाया ॥ ३६

दूहा

उदाउ सहर श्रावीया, कुतमदीन पतसाह ।
षत्रवट षेत बहारजे, रजवट हंदा राह ॥ १०७

नीसांणी

उदलकुं पतसाहजी ए हुकम श्रषंदा ।
कमधज श्राद श्रनादसैं षूनी मुझ हंदा ॥
लीया षजाना साहदा तुझ नाहि जरंदा ।
उदा गुनैगार तु पतसाहां हंदा ॥ ३७

साह तणां दल सामठा जंगलपुर श्राया ।
जुंजाउ पतसाहरा नीसाण वजाया ॥
सहर भिल्यो जद सतां मिल लूटी माया ।
वीरम षातर सांषला सिर कीध पराया ॥
वहादर उदै क्रोध कर रिणताल रचाया ।
लड पतसाहां सांषला भुजपाण दिषाया ॥ ३८

आ काढे ओठी कोटमु भीम जेहा भाई ।
सला दिराई सांपला जोइयां घर जाई ॥
श्रीगे श्रीगे ढोलकी साहि वाण सुणाई ।
दस हजार चढीया दुभल मिल छ्व ही भाई ॥ ३९

चढ घोडां भड़ चालीया रज गैण ढकाया ।
मिलीया भारत जांगळु अंध रतरा आया ॥
मीर केइ रिण मारीया मदु मन चाया ।
काट कटकां काढ़ीया पळ पैंग पपाया ॥
हुर अपछर हरष अत सूरां वर पाया ।
ग्रीधण साकण जोगणी पळ पूरा पाया ॥
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया ।
सज जुध जोया सांपला वीरम वचवाया ॥
जद पीछा चढ पातसा धर अपणी धाया ।
दलजी कोसां दोय तक सामे ले आया ॥
सजे उमंग साहिवाणमैं वीरम वधवाया ।
दीध वधाई राइकां जद गोगा जाया ॥
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थाया ।
वैरो लष रहवास कुंदलजी दरघाया ॥
वारा गाम ज वगसीया चित वीरम चाया ।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ।
धाडै धन धुर माझीया मांझी पैमाया ॥
वीरमकुं देवण वळे लष वेरै लाया ॥ ४०

दूहा

लष वैरे पैदा सलष, सषरी आवै साष ।
साषांरा उपजै सदा, लेषे रिपीया लाष ॥ १०८

पूजै हरीयल पीरकुं, जोइया भड सव साथ ।
वीरमरो देषै बदन, जीवै जोया जात ॥ १०९

जलम्या तीन जवादरै, जके जोड सपतास ।
पमंगा सिरै पडाहीयो, हीरा लोही हुबास ॥ ११०

हैंसु चढे पड़ाहीये, मादु चढ़ै जवाद ।
हीरा ले धीरो चढ़ै, वीरम चढै समाध ॥ १११

पैलै ठांण समाधरै, जलमीं सींचाणीह ।
वीरम गोगेने दीवी, जग सारै जाणीह ॥ ११२

मालावत जगमालरै, उरमैं पठक अपार ।
जद केइ काढया आदमीं, वीरम कनैं विचार ॥ ११३

ऐ आया वीरम कनै, रचै सला दिन रात ।
जोयांसु जुध जुडणरी, वीरम आगळ बात ॥ ११४

सो षग वगां सूरमा, वीरमरा जुधवार ।
मुडवै नह पाछा मरद, जुडीयां रिण जोधार ॥ ११५

पींड लीधां सुरापणो, विध इण वनो उजीर ।
जामै छल धणीयां जिसा, आगे इसा उजीर ॥ ११६

वीर चढै नित वीरमा, धर लेंवण चित धाव ।
घण मोडण जोयां घडा, वन रूठो वनराव ॥ ११७

नीसांणी

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी ।
वीरमरै सब सांढीयां निजरां गुजराणी ॥
वीरम चित विटाळिया ऊंधी मत आणी ।
सात हजारु सांढीयां दिन हेक दगांणी ॥
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी ॥
दस हजार चढीया दुभळ रज गैण ढकांणी ।
मारे वीरम मेटसां करसां तुरकांणी ॥

लष व्रैरै वीरम लियै सांढ्यां आंपांणी ।
दोय कोसां पूगो दलो लारै लुणीयांणी ।।
मानों मानों मारकां सचो सलषाणी ।
मलिनाथ जगमालसु तिण किसड़ी तांणी ।।
आप तणी धर छोड़के आयो आपांणी ।
आंपां मारण उठीया लष कोट लगांणी ।। ४१

लष वेरैसुं थट लीयां चढ़ कमंध चलाया ।
मोढलरै गढ पाषती एकण दिन आया ।।
सरवर भरीया नीरसुं तरवर तट छाया ।
वीरम जेत विराजियां जाजम विछवाया ।।
मोटल आवै मिलणकुं जहुवार कैवाया ।
जिसकी बाटां जोवता ओ भी चढ आया ।।
केइ पकवान कढाविया बाकर बटकाया ।
हरिया मन राजी हुई गीतां गवराया ।।
मोहले महले मंडली रंगराग रचाया ।
मुंगे अतर गुलाबका छिड़काव कराया ।।
पोळां तोरण बंधीया सामेल सभाया ।
ऊपर मोती वार वार भल थाळ भराया ।।
मोटल मिलीयां वीरमे आफु गळवाया ।
आफु हात उछाळके छळ चोट चलाया ।
मोटलकु भी मारीयो बेली वफनाया ।।
धन लुटे लीधी धरा गढकुं अपणाया ।।
हरीया भाले हतसुं रथ पर चढ़वाया ।
हरीरा जेवर सुतन वीरम संभलाया ।।
ओयत संग पठायके साहिवाण पुगाया ।
सो आया साहीवांणमै कूका कर लाया ।।
मदु अषै मारको अत वेढ अघाया ।
जंगमां चढ़वा जोइयां वीर रस छाया ।।

मोटलका धन मांगसां ले वैर सवाया ।
षाफर हिंदु काटकै करसां मन भाया ।।
पोडां धर धूज पड़ाहीवै दलजी चढ़ आया ।
बातांसुं बिलमायकै ज्यांनै जजमाया ।।
सीहै कहीया बचन सब नांही मन भाया ।
सुगन विचारो सुगनियां ए जाब कहाया ।।
पांच दिहाड़ां पाळीयां मत बाहिर जाया ।।
सुगन भला ले साथ सब भरजो पग भाया । ४२

दूहा

दले चिगायो देसनै, इसड़ो बुध आंबेज ।
भायांनै भोळावतां, जिणरै कासुं जेज ।। ११८

[सोरठो]

सरणायां साधार, दलै जिसो नह देषीयो ।
वीरमरा विनपार, जबर गुना जिण जारीया ।। ११९

नीसांणी

दल भेज प्रधांनकुं ए जाब अषंदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय षिमंदे ।।
ढाबो ढाबो ठाकरां धर पाय धरंदे ।
मदु न मांनै माहरी कल काहे करंदे ।।
हेकण जगा न मावही दोय सेर बकंदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय षाग धकंदे ।।
तुम हिंदु गुना करो मुष बोलो मंदे ।
दोय घर डाकण परहरै गाम धणीयां हंदे ।। ४३
आषै वीरम राठवड़ आगळ पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जब भूषी थावै ।।
गुण भूलो सारा दलो परधांन मेलावै ।
आय प्रधांनसुं अषीयो वीरम वट षावै ।।

सूर उगै साइयांणमै नित ध्राह घलावै ।
जोयां हंदी जीवका षोसे ने षावै ॥
दले अरु देपालकुं नित ध्राह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ॥
जोइया बडपण जाणनै कथ नीत कहावै ।
षोसै फेरूं षाजरु सफरै राषावै ॥ ४४

दूहा

जावे भागा जोइया, पाळे अगली प्रीत ।
धीर न वीरमदे धरै, निस दिन करै अनीत ॥ १२०

दस हजार जोइया दुझल, लाष लोकरी लाठ ।
ज्यां जोयां ऊपर जबर, वीरम घाली बाट ॥ १२१

दोनुं तरफांरों दलो, दुष भुगतै निस दीह ।
झलीया रहै न जोइया, लोपी वीरम लीह ॥ १२२

निसांणी

दिन उगै पसरा दियै उठ वीरम आया ।
उचका डांणी उथपै अपणा बैठाया ॥
माणस पनरै मारीया जोइयाणी जाया ।
झरतां हतां जोइया कुकाऊ आया ॥
सो सारा साहीयांणमै थट भैळा थाया ।
अधी उच आपां दई बधी अपणाया ॥
आपां ऊभां आपणां माणस मरवाया ।
जमी गमावै जीवतां जांनै किम जाया ॥
ज्यांरी जननी जनमतां षारा नह षाया ।
दस हजार चढ़ीयां दुझल रज गेण ढकाया ॥
लष वैरे ऊपर लहर दरियाव हलाया ॥
दोय कोसां पुगो दलो वातां विलमाया ।

सो पाछा साहियाणमै ओठा ले आया ।।
दाढे नित अवगुण दलो सलषांण सवाया । ४५

युं देपाले अषियो सुण दला लुणीयांणी ।।
वास चोवीस वसावीया वक झूठी वाणी ।
तो मारे धर लेवसी वीरम सलषांणी ।।
तडछै जासी जोइयां आयो आपांणी । ४६

दूहा

मुदै जवाइ मारीयो, लीधो सारो डांण ।
मसतक टोपी मेलनै, सुंप परी साहीयांण ।। १२३

दलो कहै देपालदे, मांझी बंस मरोड़ ।
भाया गुण भूलो मती, ओ वीरम राठौड़ ।। १२४

दुसह वचन कहीया दलै, जोइयांनै जजमाय ।
तिण समीयै पुगल तणो, भाटी बूकण आय ।। १२५

नीसांणी

बुकणरै दोय बेटीयां गत एक नीहालै ।
नाम बडी कसमीरदे परणो देपालै ।।
रांनल कंवरी राजवण ग्रभ अछरां गालै ।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हतालै ।।
रांनल मुझकुं राजवण भाभी परणालै ।
भावज गुण भूलां नहीं ध्रंम षोड़ विचालै ।।
कहीयो जद कसमीर दे चढ़ क्रोध अचालै ।
हुँ परणांसु हिंदवां तुरकां हरटालै ।।
सो कुण हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै ।
परणांसुं सगपण करै वीरम विगतालै ।।
जद पाछो कहीयो जसु आगम अषतालै ।

मानै भाभी माहरो वायक सिर मालै ॥
बैठी रोसै बापनै कर मुंडे कालै ॥ ४७

दूहा

भ्कडपे बुकण लेवसी, दोलत दामो दाम ।
आसी वा भी आपनै, तो सिर भुंड तमाम ॥ १२६

वीरमनै वर माळतां, मिटी अकल कसमीर ।
बुकणरो घर बूडसी, नदी वहंते नीर ॥ १२७

गोडेमै जांरै गया, धारा जकै धणीह ।
वेहीज मारण उठीया, तेवंर चूक तणीह ॥ १२८

सींहांनै सलषांणीयां, त्यांरी एक तरेह ।
आ दुअ पतीओ धरो, कुण विसवास करेह ॥ १२९

तिरिया हठ भ्काले तिको, मैलै नांहि परत ।
गम विन वाजै बेगमां, ज्यांरो नाम जगत ॥ १३०

मेले जादम मोदसु, बीरमनै नालेर ।
आप परणवा आवजो, विचै म करजो वेर ॥ १३१

सार छ्तीसुं संकै, मसतक वांध्यो मोड़ ।
वीरमदे चढीयो बिडंग, रचे चूक राठोड़ ॥ १३२

नीसांणी

बुकणदे घर व्यावदां रंग राग रचांणा ।
चारण भाटां चोहटां गरटा दिवरांणा ॥
मन कुंता बहु मालरा लेषां लिवरांणा ।
बेहु मुदाइ वादसी बे त्याग करांणा ॥
सोनारां घर सांपरत संचगर दिवरांणा ।
कंठीयां कड़ा मुंदड़ा घण घाट घडांणा ॥ ४८

कोड करै कसमीरदे भर मोतिन थाळा ।
वीरम संग बधावसां मेले वरमाळा ॥
जादुम चूक न जाणीयो विय्याह विचाळा ।
कपटरँ कसमीरदे पयसु रच चाळा ॥ ४९

सावैसुं इक दिन अवल अध रतरा आया ।
भाटी षागा भाजीया रिण चूक रचाया ॥
व्याव न किधो वीरमै लालच मन लाया ।
बुकण वेटां बेलीयां षागा षलकाया ॥ ५०

चारण चारण कुकतां आरण जगांणा ।
बामण भुरी वासता सिर आप दिरांणा ॥
भागा मुंडा भाठदां षुल दांत षिराणा ।
डोफा भागा डुमड़ा झाटक झेरांणा ॥
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांणां ।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवरांणां ॥
केतां पावज कटी हातां हेरांणा ।
जावै गुणीयण जीव ले कर षांचा तांणा ॥
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांणा ।
फिर कोइ इसड़ा ज्यागमै मत पाव दिरांणा ॥
सलषांणी जिसड़ा सुपह वनड़ा वरवांणा ।
बुकणका घर षोदकै धन सोध लिरांणा ॥
बुकण सहतां बेलीयां इक षाड़ दिरांणा ।
भटीयांणीदै भागका क्या चक्र फिरांणा ॥
कह भाटी कसमीरकुं क्या फाग षिलांणा ॥ ५१

दूहा

सत्रवां षागां साझीया, घणो उतारे घांणा ।
व्याव न कीनों वीरमै, अण भग रच आराणा ॥ १३३

आयो पुगलसुं अठै, बादै षडीयां ऊंट ।
कसीद कैयो कसमीरदे, लेगा धन सब लूट ॥ १३४

निसांणी

देपालक ने कसमीरदे बड़ एक तरोई ।
वीरम साहंस तोलीया सलषांणी सोई ॥
छुट पड़ी किरवांणीयां विमांह न होई ।
अवलज सुजो आषीयो सो सची होई ॥
बुकणका घर बोटिया साला सातुई ।
बोतल हातल बटीयां विमाह न होई ॥ ५२

आ सुण जोइया आवीया दलेषां आगै ।
देपाळो मुष दाषबे लाणत लष लागै ॥
मुझ गनायत मारीया जुध छुटी जागै ।
वीरमसुं जुध वाजसां अवगुण लष लागै ॥
ऐ बल धारे उठीया षळ मारण षागै ।
आज वालां धर आपणी सलषांणी भागै ॥ ५३

लष वेरै पैदा सलष वीरम सुष बोळे ।
हैंवर दोय हजारीयां सोहडां थट दोळै ॥
सहंस दसुं ही सांडीया टोळायत टोलै ।
लाष पचासां लूटीया रोकड़ धन रोळै ॥
मोटल सिरषा मारीया गढकी धग बोलै ।
जोइयांसुं जुध जुटबा चित चेत न चौळै ॥
मावै नह छाती मधु इणसुं रह ओलै ।
झलीया रहै न जोइया तैगां बळ तोलै ॥
दोउ दिसरा दुष दलो भुगतै मन भोळै ।
दिल फाटा दोउ ए दिसा घातां मन घोळै ॥
दिन उगै भायां दलो परचाय पंचोळै ।

आयो बीरम आंपणो षित छोड़र षोलै ।
लज सांकळ तोड़ै लिया मदपुर मचोळै ॥ ५४

दूहा

कठा लगा कथ कुड़, दाठै भड़ भायां दलो ।
धमतां धमतां धूड़, सोनो ही होवै सदा ॥ १३५

नीसांणी

दलैषान विचार कर परधान पठाया ।
लष वरै वीरम कनै ए जाब कैवाया ॥
जगड़ तणी षग झाट सैभंग वीरम आया ।
आयाकुं आदर दिया हम लीध वधाया ॥
लष वेरो रहवासकुं दळजी दरवाया ।
धरती चोबी गांमड़ा सब राज समाया ॥
उस मांसुं वीरम तनै आधा बगसाया ।
डांण वलै उचका दिया आदा अपणाया ॥
चोबी गाम चबुतरा किह काज बैठाया ।
षोसे इकसठ षाजरु सफरै राषाया ॥
जोइया पग मांडे जिती धरनीही रहाया ।
हाती रहै न जुटिया केहर उकराया ॥
मीलीयां चिडीयां महलै अहि जाणक आया ।
जांणक डोकर षोलडै विच बाघ वसाया ॥
क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाया ।
षायरहिं दुगुण कियां सब जाय भुलाया ॥ ५५

हमहो भाइ सात हैं भुज आ भठ भाई ।
मधु सीरीषा मारका थोड़ा जग मांहि ॥
साकुर भड़भी सांतरा दस सहंसा सोई ।
तो भी वीरमतै वडे इसड़ी हम मांई ॥ ५६

सब वेठां सीहांणमैं जोइये कुल जाया ।
सठ लेवण सीहांणकुं हैरा लगवाया ॥
जावो जावो कह जोइयां एथी मत आया ।
पटकी जोयां पागड़ी सिर टोपी छाया ॥
जोरु छोरु छोड़ कर वनवास वसाया ।
देषे सब निजरां दलो समझै मन माया ॥
दिन कितरा टाळै दलो अंत विरम आया ।
मेतो मांरा आज लग स वचन निभाया ॥
कांमेती कह कर इसी आतुर उठ आया ।
मांगलीयांणी मोट मन भीतर बुलवाया ॥
भोजायां भाया कंनै मुजरा मैलाया ।
दलै अरु देपाळकुं ऐ जाब कैवाया ॥
पालो रुंष न काटवैं जो छांह अछांह्या ।
मोरो पीहर थां घरे थे सांतु भाया ॥
में घर छाडे मांहरा घर थारै आया ॥ ५७

दूहा

कथन दलाहु ता कया, पाछे आय प्रधान ।
बाइ समझायो बोहत, कमंद न दीनो कान ॥ १३६

नीसाणी

मांगलीयांणी सांवली परचावैं पीवैं ।
जोइया तो जळ वारता तो दीठां जीवैं ॥
धर आधी दी धरपती क्युं कांकल कीवैं ।
हक राठोहड हलणा थट चंगा थीवैं ॥
सुष छोड़े दुष सापरत अपजस किम लीवैं ॥ ५८

वीरम चढ़ीया वीरवर कीधा घमसांणा ।
तुरंगां वोम धड़क धर मेले डमरांणा ॥

देष दरगह पीरदी आया सलषांणा ।
वीरम न्याव नह लही अनीयाव सुहाणा ॥
इम मुंजावर बोलीया चढीया मत आंणा ।
पतसाही पाळा चले क्या रावल रांणा ॥
है वे हिंदु समझ मन फरहास पीरांणा ॥ ५९

दरषत हरीयल पीरदां विच दरगह सोवै ।
जोइया देस वीदेसमै जिण सांमो जोवै ॥
पीर प्रचाइळ प्रगट दुष दालद षौवै ।
राम रहिम जु एक हैं कबु दोय न होवै ॥
वीर फरासा वाढ़ बाढ़ बषाती ढोवै ।
के मुलां तागा करै हुब हाका होवै ॥ ६०

वाढ फरासां वीरमै घड़ ढोल मंडाया ।
गुणपत ढोली गेरका चढ कोट बजाया ॥
वारै कोसां बँब देवो ढोल सुणाया ।
सो सुणीया सीहांणमै डर इचरज आया ॥
ऐसा जोगी उमदा एथी कुण लाया ।
सिंध दिली सुलतान दळ वीरम पर आया ॥
दसुं सहंसां हुता दलो चित सेस चढ़ाया ।
जांवा वीरम जीवतां तो जांणे आया ॥
इम दलो गल उचरै भल सजो भाया ।
बगतर कुंठा वीड़तां मुंजाव्रर आया ॥ ६१

दूहा

दरगासुं मुंजावरां, कयो दलानै आय ।
वो फरहास ज पीररो, वीरम लीयो वडाय ॥ १३७

फरहासांरा फाचरा, सबदां घुरै स तोल ।
वैरै लष वजाड़ीया धींगै धींगै ढोल ॥ १३८

नीसांणी

साकुर अर पांडवनैं षुररा करवाया ।
वाप वाप विरदाव दे मुष वाग चढ़ाया ॥
मदु सेर जवाद पर पाषर पटकाया ।
साषत कर सव सोवनी अव वाहिर लाया ॥
वगतर कुंठा बीडीया सिर टोप सुहाया ।
सार छतीसुं साभ सव इम मदु आया ॥
पांडव लाय जवाद पर असवार कराया ।
जैतलसु देपालदे सभ सुभट सुहाया ॥
मिलीया अव सारा मरद अस पीठां आया । ६७

चढीया सामत सुरमा मुछां वल घलै ॥
तरगस भीडै तेजमैं हाथां षग भलै ।
धनमैं घेरा धांडमैं कर षवरां किलै ॥
चढतां हैसु धीरनैं घर राष्या दलै ॥ ६८

दूहा

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय ।
सुण वीरम ग्वालां सवद, लागी उरमैं लाय ॥ १४५

दस हजार जोया दुभल, कठठ साररा कोट ।
ढाळां जंगा चालणा, ठाला करै न ठोट ॥ १४६

नीसांणी

आप गवालां आपीयो गायां घेरांणी ।
अण भंग कोपे ऊठीयो पप चाढण पांणी ॥
ढोल वधाई वाजीया वीरां रसवांणी ।
आया सज भड एकठा नह जेज करांणी ॥ ६९

मांगलीयांणी सांषली धण उभी पलै ।
रहजा नार वरजीयो सुण मेरी गलै ॥
आज पड पण आपरै धन लीधो दलै ।
जो फरहासन बाडतो कलकी थुहलै ॥ ७०

फीर वीरमकुं आषीयो कही मांगलीयाणी ।
जे तुं ठाकर सलषीयांण ए भी लुणीयांणी ॥
दलो अवगुण दाटवै गुण आदु जांणी ।
दुष पायो धायो दलो तद इतरी तांणी ॥
कहीयो कमधज रीस कर रहजा अब रांणी ।
पण नेम जब दीयो पीवण मुष पांणी ॥
रावत सारा रीसमै जम रूठा जांणी ।
धन नह जासी घाडमै ऊभां सलषांणी ॥ ७१

उस वीरम उठ कर होकार दराई ।
साज मंडाया साकुरां कमरां बंदवाई ॥
कमधज ससतर भीड कर समसेर संभाई ।
सांणीकुं कहीयो सरस है बरस झवाई ॥
आ फुले उमंदा अंगा अडपाई ।
बोह तब थीटे बेलीयां मंनवार कराई ॥
विध विध कर मन वेठीयो षिम षुन किताई ।
भारतमै रहजो भला कथ रषां काई ॥
मांगलीयाणी पालबा इतरै फिर आई ।
गुना अनेकां जारीया दलै सिपवाई ॥
एक गुनो दिन आजरो बगसो वरदाई ।
मुझ तणी कंथ मानकै ठहरो ठुकराई ॥
ए सब गायां आपरी बिगड़ै नह काई ।
दलो सवारे देवसी लष वेरै लाई ॥
हुं पण कागद मोकलुं है महारो भाई ॥ ७२

लष वेरोरो वाणीयो, उरे पण मिलियो आय ।
वागा ढोलांरी विगत, सारी कही सुणाय ।। १३९

मदु सुण पग मांडीया, हणीया छाती हात ।
जद सजीया भड जोया, सहंस दसुं इक साथ ।। १४०

सभतां भड़ मदु कयो, करै मुंजावर कूक ।
पीणी देष र पीवता, जको कटायो रूंष ।। १४१

दे टोपी हाते दला, बणां फकीरी वेस ।
मांगे षासां मुलकमें, नहँ आसां इण देस ।। १४२

नीसांणी

पीरां करवा पट कीया, आय आगळ दलै ।
जीण करै मदु जवन मुंछां बळ घलै ।।
हीरा लै षंध थाळै अस आय अललै ।
कर षुररो लगांम दे जर पाषर घलै ।।
आ जोका जोया इसा धरती उथलै ।
दलो हकालै दाटवै भड़ ओगण भूलै ।।
वीरमसुं जुध बाजबा चिंत चेत न चलै ।। ६२

मालै अरु जगमाल मिल क्या गोठ रचाई ।
जांरो सरणो ताकीयो धणिया पधराई ।।
वे हीज मारण ऊठीया सो हीज सीहाई ।
मांगळीयांणी मोटको गुण कीनो बाई ।।
आंपां कुसळे काढीया वीरम वरदाई ।
सिंध दिली दोऊ फोज सज आंपा पर आई ।।
वीरम बदलै आपणैं समसेर चलाई ।
आंपा धरती आंपणी पाछी जद पाई ।।
मदु वै दिन मारकां भूलो मत भाई ।। ६३

कुछ वीरमकुं नह कैया उचभो अपणाई ।
बारै गांव ज बगसीया भेले हुय भाई ।।
सात हजारां सांढीया दिन हेकण दगाई ।
मोटल सिरषा मारीया जीण सकड जवाई ।।
षाधा षोसे षाजरु संक लोप सवाई ।
आंपां ऊभां आपणी घर लाज गमाई ।।
मधु अषै मारको संच ·················· ।। ६४

गुना अनेकां जारीया दलै लुणीयाणी ।
कर दरसण फरहासको पीता में पाणी ।।
सो फरहास कटावीया अस मान गिरांणी ।
षाफर माल कुरांणकुं लष वेर लगांणी ।।
दुभ्रल मदु देपालदे भाषै आ वांणी ।
आज परा जो आलसां जोइया मन जांणी ।।
अपणा बांधर आंपणीके देदां पाणी ।
जावे घरसु जोइया कै खुटै सलषांणी ।। ६५

आज बराछ करी समै अणचिंत्या जासां ।
जाण हली घण कंठली वरसाल मचासां ।।
हरषत मन सुरा हुवा बधते गांवासां ।
जुडसां वीरम सांजरां बटका उडवासां ।। ६६

दूहा

कहीया भड भायां दलै, बडपण कथन विचार ।
वीरमसुं जासो विडण, है जीतां ही हार ।। १४३

बाई की मन जांणसी, भाई आया भाय ।
लष बेरै जाजो मती, घेरो जायर गाय ।। १४४

मांगलीयांणी माहरी गायां भिड़कावै ।
लषवैरैरी सींवमै कुसलै फिर जावै ।।
जोइया मनमै जाणसी वीरम संक षावै ।
हु आलस वैठसु हमै थित इतरा थावै ।।
फणधर छांडै फणदसु न भार संभावै ।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै ।।
विग घटै वीहंगेसको सिव ध्यान भुलावै ।
गोरष भूलै ग्यांनकुं जत लिछमण जावै ।।
सत छाडै सीता सती हणमंत घवरावै ।
धणीयां धाडेता तणीकी पवरां पावै ।।
हुं सुंक कर वेठु घरे जग उलटो जावै ।। ७३

ऐ राठोहड़ आजरा उठीया अवतारी ।
हड हड नारद हसीयो भैरव व्रद भारी ।।
मांगलीयाणी स्यामनै पालै घण प्यारी ।
घुड बलोइण ढोलरै लष धो वालारी ।।
उंधी किण दीधी अकल विणतै इधकारी ।
वाढण वात फरहासकी मुप केण उचारी ।।
मेटण राज समांहरी देवण दुष भारी ।
रांणी पांणी रालीयो आंषां अणपारी ।।
वरजे चढतां वीरमो ग्रहचाल पलारी ।
रह रह ठाकुर समझ मन सुणीये गल मारी ।।
जो फरहास न वाढाता टल जाती सारी ।
सांणी करी समांधकुं तद वैग तयारी ।।
पाव रकेवां पर ठकै कीधी असवारी ।। ७४

दोय सहंस चढीया दुझल पमंगां पषराळा ।
वीरम समांध कुदाडवै झल सावल झाळा ।।
आज न छोडां एक ही विच पेत वडाळा ।

आये आये आवीया मोयल मतवाळा ।।
मांगलीयां अरु सांषला सज साथे साळा ।। ७५

माणक हरीयो दोलीयो बड थाट बरवांणी ।
त्रीहूं हजूरी तेण दिन आया अगवांणी ।।
लेवण झांक लंगुर ज्युं मुसकण केकांणी ।
ठहरो ठहरो ठाकरां आयो सलषांणी ।।
मधु ऊपर वीरमें झोकी केवांणी ।। ७६

दस सहंसु चढीया दुझल धारे मन धंकी ।
दल षागां दाठ दे षुरे भष पंषी ।।
अछरां आय उतावली हु ऐवर तकी ।
जोगण चोसठ षेतमै बोले बकबकी ।। ७७

सामंत तेग संभायके इम भारथ मंडे ।
वीत न छोडां वीरमा पड पाधर पीडे ।।
सीह सपेखै कुंजरां बन घेर वीहंडे ।
मदु झोकी कालमी कर पोरस जडे ।।
देव विनायक क्या करै ऊलळीये गडै ।। ७८

वर बासुरां सांवतां अपछर उतरांणी ।
गीधण आमष गीलणकुं पांषां बजवाणी ।।
षेचर भूचर षलकीया केइ कोड करांणी ।
जुध सुण चोसठ जोगणी उछव मन आंणी ।।
जोइयो षडै जवादकुं पष चाढण पांणी ।
झांफी सेर जवादकुं अंग आतस आंणी ।।
सितर भालै साजीयां मदु लुणीयांणी ।। ७९

बाढ गणा सिर बैरिया रिण गाढा रहणां ।
साकुर एण जवादकुं केता रंग कणा ।।
मुछा रंग थारां मदु रज वठदा गहणा ।

वोहत तब कारैं है बेलीयां रिण गाढा रहणा ॥
जाता उण मारग वुहा आता उण वैहणा ॥ ८०

वीरम बाग संभायकैं तोषार झपटी ।
छुप मियानां नीसरी पुरसांण चोहटी ॥
पैंसट जोइया पाडीया जंग वीरम जुटी ।
वीरम मदु वाजीया पल षैंगां पुटी ॥ ८१

वीरम मदु वाजीया रिण मांझ समथै ।
आगल रहसी आंपणी इल भारत इथैं ॥
षाग झड फड षेलिया रिण फाग रमंथैं ।
लल भष सावल लेवतां हुय लथो बथैं ॥
साजै हात कटारीयां नर वाहै षथै ॥ ८२

वीरम मदु बकवकैं घण घावां घाया ।
अस षड जोयां ऊपरैं डाचक डकराया ॥
जद मिल सारा जोइया मदुपैं आया ।
अस वीरमकी उचकैं घण दल घवराया ॥
घट कुसलैं जावा घरैं लष धाड़ो लाया ॥ ८३

दूहा

इत जवाद समाद उत, दाषै दोउ दल देष ।
वीरम मदु थां विना, अस भड वचै न एक ॥ १४७

नीसांणी

बलवंत मदु बोलीया विध चुक बताया ।
ढम ढम बाजी ढोलकी षोगीर बजाया ॥
ताली तास कतोवरा सफरा षडकाया ।
धिरी धिरी धीरपै भाषै मुष भाया ॥
जोवैं चोसठ जोगणी अछुरां रथ आया ।
वापा बापा बोल दे वीरम विरदाया ॥

सुसती करण समाधकुं बाजा बजवाया ।
ऊँची ऊँची ऊछलै तंग पाषै आया ॥
नाचण लागी नाच पर रंभ नाच रचाया ।
ताजण भटकी तोप सालषतांन लगाया ॥
वीरम बदली बीडंग लष जद चावक बाया ।
भांण तमासो भालबा रथ ढाब रषाया ॥
धीब पडै तरवारीयां के भागै कांया ॥
भाला भलकै सीस पर सिर ग्रीधां छाया ।
वीरम हांकै वीडंककुं पलटै नह पाया ॥
जद वीरम मन जाणीयां अब मरणा आया ।
जद वीरमरै जोइया चहुं फेर फिराया ॥ ८४

अला अला उचारकै चढ षैंगा चला ।
जुडिया तेंगा जोइया हुय वीरां हला ॥
वीरम मलां वीटीया बाजी गलबला ।
भड वीरम मदु भिडे जाणै जम टीला ॥
वीरमदे जोयां विचै भासै रिण भला ।
सिंह अचानक सांकडै घड़ कुंजर घला ॥
केहर जाणक कोप कर उठीया गीर टीला ।
मधु वीरमकुं कहा सुण सांची सला ॥
पला विछाता पालता दिन कढता दला ।
सो दला अलगा रहा करता रिवमला ॥
मिलीया दलमै दांनमै मांभी कर सला ।
सामा वीरम सारका बण बैठा बला ॥
कहां कवीला कुटम घर कहां भाई भला ।
बादुर ढाढी बोलीया नीसांणी गला ॥
नला सला नीवगै सो जाणौं अला ॥ ८५

मदु अषै वीरमा धीरज नह धारी।
लाष गुना मै जारीया जोय जरणा मारी।।
वात कही मुष वीरमै सुण मदु मारी।
थे नह गुना जारीया जरणा दलारी।।
दला विनां तु जारतो थिर जरणा थारी।
मदु आषै वीरमा क्या मरजी थारी।।
वीरम कहीया वादमै आषर उपगारी।
वांण बंदूक कवांणकी तद चोट पलारी।।
भड सारा मांसु भिडो तोले तरवारी।
जद मदु हुं जांणसुं थिर जरणा थारी।।
कहीयो मदु कटककुं सुंणजो भड सारी।
वीरमसुं जुध जुटजो तो ले तरवारी।।
वाँण वंदुक कवांणकुं दुरी कर डारी।। ८६

दूहा

दाखे मुष देपालदे, सांभल मदु सोय।
वीरमसुं जुध बाजबा, कदम न धरसी कोय।। १४८

इतरी बातां आगमैं, मानव कुण जग मांय।
वकारै कुण वीरमो, सांमी षाग संभाय।। १४९

नीसांणी

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै बारै।
आभ भुजां कुण ओढमै कुण सायर जारै।।
मिणधर दे मुष अंगुली मिण कवण लिवारै।
सिंह पटा झर सांप हो कुंण मैंड पधारै।।
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै।
बाद करै रिण वीरमो नर कोण वकारै।।

मदु तो बिन मारको कुंण आसंग धारैं ।
ऐ राठोहड आजरा पोरस विन पारैं ॥
दसा हजारां दोठसी हय दोय हजारैं ।
मत धडको दाषै मदु है साहिव सारैं ॥
राठोड़ां रिण रीठसा दे धीठ अकारैं ।
जल चाढां कुल जोइयाँ कथ रषां लारैं ॥
वाथ घलां असमांणसु लज हात अलारैं ॥ ८७

सजै दोऊ दल सांमटा विच घूमर वगी ।
राठोडां अरु जोइयां असमाण सिलगी ॥
वाहे पग देपालदे फिर पीछी दगी ।
जांणक नाचत अपछरा घुमावण लगी ॥
जैतल वाही जोर कर विच मुठां लगी ।
पोड चहुं जव कपडा पग होय अपगी ॥
पपर रांणी चीर जिम घोसांटण लगी ॥ ८८

उतरीया वीरम कमंध समाध कटाई ।
भाई भाई भाषीयो पुर ढोल बधाई ॥
ढाल लियां हन वाहमैं समसेर संभाई ।
पैंसठ अस चढ पाडीया वीरम वरदाई ॥
वीरम पाला षेत विच ऊभा अड़ पाई ॥ ८९

राठोडां अरु जोइयां भेरां घमकारा ।
वाजी हांक बहादरां हुय वर होकारा ॥
भल भल वाड भलकीया षुरसाण दुधारा ।
झवरक सेला आग झड उर फुट अफारा ॥
पडीया असफड पाषती धड न्यारा न्यारा ।
जाणक आप चोगानमे ढ़लीया विणजारा ॥
पालैं पनरैं पाडीया सज वीरम सारा ।
उण पुल मोयल रिण भिडा षग झलै षारा ॥

सांगलीया अरु सांषला भिडिया जुध भारा ।
सोलंषी चायल सरब बांनै तव रारा ॥
नायक विदर नगारची कर समर करारा ।
वीरमरा जुध बीचमै तुटा जिम तारा ॥ ६०

बीरम बाही बीजळा मदु अर मथै ।
सामी मदु साजदी षग झाटक पथै ॥
फेर ठंठारा फाचरा घण जाण घडथै ।
जांण रमै रिणु गेरीया डंडे हड हथै ॥ ६१

मदु वीरम माचीया सझ आंमा सांमा ।
हाथी जाणक हुचकै मदुपुर अमांमा ॥
साकल छुटासा परत नर नाहर नामा ।
मदु वीरम मारका हदपुरै हांमा ॥
परठै पावस मेरसा उण वेर अमांमा ।
रीमा षंड वीहंड कर किदा हद कांमा ॥
मोटा दुसमण मारीया नर मदु नांमा ॥ ६२

मदु ऊपर माधडै वल मुछा वाळी ।
एकण घाव उतारीया त्रजडां त्रह ताळी ॥
मदु पोढे मारको रिण षेत बिचाळी ।
जेतल जसु मोठीया भड कुलवट भाळी ॥
अण भंग लूण उजालीयो चाल कल चाळी ।
परधांमैरी पागनै इण विध उजवाळी ॥ ६३

वीरम अंग विहंडीया मुंछां बल घलै ।
देष इतै देपाल दिस कर क्रोध अचलै ॥
भीलंपनै कु भाषीयो झट तरगस झलै ।
पाव हात सब कट पडे किधा चष ललै ॥
धानष सामा पाव सर दांता झलै ।

छुटा तीर अंचितका धड़ फुटा ढलै ॥
चुका वैग पिलांणतैं उलटा कर चलै ॥ ६४

धनंष चढाया पुनीयै पुरसांण चौहटी ।
तन फोडे तरगस गया ज्यूं बीज झपटी ॥
ढह पड़ीयो देपालदे धरलणी चोटी ।
परगट कीधी पनीये रजपूतां रोटी ॥ ६५

राठोडां अरु जोइयां कलमा चकरारी ।
वीरम मदु पोढीया सझ षाग दुधारी ॥
च्यार सहस पड सुरमा भुज चिरदां भारी ।
साषां सारी सोह चढ साषो धर सारी ॥ ६६

दूहा

अंग वीरमरैं ओपीया, घाव एक सो दोय ।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय ॥ १४६

नीसांणी

जोइया दोड़ा देसरा जुटा सो वारे ।
ऐ मालक नवकोटदा लाषां दळ लारै ॥
वीरमसु जुध वाजनैं मांनव कुण मारै ।
वीरम दाहक आयगा सो साहिब सारै ॥ ६७

दूहा

विड रहीया रिण षेत बिच, सहंस दोय समराथ ।
रहे उजागर चूंड रंज, नव कोटी ....॥ १४७

नीसांणी

पडीया वीरम पाषती संग इतरा सुरा ।
सोलंषी मांधो सुभट पड़षेत सनुंरां ॥

पड़ीयो चायल सैंसमल षळ कर भष भूरा ।
भीम पडै रिण सांषलो तन कर चक चूरा ॥ ९८

दोळो पड़ मोयल दुभळ षत्रवट वट षाटे ।
हजूरी वनी पड़े दोयण दळ दाटे ॥
पडीयो आहेड़ी पनो झड़ीयो षग झाटे ।
सांणी पड़ पांणक सुभट कीर मर तन काटे ॥ ९९

मांगलीयो मंगलौ पडै जग सारौ जाणै ।
सहंस दोय पड सूरमा पाषर हय पांणै ॥
वीरम संग वीठीया विहद तद ऊंची ताणै ।
अछरां वर पोहता इता श्रग वैठ विमांणै ॥ १००

दूहा

सोडा हाड़ा सिसोदा, पड़झाळा अरु गोड़ ।
चावड़ा तुर चवांण पड़, रिण पड़ीया राठोड़ १४८

नीसांणी

जसु रिणमें जूझीयो कर जोस हमला ।
मदु जैत रिण रहे झड तेगा झला ॥
घट फूटा देपालदा घुड़ले वर घला ।
दोय सहंस जोया दुझल हुरां संग हला ॥
चढ़ीया डोली च्यारसैं गिरणे गलबला ।
सब आया साही बांणमै कर अला अला ॥ १०१

दलो कहै मै वरजीया मानी नह काई ।
वीरमसुं जुध वाजनै सव सेन कटाई ॥
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भाई ।
धूड़ वलोइण धाड़नै जो कीधी सो पाई ॥

दलै बिगड़ी देखने की जेज न काई ।
तेजल संग दे भेलीया चुंडो अरु बाई ।।
दोय दीहाड़ा पंथ बुही थळवटी आई ।
काका लाउ घर आलरै तेजल पोहचाई ।। १०२

टाबर चारै टोगड़ा जां साथे जावै ।
वाला बांदै बाछड़ा तक घोड़ा लावे ।।
बाळक तोही न बीसरै घर रीत जणावै ।
वारट आलो बाछड़ा जोवण कज जावै ।। १०३

दूहा

सूतो चूंडो नींद सुष, सिर अहि कीधो छत्र ।
जद आले मन जाणीयौ, है कोई छत्रपत ।। १४९

अही फण कीधो उपरा, भुपत तप भारीह ।
आलै मन जद जाणीयो, ओ कोई अवतारीह ।। १५०

निसांणी

आलो चूंडो ओळषै, मन हरष न मावै ।
चढ़ीया आलो चूंडरज, मिलवा कज जावै ।।
मालासु चूंडो मिलै केई कोड करावै ।
मुरधर चूंडो महपती मालो फरमावै ।।
तोर बंधसी ताहरो चंडी वर पावै ।
अस तो चंडो आपसी मन चिन्ता मिटावै । १०४

दूहा

उगमसी नै आषीयो, मुषां ज लावण माल ।
चूडानै संग ले चढो, ढाबो थे हुय ढाल ।। १५१

वीरमदेरा वेठरी, घड़े जंगो मन घात ।
नाहर भेला रै नहीं, बसुधा जाहर बात ।। १५२

नीसांणी

वर ले चूंडो माल सै उगम संग आवै।
मिणधर सूताँ नींदमैं चामंड फरमावै॥
वाड़ो करवट जेवड़ा घर घोड़ा आवै।
उगमसी इंदोतनैं पोती परणावै।
मंडोवरमैं दी कर महर माता फरमावै॥ १०५

सूतां उठ चूंडेसधर वाड़ा छपवाया।
उण दिन सगपण वासतै उगम फरमाया॥
चांमंडरै वरसु करै अस ओझक आया।
अस रंग वदल्यो ईसरी दूजा दरसाया॥
तद चूंडे चामंडका परचा सच पाया।
चंडी वर हुय चुंडकुं सामांन सजाया॥
उगम घास मंगावणा मुगलां फरमाया।
सज भड उगम पांचसैं संग चुंडा लाया॥
छळ कींधा वळ दाषीया धर कारण धाया।
हर वळ इदा रांण हुय गाड़ा गरणाया॥
ऐम तळेठी आवीया चूंडे मन भाया।
ऊभां सोवायत अटा निजरां गुजराया॥
सो गाडा उगम सर वगड़ भितर लाया।
चामंड चामंड मुप चवे जैकार जपाया॥
उसरा थांणा उथपे थिर थांनक थाया।
मुगला दोय हजारकुं घोरां घलवाया॥
राज मंडोवर चूंडकुं चामंड वगसाया॥ १०६

दूहा

आसुर काटे अंबका, कियो कमध सिध काज।
चांमंड दीधो चूंडनै, रिधु मंडोवर राज॥ १५३

नीसांणी

उगम चूंडे आगला रजवाट बणाई।
मुरधर लीधी महैपती धर फेर दबाई॥
कीलमां थांणा काटीया पाछी धर पाई।
राणै पोती रावनै पेषे परणाई॥
दीध मंडोवर दायजे मिल सारां भाई।
हरषस मन राजी हुये ऊगम फरमाई॥
दुगर चौरासी गांव दे थिर राजस थाई।
राव कहै सुण रांणनै कर चित न काई॥
साषी सूरज चंद है आंपां बिच आई।
रांण न बदलै राठवड जुग च्यारां तांई॥ १०७

दूहा

इदांजी म करजो अवर, पाधर मुगल पछाड़।
दीवी मंडोवर दायजे, चुंडो चंवरी चाड़॥ १५४

सेत्रावैसु आत सव, मिलण चढ़े माहाराज।
मंडोवर आया मरद, जसो गोगदेव राज॥ १५५

कायलाणैं राजस करै, धरै कनकी मन धीर।
मंडोवररो भोमीयो, वल मांगै वरवीर॥ १५६

अगला भोम्या आंपणै, मांगै की माहाराज।
वळ देवणनै वीरवर, सजीयो गोग सकाज॥ १५७

नीसांणी

रमै सिकारां गोगरज कायलांणे डूंगर।
उठीयो दैतज कालीयो एही गल उच्चर॥
दुथणी जायो को नही मंसु जोड़ै कर।
कर पकड़ै पाड्यो कमद भेळो कीनो घर॥

अबकै छोड़ै गोग रज मेळुं जाळ घर ।
बह नह मांगूं फेर वळ ऐ सच्चा आषर ।।
वीर मिलायो गोगरज निजनाथ जलंधर ।।
महर हुई सीर कर मया सिषराळ तणी धर ।
वप गोगै वळ वादीयो उणवेर उबंबर ।।
रीजै सम पीरळ तळी सिधराव जोगेसर ।
पीठ फुरे नह ताहरी जपीयो जाळंधर ।। १०८

दूहा

व्याव थपे जद धीररो, दलजी करै उछाह ।
एक धमळ गध एकरी, तो साषा नै चाह ।। १५८

नीसांणी

बळ हाली कळ जाटसु वे नीत वधारी ।
जट कह वायक जोररा नह बात विचारी ।।
घघले घमळा जाटदा तद कीध तयारी ।
जांन चढंतां जोड्यां कर उछब भारी ।।
सुगन पलाऊ हुय सबै वळ वात विचारी ।
उठ दलो घर आवीयो हुवे होवणहारी ।।
उदल धीरै जांन संग पुगळ पाधारी ।। १०६

ओ जाट धीरीयो वीरदेजीरो छो सो सींहाणमै परणोयो छो । पछै सिरदार तो मारीज गेया नै ओ उठै ही वस रेयो । धीररी जांनमै इणरा उंठ १, बळद १, विनां दीनां जवरीसु ले लीना । जद जाट मंडोर सेत्रावे जाय नै राठोडांनै हेरो दियो ।

जाट कटावण थाट सब सुध मारग धायो ।
मुरधर षट पोहरां मधे ओ हेरो आयो ।।
चवै मिलंतां चूंडनै सब भेद सुणायो ।
दलो अकेलो घर रयो हूं देषर आयो ।।
षाग संभावो ठाकरां लो वैर सवायो ।। ११०

दूहा

चूंडो हेरु सुचवै, पाछौ वचन प्रीयोग ।
हुं मांमो मारु नही, तु संग लेजा गोग ॥ १५९

धर चित जा तु धीरीयां, गोगे कने चलाय ।
वाटां जोवै वीरवर, करसी जेज न काय ॥ १६०

धीरप दे मिल धीरसु, समपे विडंग सधीर ।
सुगन लेर चढीयो सरस, वेर लेवण वरवीर ॥ १६१

नीसांणी

तद्द सींचांणी त्यार कर साषत सजवाया ।
सज भड़ गोगै पांचसै चढ षुर चलाया ॥
गड गड त्रबंक गाजीया असमान गिराया ।
अस षडीया उबां बरै रज गैण ढकाया ॥
बैडा उजड वाटतै गिर झंगर छाया ।
जेण समे मिळ जोगणी वळ डाक बजाया ॥
भाला आभ ठहकीया सिर ग्रीधां छाया ।
उरस तणै मग उत्तरे इम गोगा आया ॥
काळा करहृग्र कर भर नीर चलाया ।
सीहो सुगन न संभवै करसां मन चाया ॥
सुतां फोही सबद सुण दलजी उठ आया ।
सुगन भयानक समजकै मन थाह न थाया ॥
उठे षान अचीतका सीहरा जब लाया ।
अरदल दीसै आवता अत रोस अघाया ॥
अब गळ सीहो उचरै है नीर पराया ॥ १११

अळगासु अस षेड़ीया अर सीस असंगै ।
उठ बेदला ज़ोईया सूतो कन ज़गे ॥
ऊभा गोगा राठवड पित वैर ज मंगै ॥ ११२

दूहा

निस आधी षल नेमीयो, वाजी हाक विकट ।
रोस न मावै रावतां, घण सिर फुटै घट ॥ १६२

पांणां किरमर पकडे, रिदे जालंधर रट ।
रिण तती वारल तळी, लेवण वीजळ वट ॥ १६३

गोगै वीरम वैर कज, पुंरा ही बल हट ।
ओध विगाडो वरत कट, ईसां पिलंग घरट ॥ १६४

दुभल धन तो पित दलो, नव गढपत नरेस ।
उण अंगे तूं उपनी, देउ धिम उदेस ॥ १६५

नीसांणी

देउ सषीयां साथ ले सज बारै आया ।
वधावे गोगे कमध गीतां गवराया ॥
वैर पितारो वालीयो भल कीधी भाया ।
तिलक कीयो इण कारणै लैसुं मन चाया ॥ ११३

कहीयो जद गोगे कमध मांगो मुष बाई ।
सिर दु मारो काट कर विच थाल धराई ॥
ओ सिर धड रहजो अषी आसीस दराई ।
हैसु पमंग पड़ाहीयो माने दे भाई ॥
षवरां मेलु धीरपै पुगल पोहोचाई ।
पूंगां धड सिर वांटजो भिड वेंनु भाई ॥ ११४

दूहा

देऊ दलारी डीकरी, वेठां हुत सवाय ।
तिलक करे गोगा तणे, हैसु लियो वचाय ॥ १६६

नीसांणी

हैसु रोवण हक नही संज होय सधीरा ।
तुं जाया दल राजदा नांषै चष नीरा ॥
पमंग चढ़ै पड़ाहीये पुगल जा वीरा ।
गोगा कुसल न जावसी धट ऊभा धीरा ॥ ११५

दूहा

कर पुररो लगांम दे, पिठ ज मंडे पलांण ।
पुगल जाइये पड़ाईया, एकण पोहर उडांण ॥ १६७

गोगै दलो मारीयो, जीतो मुरधर जाय ।
धाजे बाहर धीर दे, कीजै जेज न काय ॥ १६८

राग मिटांणा रंगरली, सुणे अचींती आंह ।
विध कह हैसुं वेढरी, दाषै धीर दुबाह ॥ १६९

काहळीयो केहरकळी, कटकां उकट काट ।
धीर चढ़ै अर धूंसवा, वीडे गांउ जड़ वाट ॥ १७०

नीसांणी

काह कटकां आह सुण सजीयां भड़ सारा ।
धीर चढ़ै अरि धूंसबा लग गोगा लारा ॥
उडे रज असमानमैं इळ होय अंधारा ।
सेल चमंके बिच अणी निस काली तारा ॥
बेढंगी षडीया बीड़ंग पंथ आर न पारा ॥ ११६

हेक मना हुय हालीया सज सेना सारी ।
असी कोस अफाळीया क्या लगै कारी ॥
वणीया दुलहा वाहरु बप वेर विचारी ।
एक मिले अण चिंतको रिण मांझ रेबारी ॥

गोग लछु सिर उतरै मुझ बकरा मारी ।
धीर सुणै अरि धुधड़ै लंग सघड़ लारी ॥ ११७

जलम्या पेट जवादरै अस दोय आपांणी ।
चढ़ीया उदल धीर दे धरती धुजांणी ॥
हीराळो न पड़ाहीयो जंगम जग जाणी ।
ऊजो आयो धीर दे कर तेग उबांणी ॥ ११८

आय लछुसर उतरा गहमें भरीयोड़ा ।
उरस तणै मग उतरै दल वादल दोड़ा ॥
दूर अचाणक देषीया चंचळ चर तोड़ा ।
अस पकड़े कर आपरा रिण बजे रोड़ा ॥
भुषा तिरसा आपरा वांधीजे सोड़ा ।
ढलीया हात न आवसी गोगादे घोड़ा ॥ ११९

अस सह हांतां उतरे थहीया दळ पाळा ।
काळ ज्यूं ही करवा कलह उठे अळसाळा ॥
भूषा सिंह जिम भूटकै रोसै लरढाळा ।
कंपै छाती कायरां धुब झाळो झाळा ॥
सुरा सिंधण थेह ज्यूं धुबिया पंषाळा ॥ १२०

सांवत तेग संभायके सज सायर साया ।
लड़तां कांनो धीर ले तद होय तिसाया ॥
कुड़ा रांण कसुंस कर जादम जल पाया ।
अभंग लुणाणी उठिया बल दाष सवाया ॥ १२१

दूहा

पांणी पीधां जोइयां, पोह धर मुछां पांण ।
दिस गोगारे मलफीया, डाकी भरता डांण ॥ १७१

नीसांणी

रजवट जोइया राठवड़ जुटा षळ जके ।
सेल भचड़का यु सहै किरमाळ कड़के ॥
जरदाळा अर जोसमै कैमर खरळकै ।
धड़ पड़िया सिर धांफरै मुष मारस बकै ॥
तेग धड़ां भड़ बिछड़े पड़ लोथ दड़कै ।
भंड़ घमसांण प्रमांण भल जमरांण जऊकै ॥
अषाड़ै असमांनमै रथ भाण ठहकै ।
एसा गोगा धीर दे आंण चढ़ीया चकै ॥
गुणीयण ऊभा बादमै वोहळा जस बकै ।
बरवा हुरां अछरां बेहुं हकबकै ॥
दोनुं ओड़ां षेग दे लोही धकधकै ।
जांणक भरीय पषालदा मुष षोल्या सिकै ॥
धरती पड़ीया धीरदे वायक मुष बकै ।
जांण न पावै जीवता नर गोगा जकै ॥ १२२

धीर पोहडे षेत विच सिर बिछडे धड़ ।
उदल हेसु आहड़ै बड जोस बड़ बड़ ॥
कंवर भिड़वा कारणै असमान भुजा अड़ ।
जोध वेहु रिण जुटीया षळ षाग षड़ा षड़ ॥
पड़ीया अस भड़ पाषती रिणसु कैम छड़ ।
काळ तणी गत कोपिया भिड़ीयाळ महा भड़ ॥
पंषणीयां भष पूरीया रिण रैणा रतड़ ।
चड़ै विमांणां चालीया लंकाळ बेहुं लड़ ॥
उदल हैसु धीर दे रिण षेत विचा पड़ । १२३

चड़ वड़ धानंष चाढीया गुण किध भणंका ।
तीर छछोहा छुटगा नह सु जतनंका ॥

केता बगतर तन कटा जुझा भड़ बंका ।
जोइया कमध्वज जुटीया अध जीत असंका ।।
झिलमां वीजळ वाड झड़ षग बाज षणंका ।
ऐसा गोगा धीरदे भिड़ीया भड़ वंका ।। १२४

गोग वहटा षेत विच रजवाट उजाळी ।
आयो जादम एतलै भूपत षग भाळी ।।
सगा रुक समाप दै कर रीझ वडाळी ।
रांणक वळतां गोगरज समसेर संभाळी ।।
वैग वुही कर वीजळा जंगा दोय डाळी ।
कहीयो गोगै हास कर दे सगा ताळी ।। १२५

घण तोड़ण जोइयां घड़ा जिते कर समर ।
कठीये पग गोगे कियो निज साद नरेसुर ।।
दरसण सिध आपै दियो माथै कर मैहर ।
पाव उलटा सांधीया ओलषाण तणीयर ।।
इळ अंबर गोगादतै तो काया अमर ।
हुय सिध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ।। १२६

गीत चितइलोळ

ऐ वीरळ तळी आरांण उनी षळां तंडळ षाय ।
बीजला ज्युं वहै वाढ़ै घड़ा एकण घाय ।।
तो घण घाय जी घण धाय धापी रळ तळी घण घाय । १

वैर वीरम तणै वाही निसंष जोध ।
नीडा रहात गोगादेव हुंता धपाई इत धार ।।
रत धार जी रतधार धापी रळ तळी रत धार । २

कटे उदल दलो कटियो धीर हैसु वैर वैर ।
वीरम तणो वाले बालजे इम वैर ।।
इम वैर जी इम वैर गोगे वालीयो इम वैर । ३
कट धर रहै सुता सला कर उभै बटका इस ।
छुटती घर जाय छुटी कीसे सवालै सिस ।।
धर सीस जी धर सीस जाती वाजवी धर सीस । ४
वीजड गमीयै अरांवाळ जोड़यां जड़मूल ।
वाप कज़ वैरीया वेटो घडच भेला धूल ।
ए धूल जी ये धूलजी अरीया काटीया काटिया ऐ धूल । ५
भाज रांणक देव भाटी सवलडो अर साथ ।
कमंध गोगो अमर कीधो नमो जलंधर नाथ ।।
नवनाथजी नवनाथ नाथां ऊपरां नवनाथ । ६

दूहा

सात वीस नीसांणीया, ऊपर पांच सवाय ।
एक गीत इतरा दूहा, भणीया गुण सुभ भाय ।। १७२

नवगुण पूणा तीन सै, वीरवांण जसवार ।
सुध वाचीजो सकवीयां, वाधर कही विचार ।। १७३

सवासे नीसाणीयां, दुहा पुण सत दोय ।
गीत एक इण ग्रंथमै, समजहु वाचक सोय ।। १७४

इण पोथीमे वीरमांण ग्रन्थरा दुहा पुणी दोयसे है । गीत एक चित-इळोल छै और नीसांणीया एकसो पचीस तो आंकां में छै और एक नीसांणीरो भूलसुं आंक नहीं दरीजीयो[1] । और वादररै कैणैमै नीसांणीयां एक सौ पैंतालीस छै । सो उगणीस नीसाणीयां मिली नहीं । जैतमालजी मारीजीया जको समो इणमै नहीं छै । दुरजणसालजी डाभी और दलेरा धायभाई मारीजीया जका वारता नहीं । इण मुदैरी नीसांणीया मिलै नहीं । इसो जुध आकारीठ महाभारत

1 नीसाणी छंद-संख्या ११७ देकर आगे की छंद संख्याओं में सुधार कर दिया गया है ।
—संपादिका

माल सलपांणी, वीरम सलपांणी, जगमाल मालांणी, मावोसिंघ सोलंपी, वा घड़सी भाटी, वा मदु, जसु, जेतल, देपाल, ए च्यारूं भाई लुणियांणी । जोया तथा गोगो वीरमांणी राठोड़ धीर मधु वाणी उदल हेंसुदलाणी । जोधाऐ अथवा इयांरा भाई रजपूत आदमी हीज करैं । सुणीयांसुँ सूरमांरी भुजा असमान अड़ैं । कायरांरा हीयां पड़ैं । दीठां तो सापरत वांवन वीर चोसठ जोगणी ताळी दे हंस हंस पड़ै । सांपरत हूर अफछरां रथ पाथा पड़ैं । दलै जोयेंरो भरथांमापणो भेळप अवसांणीरी जाणतो केणहारो कठा तक कैवै । वे इदै उगमसींरो दायजो ही लाप सावासी लेवै ।

इति

परिशिष्ट १

आढा पाड़षांनजीरो कीयोड़ो

रूपग गोगादेजीरो

॥ श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वतीजी नमः

अथ रूपग गोगादेजीरो

आढा पाड़षानजीरो कीयोड़ो लिषंते ।

गाथा चोसर

अत मत कायब सुबल ऊकत्ती, सुप्रसन हुय दीजै सुरसत्ती ।
पोह राठोड़ अचल छत्रपत्ती, कहूं इम गोगो कीरत्ती ॥ १

इल अजरांमर वात उबारण, चाय छाडां तीडा जल चाढण ।
वैर वैराह पितारो बालण, दाषूं इम गोगादे डारण ॥ २

दूहा

सुत छाडो सलषो सकज, धुहड़ जगत साधार ।
घण जाणग सलषा घरे, वीरमदे वडवार ॥ ३

छंद मोतीदाम

वडवार उदार संसार वषांण, जोधार जुझार दातार सुजांण ।
दलां थंभ वीरम तेज दराज, साजै दिन राजै ऐ सूर समाज ॥

भड़ां दरगाह हलोहल, भाल, तबैलै ऐ बाज वड़ा तेजाल ।
सत्रां जड़ काढण सूर सधीर, नरेसुर चाढण बै पष नीर ।।
सधूवड़ वीरमदे सुभियांण, तणो सलषेस तपै तुड़ तांण ।
गाहे धर हैमर षेड़ गिरंद, नड़े भड़ अन्नड़ षाग नरींद ।।
दीयै लष सांसण कुंजर दान, सुषत्रिय चित सो ईन्द्र समान ।
करै थह बैठोय सूर सकाज, गोढो गुर सिंह ज्युही अग्राज ।।
षेडे चांऐ वंस उपावण षार, जोइयाऐ आयाय भीच जैवार ।
दलै धर गूजर लोड़ दुंगांम, महैवैय कीधोय आंण मुकांम ।।
दगो कर छोडेय साह इबार, चोरे लष कोड़ जमोर चियार ।
अमोलष ऊजल गात असाध, सालोतर घोड़ीऐ एक समाध ।।
इती मैहमंद तणी लेय आथ, रोदां सिर नीसरियो अधरात ।
प्रथीपत सांभल तांम पुकार, मनंछिय तेड़व राज मंझार ।।
दिसा जगमाल षत्री दइवांण, मंडे मिसलत लिषे फरमांण ।
वेगावैग मेलिय दोय वजीर, वेगड़ै ह कोप कियो नरवीर ।।
दलारोय मेलैह सीस दुझाल, जांणू जद मूझ हितू जगमाल ।
सुणै गल हाल जगा सुभियांण, जोइलारै डेरैय जोध जवांण ।।
विचत्रियै आदर दाष नमेष, आपे दोय तेग अने अस एक ।
इषै अस सुद्रब तेग अपाल, मालावत लोभ धरे जगमाल ।।
वड़ा परधांनांय बूजिय वात, घड़ी देयपाल दला सिर घात ।
प्रमेसुर अंक तणै परमांण, मंडे धर छाड़ांय वेध मंडांण ।।
वेसासैय दाषैय कोल वचन्न, मारु राव ध्रोह धरै विच मन्न ।
जगै द्रब लोड़ण जैत जियार, ताता षग बावाय कीध तयार ।।
आई नह आव तणै उपगार, जोंइयांय लाधोय चूक जैवार ।
इषै मन सोच अरोड़ अपार, हुवो लषवेरो ए कोस हजार ।।
आई तोय गत अलष अदेस, दोषी नजदीक दुरंतर देस ।
पुणै इम षान सवै परवार, हमैय कुण आंहै रषणहार ।।

विच त्रिय दाषै सोच वरांम, तठै इक रावत बोलियो ताम ।
उबारण रंकांए चित उदार, वसै ओय वीरम जूह विडार ॥

मारु सलषावत भायांय मोड़, ठावो ओय बैठोय ठाविय ठोड़ ।
रिमां पड़गोह षत्री रठ रांण, तपै भड़ वीरम ऊंचीय तांण ॥

उठै थां मेलुय जेथ अपाल, जठै नह गंज सकै जगमाल ।
विचत्रियसांभल वैण विचार, त्यारी करजीण षड़े तोवषार ॥

जोइयांय कूच किलो विण जांण, उतारोय कीध दरगह आंण ।
दलो मिल वीरम हूंत दुआह, आपे कर जोड़ समाध अथाह ॥

हुवो जद धूहड़ जूह विडार, धजाय बंध सरणायां साधार ।
पुणै इम वीरमदेव पुंचाल, अठै थां षांन करै कुण आल ॥

जिते मो सीस षवां पर जांण, इतै कुंण गंज सकै तो आंण ।
प्रथीपत तेड़ वडा परधांन, सोलंषिय मोधोय पाथ समांन ॥

दुसासण डाभी दुरजणसाल, कांनां जगमाल सुणी किरणाल ।
धुंणे षग धूहड़ लाग धीलाग, उड़ै पड़ जांण षंडी वन आग ॥

त्रह त्रह वाहर वाज त्रमाल, पमंगां ए पीठ मंडे पषराल ।
ओपे सिव जेहा ए गात अथाह, सूरा भड़ भीड़ैय टोप सनाह ॥

भुजा डंड सावल तोलेये भूप, रकेबांय पाव दिया जम रूप ।
दला कर आरंभ भीच दुभाल, मालावतसाल लियो जगमाल ॥

षेड़ेचों ए छात षड़े कर षीज, भिड़ेवाय काकाय हूंत भतीज ।
मिले पंथ सालल बैंग मरद्द, गमागम उंमट घोर गरद्द ॥

निहंसेय राग सिधू नीयसांण, वलोवल छायाय रंभ विवांण ।
पुगा अस षेड़ेय भिच वेभीत, जंगांथह वीरमरी जग जीत ॥ ४

दूहो वड़ो

कोपे कबर करूर, जलामल मेल जगो ।
आयो वीरम ऊपरै, जोइयां वेध जरूर ॥ ५

पोह मेले परधांन, काकैसु दाषै कतन ।
दो काढे बारै दलो, साहो जुध सांमांन ॥ ६

वीरमदे जिण वार, परधांनां हूंता पुणै ।
दूं माथो नह दूं दलों, साहौ जावो सार ॥ ७

सलषा तणो सवाल, कमंधां गुर वीरम कहै ।
जोड़े षग थारे जोडै, जुड़ी ज्यूं जगमाल ॥ ८

काको जैत सकाज, तैं आगल सजियो तई ।
मालावत भूले मती, जिण भोले जगराज ॥ ९

काकै तणो कंठीर, सबल भतीजेसू सुबद ।
हुवे मोहर हलकारिया, सकज भिड़ै सधीर ॥ १०

त्रहके तूरत्रमाट, गीधण जोगण गहगहे ।
काको भात्रीजो कलह, मिलिया लोह मुराट ॥ ११

छंद मोतीदाम

मिले जुध बेहुंये लोह मुराठ, प्रथीपत बेहुंये ओपम पाठ ।
कमंधज बेहुंय जोम कंठीर, वीरारस सालिलया नर वीर ॥

जुड़े माय माहिय माह जोधार, अड़ीलय विहुंये चित्त उदार ।
अड़ीलाय बेंहुंय लाग ध्रियाग, रुड़ै दल दोउव सींधव राग ॥

वैहु भड़ कंदल मांड दुगांम, मिटे सनमन्न सगप्पण मांम ।
जरु अषड़ैत वैहु जगजीत, सिंधां हिंदवांण बेहुसु प्रवीत ॥

षेड़े चोंयठात वैहु चित षोध, जुड़े रठ रांवण बेहुंय जोध ।
बेहु जरदैत बेहु वीरदैत, बीठे धन वेध वैहु बषलेत ॥

घटैं रोवसैल बैहु घर थंभ, षेड़ेचाए षार बंधा गज षंभ ।
वहै वेयधार उराबांयवार, धजां सिर ग्रीध सरां ध्रुवकार ॥

सजै रुडमाल सिभू सिरताज, विचैदल सूर हीलोलैह बाज ।
तई झड़ झूल सत्रां तरवार, भड़ां घड़ डाडर घाव वंभार ॥
लड़ै रस लीधांय ग्रीध लंकाल, कमंधज काहलिया किरणाल. ।
बरघल घाव थड़ां गज बांह, छुटै गुण धानंष तीर छछांह ॥
करां षग पोगर धू'ण करुर, पटाझर आहड़िया मद पूर ।
हुवै जुध सूर भतीजोये हद्द, मुड़ै नह काकोय हेक मरद्द ॥
घड़ा मच धोम छके रिण धांम, जुझाउऐ वाज नंगारऐ जाम ।
तड़फ्फड़ हीजर साकुर तुंड, रड़व्वड़ कुंड गड़ा जिम रुंड ॥
हड़व्वड़ जोगण षेतल होय, सड़व्वड़ कायर पंथ सजोय ।
तड़व्वड़ सायक आत्र सताड़, बल बल कालां जांयाव बंबाल. ॥
चड़वड़ जोगणि रुद्र जोचोस, जुड़े भड़ धूहड़ बाधेस जोस ।
भिड़े असताईऐ लोह भिड़ाल, गीलै रस ग्रीधण गुंद गीडाल. ॥
पाछा जगमाल धरै नह पाव, दीयै नह वीरम हींणोय दाव ।
नरां भायत्रीज मुड़ै वायनेम, काको जुध भाजैऐ दाषुंय केम ॥
तड़ोबड़ तोल षत्री तप तेज, मिलै सिरदार दोउं मुंह मेज ।
इतै बिच वालाऐ सूर अपाल, मीणंधर आयोय रावल. माल ॥
सपेषैय वातां वागाएसाय, जुदा दल बेहुंए कीधाय जाय ।
पुतारेय वालीए राड़ प्रवीत, जगानैय कुंजर ज्यूं जगजीत ॥
राठोड़ांऐ स्याम चड़ैय कुरंग, उभा सलषावत माल अभंग ।
संपेषेय साव वले सिरदार, धरो जोवधार करो षग धार ॥ १२

दुहा

दाढे माल दुझाल, राड़ वीरमनै राषी ।
उठी बात उबांबरे, मेटी नह जगमाल ॥ १३

ते वाजे रिण ताल, धड़ पड़ ग्रीधणियाँ धपे ।
बहिंदुइ उबां हां बरा, बाहड़िया बाहाल ॥ १४

अण भंग कर आरांण, कारज अणचींता कवर ।
जंगम चड़ पुगो जगो, तलवाडै तुड़तांण ॥ १५

आयो थह उजवाल, कंवरां गुर मिसलत करी ।
जद लिषियो कागद जगै, वीरम दिस वेधाल ॥ १६

सज ओ न्याव संसार, वीरमदे सांभल वचन ।
पड़ै न एकण पड़दली, तोषीं होय तरवार ॥ १७

ओ ओषांणो याद, जाणै छै सारी जगत ।
नविणै दाव निदांनरै, वीरम वासर वाद ॥ १८

कागद सुणे सकाज, दाषे वीरमदे दुझल ।
पण पाणी न पीणरो, मालारी धर मांझ ॥ १९

साझे भड़ां सधीर, धर जूनी हूँता धमल ।
नर चढियो षाटण नवी, वीरमदे नर वीर ॥ २०

डारघ षड़े दराज, सलषावत जोयां सहत ।
मारु थंभा मांडिया, सेत्रावे सिरताज ॥ २१

दल. बल. हल. दइवांण, केकांणां हूकल. कल.ल. ।
राजै वीरम राठवड़, इन्द्र तणै अहनांण ॥ २२

वीरम सेत्रा वास, सीमाड़ां मेल्है सरद ।
सुत सुपसां जांयां सहत, मारु रहे छ मास ॥ २३

उण समीयै उदार, कर जोडै लागो कदम ।
डारण भड मांगी दलै, जोइयां सीष जैवार ॥ २४

कर मिसलत किरणाल, सेत्रावै राषै सथर ।
देवराज जैसिंघदे, उदभै कवर उजवाल ॥ २५

वीरमदे तिण वार, कहिया निरभावण कथन ।
पीहचावण चढियो पहव, जोइयां जैत जुहार ।। २६

सलषावत सुंप्रषाल, सुत सुपहां मेलां सहत ।
हिंदू देषण हालीयो, लषवेरै लंकाल ।। २७

उडै रज असमांण, आध्रो फर छायो अरक ।
षड़िया अस वीरम षत्री, दिस उतर दइ वांण ।। २८

पंथ वहतां प्रवीत, कुंडल वीरमदे कमध ।
.................., परणीया चंदण पहव ।। २९

...................., ... ।
निजगोगादे नेमियो, वरदाइ जिणवार ।। ३०*

कुंडल सूं कुल भाण, पंथ आतुर षड़ै पमंग ।
पष एकण आयो पहव, जोइसां उतन जावांण ।। ३१

उछ रंग राग अपार, आंणै घर घर आरती ।
कमध जोइयांरै कुटम, वाधावै जिण वार ।। ३२

दलो अनै देपाल, भाषै इम सिषर भषर ।
आ वीरम थारी इला, सलषावत सु प्रषाल ।। ३३

उण दिनरो उपगार, देषै अनै दाषै दलो ।
धर लषवेरै तु धणी वीरमदे वडवार ।। ३४

रिमां देयण षगरेस, सूरा भड लीयां सकज ।
वीरम तलडांणां वहै, दूसर ज्यु परदेस ।। ३५

आहेड़े उजवाल, सलषावत रमतां सकज ।
जद गोगादे जनमियो, सुण वीरमसु प्रषाल ।। ३६

* नं० २९ और ३० दूहे मूल पुस्तक में चरण अस्तव्यस्त होने से नहीं बनते ।

घुरै नंगारां घाव, हुय उछब घर घर हरष ।
कुल दीपक जनमे कवर, गालण अदवा ग्रांव ॥ ३७

ऊच नषत उजवाल, वैर सनाहां वालवा ।
जद गोगादे जनमियो, कुल जोइयां बैगाल ॥ ३८

संकै नहीं संधीर, दिन उगै पसरा दियै ।
वेढी गारो राठबड, वहै अरोडां वीर ॥ ३९

जोइयां हूंत जैवाण, वीरमदे वीजै वरस ।
मारु षेटा मांडिया, पोह अंक वेह प्रमांण ॥ ४०

सक भड चढे सिकार, सभ्भै छलासंबुर सुवर ।
कमधज पीरांरी कबर, ध्रम बैरु दूधार ॥ ४१

तागा करै तिवार, हीक धीक लेता हीयो ।
आया फिरियादू असुर, दला तणै दरबार ॥ ४२

सक षग षान संभाय, मकै हाल छोडा मुलक ।
वीरम सूर वीहंडिया, मैहजीतांरै माय ॥ ४३

सूण फरियाद सकाज, उससिया जोइया अवर ।
डारण चेह न दाषियो, दलियै जोम दराज ॥ ४४

दूजै दिन दइवांण, दला पुत्रिचो वरदयो ।
लषवेरै वीरम लियो, डारण आधो डांण ॥ ४५

सारो कुटम स धीर, दाषै तो लाणत दला ।
सकुज वाही साहियो, वले अग्राजै वीर ॥ ४६

दलो चवै दइवाण, साच वाच भायां सुणो ।
वीरम सूं चूकूं वचन, भो यण उगै न भांण ॥ ४७

जग तप तेज जुहार, तलवाड़ै तूटो तरां ।
उण दिन वीरम उबारिया, वंस जोयां जिण वार ॥ ४८

षिम्या करै जिम षान, बीरम तिम अंवलो वहै ।
जुड़सीं षेत जवांन मै, मांझी दिन दोय च्यार ॥ ४९

छंद जात बे अषरी

दलै षिमंती जिम जिम अत दाबै, राव कमध जिम जिम अंत राषै ।
परजा भाड़ गनेंर पजावै, ऊगै दिन फरियादां आवै ॥
अरि घर गंजै षाग उवांणी, समहर रो भूषो सलषांणी ।
लाष भिच तिल मातर लागै, एकण जोर आपरा आगै ॥
पर घर सत्रु दुछर जिम पालै, हींदू आपस देणो हालै ।
धूहड़ - एक समै छत्रधारी, आहेड़े चढ़ियो अवतारी ॥
सज पीरां दरगाह सवायो, इक फरहास निजर तद आयो ।
आप रहंण रिंण बात उबारण, उदर ऊपनी बात अकारण ॥
काट फरहास ढोल करीजै, सोल कोसां सबद सुणीजै ।
पूछै तांम भड़ां पूचालां, डारण आप जिसां दूठालां ॥
कैहै सुपह फरहास कटावो, घणी सगोढो ढोल घड़ावो ।
षित ऐ वचन सुणै अत षारा, पांण जोड़ बोले पूजारा ॥
है फरवास षुदाय हमारे, थांन रांम जिम धूहड़ थारे ।
सुणै वचन धिक वीर सिघाल, जांणक जेठ साललो ज्वाल ॥
बाढ फरास वीर वरदाई, आप तणै सिरयात उपाई ।
जड़ षिण ठाहैं वृछ जग जाहर, मारियो एक वल मुंजावर ॥
तेथी नफर करै केइ तागा, भय पड़ केइ जीव ले भागा ।
करता कूक रुदर तन कायां, दलै तणीं दरगां दरसाया ॥
सारां षारा वचन सुणाया, वीरमदे फरहास वडाया ।
सज देपाल कहै षग साहै, महजो दला जोइया माहै ॥५०

दूहा

करता कूक कुराल, आया फरियादू असुर ।
वीर फरास बडाविया, सुणजो दला सिघाल ॥ ५१

जोइयां मिले जै वार, कथन दला हूंतां कहै ।
वेड़ीगारो राठवड़, मारैं सै काय मार ॥ ५२

मुड़ियां हीं नह मोस, मोस न वीरम मारियां ।
काम दलो कह मै कियां, दोजै किण नै दोस ॥ ५३

वै परधांन बुलाय, दिस वीरम दाषै दलो ।
अमां रीस न उपजै, षित अंत वैर षुदाय ॥ ५४

नाकी छिले निराट, दाषै कुल नायक दलो ।
नर तो नेंइ नियापरी, वीरम सू जीवाट ॥ ५५

दलै कथन मुख दीन, कमधज हात कहाड़िया ।
आप वंट चोथां अमां, तूं लै वाटा तीन ॥ ५६

जोइयां रुप जिंवार, दाषै कुल नायक दलो ।
वीरम तांसूं वाजियां, है जीतां ही हार ॥ ५७

वीरम सूं तिण वार, कहिया परधांनां कथन ।
आधी वांटे लेइ इल, नर वकवाद निवार ॥ ५८

सूरो कथन सुणेह, काहलियो केहर कली ।
आयर जांण अग्राजियो, मयंद तणो सिर मेह ॥ ५९

मन धारे अभमांण, आपे सांमो ओलभा ।
दीसै तूं भूलो दला, उण दिन रो अवसांण ॥ ६०

जगपत जोम जिहाज, कुल जोइयां कतलत करत ।
देषत नह मेलत दला, ए विसटाला आज ॥ ६१

ऐ तोले औराक, बोलण घड़ उवाबरो।
मेल वचन नह मानियो, वीरमदे वैडाक ॥ ६२

पाछा आय प्रधान, कथन दला हूंतां कहै।
मरसी का तोय मारसी, जालण हरो जवान ॥ ६३

कर झाले केवांण, नर वीरम सहजे नहीं।
देषे नह जुड़सी दला, इण भव श्रो श्रवसांण ॥ ६४

कीधा षून अनेक, ध्रूहड़ लषवेरै धणी।
डारण मड़ षिमिया दलै, अन नर षिमे न एक ॥ ६५

कवित छपै

पोह जिह हीज प्रभात, पहल सिकार पधारे।
हड़वड़ भड़ हैवरां, निंहस वाजते नंगारै ॥

डारण वीरम देहु, दुरंग वहतां तद दीठे।
पेष सुरग पिंजरो, उरहि परजलै अंगीठो ॥

षड़ आतुर तोषार, प्रगट नजदीक पधारे।
गढपत कुण इण गांम, चितहि राठोड़ उचारे ॥

पूछ नकीब प्रसीध, स्यांम सूं अरज सुणाई।
दला तणो दइवांण, वसै धावड़ वरदाई ॥

तण सलषेस तिवार, ध्रोह वीरम मम धारे।
वसुधा राखण वात, वे हद बोलियो वकारै ॥

जयचंद हरो जयचंद जिम, हिंदू कंवर वजर हियो।
सातहूँ पुत्र धावड़ हणे, कमधज किलो कायम कियो ॥ ६६

दूहा

वीरम षाग वजाय, कल चाले लोधो किलो।
दोड़ी भाड़ंगनेर दिस, ध्राहां देती धाय॥ ६७

ओइ नीयाव अघात, सोह भाई भड़ सांभलो।
वीरम षाग विहंडिया, सक धावड़ सुत सात॥ ६८

कूकी तणो कथन्न, दांणव सुणी देपालदे।
जोइयो पण लीधो जरू, इण भव षाणो अन्न॥ ६९

हिंद देषे हेत, पांच दिनां मै पामणा।
सक धावड़ पंच साजिया, षल कीया रिण षेत॥ ७०

दुजड़ां हत देपाल, दाषै बल देपाल दे।
दीसै तूं जायो दला, कुल जोयां षैगाल॥ ७१

सीस न वाधै सूत, वाध दला तें वींटियो।
अबही रीस न उपजै, कायर फोट कपूत॥ ७२

बोल कोल अरु बाप, दोय न ऐ देपाल दे।
जावां मै वेगा जुड़ां, वै वीरम वै आप॥ ७३

सूरै कथन सुणेह, दलै तणा देपाल दे।
अंबर छिबंतो ऊठियो, केहर ज्यूं कणणेह॥ ७४

पमंगां हुवा पिलांण, हूंकल दल तह मह हुऐ।
अंग भिड़े उवांबरो, जरदां कड़ी जैवांण॥ ७५

रुड़ै दमांमा राग, हूर अपछर मन हरषिया।
जंग मैं चड़िया जोइया, धरे सीस धीयाग॥ ७६

छंद मोतीदास

धरे जद रावत सीस भ्रियाग, विढे काहि ढोल वथोड़े वाग ।
षिमै फ़ल साबल ऊपड़ षेह, छछोहांए पार लहै कुण छेह ।।

अड़ीसल वीरम हतहां आज, सव्याजाए लेसिय षून सकाज ।
धुड़बय षेहांय काठ भ्रियाग, नागां अस ध्रूज रसातल नाग ।।

विढबाय हाल दलो धरवंद, उलंटांय जांण असाढ़ूय इंद ।
नरां मुष वाधेय सूरांयनूर, हले दल साथेय जोगण हूर ।।

उमंगेय सांभल राड़ अगांम, तमासोये देषेत नारद तांम ।
आया चढ सांड उमांपत ईस, सजे वाय माल सूरां भड़ सीस ।।

उडे रज डंमर व्योम अथाह, मिले निस जाणक भादव माह ।
दलै कर वीरम हूंताय दाय, उगंतां सुर वितलीयोय आय ।।

धुवे पड़ रोस अरराका धाक, हुवोहुब होय चहूं बल हाक ।
ढमंकैय वाहर बाहर ढोल, षैंगां जड़ जीण दुवागाय षोल ।।

कोपे अड़ अंबर जोस करूर, सुणा वित लीधाय वीरम सूर ।
सजे वट सूथण जांमियसार, जड़े छकड़ाल कड़ी जोय धार ।।

ओपे सिर गूघर टोप अथाह, विणै दस–तांनांय हाथ जवाह ।
जोइयांय साजण जैत जुहार, सुरा भड़ भीड़ छतीसुंयसार ।।

दुवाहांय भीचक तेड़ दुभल्ल, अमरोगेय गालेय नेस अमल्ल ।
अमलांय वाधेय जोस उगम्म, हुवो भड़ सारांये जीण हुकम्म ।।

अमोलख उजल गात असाध, सजे हव साषत वैग समाध ।
अलवल्ल लेतिय झंप अपार, तांणे तंग हाजर कीध तयार ।।

चढंतांय वीरम देवड चित, पला गुह आप रांणी सुप्रवीत ।
तवैगल मांगलियांणिऐ त्रास, उभै कर जोड करी अरदास ।।

रचो कोई दाव षत्री रढ राण, दलै वित आज लियो दइवाण ।
किजे नह आज चढे किरणाल, सत्रां चाय चींतविय सुप्रषाल ।।

इसा थेय पून कियाय अनेक, आवे जद पूंन कियो इण एक ।
मैकुबिय आज करो महाराज, सवारैय यलीजोय वैर सकाज ॥

तवैगल रांणिल पहूंताय तांम, दलां थंभ वीरम कोप दुगांम ।
जावै वित उभांय मूझ जरूर, सनंसेय सेस न उगैय सूर ॥

गजां षल आज नदं पल ग्रास, दषै मुष हूँत अला दरवास ।
ओजो हुँय आज चुकूं अवसांण, वकै नह वेद मुषां ब्रहमांण ॥

जावै वित मूझ उभां जैय वार, धरा नह छोल दियै इदूधार ।
खला सिर आज न वाउंय षाग, जलो जल सायर लाग जलाग ॥

तइ हवता कुंये ओलोयतन्न, करै दत देवण उत्तर क्रन ।
तोड़ूं नह सिंग सत्रां तरवार, सूरां कुण साष भरै संनसार ॥

आंणूं तिल मातर जीव अंदेस, सनंसय मूझ पिता सल षेस ।
आउं नह आज नवंनांय ईस, दिवाकर उगैय पिछम दिस ॥

ढहूँ नह आज गयंदांय ढाल, महेवैय लाजैय बंदव माल ।
राषुं नह आज षत्री ध्रम रीत, सतो सत छोडेये कुंताय सीत ॥

वदोवद ध्रहड़ दाष वचन्न, मेले नह चाल राणी वड़ मन्न ।
दाषै तद वीरम कोप दपट, हमै सुण राणिय छोडोय हट ॥

उछटैय चाल छत्री उजवाल, चवै गल पंडव सूंकल चाल ।
ओपै तन साज झलाहल आव, सजो तंम आंण समाध सताव ॥

अलोवल लेतिय झंफ अडोल, मुणै चितरांम समछ्र अमोल ।
रकेबांये पाव दिया रढ रांण, हुवो असवार सिधा हिंदवांण ॥

ताली मिल षेचर भूचर तांम, अपच्छर हूर धरै आयराम ।
क्रहकेय वीर वैताल करूर, त्रहकेय राग सिंधू रिणतूर ॥
वभकैय सार धधकेय वाय, गैहकेय ग्रीध चहकैय माय ।
ठहकेय ध्रीह अमागल ठोर, अपच्छर रथ्थ हकै चहूं ओर ॥

षल.कैय षाग हल.केय षाप, उचकेए छकेय साकूर आप ।
डहकेय डायण वाय वैडाक, बहकेय रंक हुवा हक बाक ॥

चहकेय चील पंषी कल.चाल, कहकेय रंभ गलै चंप माल. ।
रैवंतांय वाजेय पोड़ रड़क्क, धरा पुड़ धूजय गोम धड़क्क ॥

वणे मनु दांमण दीह वीचाल., मिले निस भाद्रव मेघाय माल. ।
घमंकेय गूघर पाषर घोर, इल.ा विच भंग पड़ै चहूं ओर ॥

सत्रां दिस वीरमदे सुभियांण, कमंधज ढीलविया केयकाण ।
धाड़ायत बाहरवां रिण ठांण, दलां मुह मेज हुवो दइ वांण ॥

अड़े सिर व्योम सजोम अरोड़, रिमासुंय आपड़ियो रायठोड़ ।
मांडो पग धीर धरो मन माय, जोइयांय आज सको नह जाय ॥

षिमै फल. सावल. नागिय षाग, रुड़ै दल. कावल. सिंधव राग ।
चवै हक ग्रीध वीरांवांचेल., मिले. दल. दोय इणी मुहमेल. ॥

गमागम आवट रुक गरीठ, रिमां पड़ साबल. सेलांय रीठ ।
सत्रां दिस वीरम वाहेय सार, आजुणोय काल. तणो उणियार ॥

धको कोइ साज सकै नहीं धींग, तइ मुष दाखेय दाद त्रसींग ।
चोड़ै षल. धुहड़ लाषइ चाक, वीरोलैय लाष षलां वैयडाक ॥

षत्री गुर वीरम धुणेए षाग, विछुटोय जांणक सांकल. वाघ ।
चांपे नर कोण वियो जुग चाल., करै कुण देषत टालोय काल. ॥

छाडाहर जाहर वाधेय छोह, लाषां सुंऐ आवण जायोय लोह ।
कठै केइ सूराय आवैय कांम, तके केइ कायर ओलाय तांम ॥

पड़तांय देषेय भीचकचार, जोइयांय दाव कीयो जिणवार ।
ताली मुष दाख होकारिय तांम, घुरे जद कावल. गेहर घांम ॥

सुणे जद गोहर ढोल समाध, आइ जद माथेय धुंन असाध ।
असल्लिय ताजण गोत उडांण, जची छिब नाच अपच्छर जांण ॥

राणां वल. चांपिय धुहड़ राव, घाले जद वीरम चावक घाव ।
झलतिय उभिय षांधोय झाड़, रही पग रोप विचाल.य राड़ ॥

छाडाहर साभरण हिंदुय छात, घणा दल नीठ दरसिय घात ।
संभाइये पांणव नागाय सार, हुवा हुव दोलाय आठ हजार ॥

वागा जम रूपी षत्री बैबाह, दलो भड़ वीरम हूंत दुबाह ।
जारेय सैंतीस सत्रां जम जाल, पाड़े रिण वीरमदेव पुंचाल ॥

जीते जुध जाहर पारथ जेम, उभो देयपाल अग्राजैय एम ।
प्रफुलत देष षड़ो देयपाल, लोहां छक वीरम बोल लंकाल ॥

षड़ो कोही मूझ तणो रिण षेत, साजे ओय आसुर पुत्र समेत ।
धणी राय सांभल वैण सधीर, आली कोय बोलेय तांम अधीर ॥

भंषू देयपाल देऊं पल भंष, धणी कुण आपैय मूज धनंक ।
सोलंषिय माधोय ओपम साष, पना दिस नांष दीसंन्यो पैयदाक ॥

सांमा पग धाणष रोप सधीर, तणै दंत हूंत हिलोलैय तोर ।
घात देयपाल तणै तन घात, आहैड़ीय कीध प्रथी अषियात ॥

पनीयैय कीध पराक्रभ पात, हुवो निरलंग ऊभै कर हाथ ।
उजालेय लूण धणी रोय आप, आहेड़िय पुणोय थांन उथाप ॥
मारे रिण तांल देपाल अमीर, वरे रंभ सुग्ग पोहतोय वीर ॥ ७७

दूहा

साजे षला सधीर, पाटो घर वीरम पड़े ।
रहे उजागर चूंडरज, निज वंस चाढण नीर ॥ ७८

सूग पितु गेयो सकाज, वरस वीस काढे विषों ।
लोहा छैल चूंडे लियो, रिधु मंडोवर राज ॥ ७९

धजवड़ हता सधीर, देवराज जैसींगदे ।
सेत्रावै राजेस सधर, त्रिजै सहत नर वीर ॥ ८०

छाडा तीडा छात, वेपष सुध उबांबरा ।
वरदाई दिन दिन वधै, गोगादेवड गात ॥ ८१

जाहर पारथ जोम, वाळ धमळ छिलसैं वरैं ।
भड़ गोगो थोगै भुजां, वडहत डिगतो व्योम ॥ ८२

अस भड़ झूळ असंष, सलषाहर मेळे सकज ।
वीरमदे रै वैररी, धरी गोगादे धंष ॥ ८३

अन जळ पान अहोड़, लीधो अंग लागै नहीं ।
वाप वैर किम वीसरै, गोगादे राठोड़ ॥ ८४

परणांतै परजाव, इळ सिर षाटण अमर पद ।
दरसण गोगा नै दियो, अगठ जळधर पाव ॥ ८५

पूरी दाषे प्रीत, दणव रचावणनै दलो ।
रीझ समापी रळतळी, सिध मोटे सुप्रवीत ॥ ८६

अंग वळ धरे अरोड़, साच वाच मांगे सकज ।
अंबर छिन्नंता आवियो, गोगादे राठोड़ ॥ ८७

गोगादे गज गाह, नर नाहर चित नेमियो ।
भड़ उण समै भतीजरो, मांडे दले विवाह ॥ ८८

जदम चोक जेवांण, समपण विस षाटण सुजस ।
जोयां ओपम जांनरा, साजे दलै सैमांन ॥ ८९

सोह जांनी सिरदार, इद ज्युंदो सजिया अलल ।
पड़ी गरज इक पुरणरी, तोसाषांने त्यार ॥ ९०

विध चित दाषवमेष, आय सेवग कीनी अरज ।
दीठो मैंटयरै दला, एक धमळ गघ एक ॥ ९१

श्रीमुष दलै सतोल, कहिया जद हूंता कथैन ।
आप धमळ थारो अमां, मुष मांग्यो लै मोल ॥ ९२

वचन सुणे तिण वार, ते धोरी मांगण तणो ।
झाटक कांधो जाटड़ै, नर कीधो नाकार ॥ ९३

आप रहण आरांण, केवियां रा चीत्या करण ।
दुभल धमळ लीधो दलै, जोरीवारै जवांण ॥ ९४

त्रहके तूर त्रमाळ, धोरा सिंधुरा धुवै ।
जांन दलो चढियो जरां, पौह छावण पूंचाळ ॥ ९५

वहतां पंथ विचाळ, सज तीतर दीधा सवद ।
जड़ काढण षिण जोइयां, गोगादे अरगाल ॥ ९६

तीतर तणा तिवार, दाणव सुण वायक दलै ।
सीष करे सोह जानसैं, वळियो जूह विडार ॥ ९७

दलो समज दइवांण, घण जांणग आयो घरे ।
चूंडा दिस झट चालियो, आंटै धमळ उडांण ॥ ९८

मरद वेपारां माय, असी कोस काटै इला ।
आयो जाट उवांवरो, चूंडै पास चलाय ॥ ९९

दलो सकज दइवांण, पिता वैर मारै पहुत्र ।
वेर म करमो ळार वौ, कस चूंडा केकांण ॥ १००

सुत वीरम समराथ, उत्तर चूंडे आखियो ।
दीठा वायक दाखिया, हेरू पटके हात ॥ १०१

रे चूंडा सुण राव, कर सांजत चढ काछियां ।
जीवसी ज्यां जुड़सी नहीं, पोह इसड़ो परजांव ॥ १०२

अंग कर रोस अघात, चूंडे सुं हेरू चवै।
वप मो घमळ न वीसरै, नूं किम भूलो तात ॥ १०३

नर कमंधां चो नाथ, चूंडो हेरू सूचवै।
दाणव संघारे दळो, पोहो गोगो पाराथ ॥ १०४

सांभळ वचन सधीर, सारां राव चूंडै तणा।
कमियो गोणादे कनै, धिषतै षार सधीर ॥ १०५

पंथ कांटे अण पार, मिलतांही दाषै मरद।
दांणव संवारे दली, साहे गोगा सार ॥ १०६

सांभळ वचन सधीर, हेरू सूं राजी हुवो।
करै मैहर समपै कड़ा, वीरम रै नर वीर ॥ १०७

पोह धर मूंछां पाण, पूतारे परगह पहव।
सक गोगो मांगे समण, जाळण षळां जवांण ॥ १०८

करण कमंध सिध काज, जड़ काढण षिण जोइयां।
दिल चित मीया सोदिया, समणै वैणस काज ॥ १०९

सूरो कथन सुणेह, सांमण रा साचा सबद।
केवा काढण कोपियो, डारण गोगा देह ॥ ११०

छंद त्रोटक

भड़ केवाय काढण अ्रद भलै, दइवांण जुभाउऐ मेळ दळै।
घण बोल घैसाहर जोस घणो, तैंहूंय हगांमोय कूच तणो ॥
हक होय हिंसारष साद हुवै, धूंसा छक कावळ वैर धूवै।
कर सिलह गोगाय वैर कजै, सिव जांण सिधांतर भेष सजै ॥
जमजाळ कड़ी जरदाळ जड़ै, उतबंग भुजा जाम वोम अड़ै।
दसतांन सरवत बंद दिया, ओयणे दोय मोजाय ओपविया ॥

जमदड्ढ बांमै अंग भीड़ जड़ी, सज पेटिय ऊपर सांबरड़ी।
घण वज्जर काळ लुहार घड़ी, गुण भार अठार कबांण गहै॥

नर नाहर साज तंडी वन है, अत वाढ अणी छड़ ओपवियो।
लंयंकाळ करःळ सेलाळ लियो, तति अत्तिय जेरव होय त्तिसी॥

करवतिय ततिय जांण कसी, लड़वा सुत वीरम भेद लहै।
दीय रूक अचूक रकेब डहै, तेयथेट असलिय षेत तणी॥

वपवाह अली बंध ढाल विणी, मोहरां दस तीन उभै मुररो।
तैय ऊपर सीस तठै तुररी, भड़ग्राळ चषां सैयचोळ भड़ै॥

जमरूपिय सार छतीस जड़ै, बोला जड़ काढण उबबरो।
कैकोंणीय पंडव जीण करो, सुज वायक पंडव संभळिया॥

व्रप वाधेय जोस विलकुलिया, कंध थापल रषत दूर कियो।
दाषे मुष व्रद लगांम दियो, षेह भटक पीठ कियो षुररो॥

सक गात कियो सुध साकुर रो, ध्रत गूगळ अग्गर षेव घजो।
तन भीड़ियो साज जड़ाव तणो, पेसूज वणिय हद गात परी॥

क्रेयकांणि सिंचाणि नैप त्यार करी, षोयले जद पंडव लेरषली।
करती इम तंडव मोर कली, चत्रसाल अचप्पळ तेज चषां॥

रस लैण लगांण उडांण रुषां, वध तेज समांण विमांण वहै।
गुण वांण कवांण जीवाण अहै, अंगराग वीणीयोये गात इसौ॥

तथथये करंतीय रंभ त्तिसी, गहपूर त्रमाळ सिंघू गडड्डै।
चक्रवत्त सिचणिय पीठ चड़ै, अस षेड़ेय धूहड़ उंतवळो॥

ते कोय चणै चौळ चाढे असळो, चक च्यारंय देस चळ चलिया।
सोय पांच इसा भड़ सालळिया, सुत वीरम गोग प्रवीत सहां॥

दिपैय मुष सूरज चंद दहां, जोड़यां जड़ काढण काळ जिसा।
दळ हलेय भाड़ंणनेर दिसा, गैग ढाळ जटाळ वैताळ गजै॥

विकराळ वंबाळ त्रमाळ बजै, दुवठाळ षड़ै धमचाळ दलै ।
मुजवां सिर घोर अंधार मिलै, ओपेय असवार तोषार इसा ॥

जुग जेठिय वुड़ैय पाल जिसा, कळ चाळ षळां सिर चूक कीयो ।
उरसां हुँत जांणक उतरियो, घण ध्राह दिरावण सत्रु घरे ॥

कमधज्ज षड़े अस वैग करे, मांभिय दळ दोउ कटे मरसी ।
हद आज चकावोय राड़ हुसी, धुप ऊढ धरस तुंरा धमसां ॥

दुषताय दहलांय देश दसां, मिल सालळ गोगेय सूध मुणां ।
तेय काढण आंटोय बाप तणां, धजराज नगां धरती धमसै ॥

भालाय सिर ग्रीधण झूळ भमै, सकवै रपु ग्राहण सालळियो ।
अंध घोर षेह रवि अंबरियो, डहके पंथवा सिर डंबरियूं ॥

कर कोड वैताळ क्रह क्रहिया, रुद्र जोगण भूत छके रहियां ।
केइ षेचर भूचर संग किये, दोलिय फिर साद चुडेल दियै ॥

पटेय गीर भार अठार पड़े षुसियाल हुई रथ रंभ षड़ै ।
डाकिय भड़ ध्रुहड़ बोम डहै, वैडाय अस उजड़ वाढ वहै ॥

रवि धूंधळ मंडळ पूर रजी, वंसरी जिम नास ब्रहास वजी ।
पंथ सालळ जुथ दलां फबळै, मिट तेज भासंकर घोर मिळे ॥

जड़ आवध जोस मै पाथ जिसा, दळ षेड़ षत्री उतराद दिसा ।
ग्रह पूर त्रमाळ सिंधु गड़ड़ै, पड़ ताळ तुरै ग्रह भार पड़ै ॥

डमरु घण डाकण डाक डहै, तेतालिय ताळिय वैताळ त्रहै ।
लागोय सिर अंबर रीस बधै, षड़िया अस गोगेय षार षधे ॥

इम साथ सबै भड़ ओपवियो, देषैय छित्र ठाळोय काळ दियै ।
हद सुर मांभी सलखैस हरो, आयोय अस षेड़ैय उबंबरो ॥

समणी तद सालणे सीव विया, करहा भर नीर अग्रय किया ।
क्रमधज षड़े अलंगार कियां, लषवेरे रो साह बमिद लियां ॥

दोय साद फोहो विपरीत दिया, सुतैय सुत लूणक सांभळियां।
सुण साद भयंकर सांवणरो, जाग्यो दळ नायक जांमणरो॥

दड़वांण जुझाउय ढोल दियो, सुगनी अव तेड़ हुँ वैग सियो।
दाषै इम सीआय हूँत दलो, भण आज सुनग्ग भूंडो क भलो॥

लड़ काढण वैर परत लियो, कमधज घरां सूंय कुच कीयो।
कर जोड़ सीयो अरदास करै, पण गोग अजु तीहै नीर परै॥

सुगनीराय वैण दलौ संभळै, किरणाळ सुतो सुष नींद करै।
अस षेड़ कमंध जराइ इतै, आयोय भड़ काळजे उकळते॥

वैरीय जड़ काढ षत्री विषमो, सुप्रवीत धुबे अधरात समे।
सुंपै अस जेळय भड़ां सघरां, केवांणिय षापांय छेक करां॥

रिम सीस आसो चित धार रळी, कमधापत भूवेय बाथ कळी।
चित देस दिसा नह चेतवियो, कमधज दळै सिर लोहकियो॥

कट ओध अरि त्रीय इस कढी, घणहैं सुष थाळ कटी घरटी।
प्रिसणां घर धाह देवाड़ पड़े, चक्रवत महेवय नीर चड़ै॥

कर जैत सवैर कढै कलियों, वेंह सात्रव गोग घरां वलियो।

दूहा

रिण गेगि कर रीस, दल्ला सिर झोकी दुझल।
घरटी एकण घाव सुं, वड हुय वटका वीस॥ ११२

तैं गोगा रिण ताळ, रिम सिर झाड़ी रळ तली।
कट ओघण अरि त्रिय इ सकट, साठ सोना रा थाळ॥ ११३

जे दिन दोयण जीत, वळियो काढण वैर नै।
दाणव चढियोजेण दिस, पाय इयो सुप्रवीत॥ ११४

दुभल पिता धिन वेस नव गढ हां, छात नरेस ।
दुभल पित धिन दलो उण, देव धिनो उदेस ।। ११५

कर षुररो लगामदे, पींठज मांड पिलांण ।
पुगळ जाइ पड़ाइया, एकज पोहर उडांण ।। ११६

मसतक बाधो मोड़, फेर दियलेतां फजर ।
दाणव सुणिया धीरदे, पनरा कोसां पोड़ ।। ११७

अण भंग वांह उभोय, मदु तणो दाषे मरद ।
अस पोड़ां धुजे धरा, काकै कुसळन कोय ।। ११८

पोहर पुल पैतीस, कुकाउ जोयाँ कनै ।
पोहतो चड़े पड़ाहियै, हैसु कोस छबीस ।। ११९

विधहै सुकहवात, सोह जानी मांडी सुणो ।
दुजड़ां मुह षामो दलो, घात रिमां अरघात ।। १२०

रिण काको अणरेह, वहियो सुण चंवरी विचा ।
धीर धरके उठियो, छोडे दुलहण छेह ।। १२१

दाषे धीर दुवाह, काहळियो केहर कळी ।
वलवंत सुसरो वोलियो, रांणकदे रिम राह ।। १२२

जोइया रुप जैवार, पूरा ले फेरा पहव ।
करवा गोगेसू कळह, जंग मिळ मांडो जांव ।। १२३

परणे भड़ पूंचाळ, सुषले निमक संसार रो ।
दाणव चढियो धीरदे, वेध करण वेधाळ ।। १२४

धर अंवर धड़ड़ेह, हुर अछर सिव हड़हड़ ।
अस षड़िया उवांवरे, जोइया जरद जड़े ।। १२५

ऊपड़ रज अणपार, गिधिण जोगण गह गहै।
हळ हले गो गादिसी, सजे छतीसु मार ॥ १२६

छंद त्रीठक

वप तेज हळाहळ वाद वहै, सक सूर छतींसुं ये सार सहै।
पैलां पत लैण बळी समथ, हूब होयक हूकळ वीर हथा ॥

ते बेठक भूषाय बाघ तिसा, डाढाळ कठठय गोग दिसा।
बोहाळ षड़ं य अस मोड़ वंधो, कवली भड़ धीरोए नाह कंधो ॥

वप वाहर नाहर, जोम धके, जुध मांहि भिड़े नर जोध जके।
दल़ पायल़ थाठ हलै दुझलै, हुब जाणक सांमद सात हले ॥

डाकिय भुज अंबर धीर डहै, वह पूर विमाण कबां ग्रहै।
भुरा मण तीन पुलाब बषै, चढिया षल़ षावण चोल़ चषै ॥

प्रथमी दस देसांय भंग पड़ै, ते भार दलां अहिधुह अतड़ै।
घण घोर आडंमर षेह घणी, ओपेय जिम नषत्र सेल कणी ॥

काको जुध मांगण गोग कना, मिलाय हुय मारग हेक मना।
षिध लागेय बाज घण षड़िया, अरजीत गेया नही आपड़िया ॥

वप सोच वले तज मांण वहै, रायठोड़ अगे अध कोस रहै।
दल़ नाथ हलै पंथ देस दिसी, असधीर अफालिया कोस असी ॥

वकवाव वधारण वेद भळे, वह पंथ विचारियांम मिलै।
पुछैय मिल जैनुय वात यहां, सिघ गोग तणो सक साद सहां ॥

सुंणतांय मराइके गलही, कर जोड़ हकीकत साच कही।
भड़ षोस छला मद गैभरियों, ओ गोगल छुसिर उतरियो ॥

सूत्रणे अर नेड़ोय संभलियो, गल़ चाळण धीर विळकुळियो।
भुज पोरस मूंछ भुंहार भिड़ौ, षेथे चड़ आतुर बाज षड़े ॥

सज राग सिंधुय नीसांण सहां, त्रबळी तद तूर त्रंबाळ तहां ।
घण वेढक गोग दिसी भिधि रिया, पिंड सांमत पूण्य पाखरिया ॥

किरबांण विमाण ग्रह ग्रहिया, रिवा ढांण मसांण छके रहिया ।
गत घोर अरगज है गहरै, अग षग अमूजैय मांय मरै ॥

अळगांसुय देषेय थाट अरी, तैयधीर हियै विच धकंधरी ।
पैय काढण वैर षत्री प्रगटा, घण सालळ सांवण मेघ घटा ॥

षड़ बाज नजीक आया षड़ता, तीषाय भड़ काळजै ऊकळता ।
लंकाळ आयोय घमचाळ लियां, छळ चाळ धीरो जमरूप कियां ॥

सुताय दळ गोग तणा सधरा, अस आंण अचांणक लीधै डरा ।
सुण देष षळां भड़ गोग सही, जागे रिण सुताय काळ जुही ॥

विषड़ी रिण चांमंड तेम विणी, तिण वारसी बीभड़ गोग तणीं ।
विढवा कज वीरम ओपम वीरम रो, जोइयां दळ सीस जांणै जमरो॥

षळ फोज कमंधज देष षड़ी, चवळापत जांणक पंष चढी ।
बळ नाहर गोगाये देव वरै, कव षांन किसुंय बाषान करै ॥

कस आवध साज बंधे कड़ियूं, धुब सालळ सांमोय धूहड़ियूं ।
केवियां सिर गोगे कोप कियो, इळ मांयण बावन उससियो ॥

चष्ष चोळ मुंछां भुंयहार भिड़ै, ऊतबंग भुजा ब्रहमंड अड़ै ।
हुब रोस चढो सोह राव हणो, तेय नीर सजे दरियाव तणो ॥

विध तीर गुणांय धुंकार बजै, ग्रह जाण ञषा रुत मेघ घुरैंजै ।
संक कुरम सेस सळसळिया, ग्रत वेध दहूँ दळ ग्राफळिया ॥

उवलां भुज यूं षग व्योम ग्रड़ै पैयलां सिर मार ग्रपार पड़ै ।
जोइयां जद भारथ वाज जुवो, हक होय ञषावंत साथ हुवो ॥

झिलियां मुँह घावांय हुंत झरै, पिंड वेदल व्याकुल नीर पषै ।
लड़तां जद कानोय धीर लियो, कूड़ जद रांणक दाव कियो ॥

उर दादर घायक ग्रोळवियो, कल मेलण गोग कनै क्रमियो ।
भड़ रांणक गोगाय हूंत भणी, तैयवात हळाहळ मेळ तणी ॥

वध वीरम षाग दलो वहियो, सोइ भिञ्च दलो तैंइ संग्रहियो ।
घर दोय मिलो कर हेत घणो, तिल सोच रैयो नहीं वैर तणो ॥

कर जोड़ उभै कुरनस करै, धुबवा फिर धीरदे हूँस धरै ।
हक होयकदादर फूट हियो, पोह नीर जीते जोइयों जुपियो ॥

सोषेय जळ सायर रो सधरो, बळ दाष विरोवर उवंवरो ।
क्रमियो जद रांणक कूड़ करै, धुववा फिर धीरोय हूँस धरै ॥

जपियो जद रोदांय घात जुवो, हुवा सुर गोगो हुसियार हुवो ।
हुसियार संसार साधार जुवो, दायतार जूझार सलष हुवो ॥

सत्रु चुर करुरह गोग सही, गह पुर करां समसेर सही ।
सह जीत पूर्वीत दळां सवळां, दोउं वेध दरसिय दोय दळां ॥

रिष नारद जोगण रंभ रळै, बैयवार अड़ी सल लोह मिळै ।
गज सार अपार तोषार गुडै, रणकार अपार नंगार रूड़ै ॥

बैयवार उरां तरवार वहै, कोयवार चंडी जैयकार कहै ।
भय आयर कायर षेत भजै, सजहार गळै जटधार सजै ॥

वैयवार जुभार गजां मुरड़ै, जिण वार गोगोय जोयार जूड़ै ।
भुज धार बंभार दुरार भड़ां, छणकार षगां रणकार छड़ां ॥

रिण रार सुरां अयगार रूड़ै, भुंय भार उतारण काज भिड़ै ।
षग धार गजां असवार षपै, जैकार जट धार जैकार जपै ॥

घुब ताळ धुवाळ कराळ धुबै, बैताळ धुंवाळ पंषाळ वजै ।
सेयलाळ धड़ाळ भड़ाळ सिलै, हद षाळ नदी लोहाळ हलै ॥

जरदांळ घंटाळ दंताळ जई, भुरजाळ घड़ी विकराळ भई ।
वैयमाळ कमाळ धराळ वहै, षैंगाळ दटाळ भोपाळ षैहै ॥

प्रळै काळ सेलाळ धड़ाळ पडै, कड़ियाळ चुनाळ तइ कड़ड़ै ।
बंबाळ वियो रायपाळ बरैं, षिमनाळ षुराळ है नाळ षुरी ॥

धम चाळ अचाळ त्रमाळ घुरी, ध्रुवहाळ मराळ दंताळ धुषै ।
भोयपाळ पंखाय गूदाळ भषै, चोटीयाळ लिया अत वोम चड़ै ॥

परनाळ घड़ा लोहाळ पड़ै, घड़ियाळ वजै किरमाळ घड़ी ।
षेतपाळ रजै वैयताळ षड़ी, घर व्योम पताळ धड़हड़िया ॥

उर दोनुंय माजिय आहड़िया, जोइया अरु धूहड़राव जुवो।
हर हूर रथां उदमाद हुवी, भूखीय थट ग्रीधण मांस भषै ॥

पड़ सूर धधकैय सीस पषै, गज थट्ट गरट्ट ऊछट्ट गूहां।
अण थट्ठ भिड़े उमंगे असहां, षगभ्रट विकट्ट कुवट्ट षिरै ॥

चट पट्ट आंमंषये ग्रीध चरै, तद रत विकट्ट उपट्ट तरै।
घण मट्ट फुटै पर रिट्ट धिरै, घम चक्क भभक्क थर थरक्क धुंवो ॥

हुब ठक्क अरक्क थरक्क हुवो, कंधड़क्क वड़क्क बड़क्क कड़ी।
सजड़क्क जड़क्क वैहै सजड़ी, सबड़क्क बड़क्क भषै संवळा ॥

गुडळक्क गळक्क गीधांण गाळ, रही ढक्क विठक्क धधक्कर जी।
विरहक्क कटक्क ललक्क वजी, फिफरक्क फरक्क फरक्क फुरै ॥

घण डक्क त्रबंक्क त्रबंक्क घुरै, वप श्रोण धधक्क धधक्क वहै।
रथ रंभ अरक्क थरक्क रहै, जग टोप कड़ी जडळक्क जड़ै ॥

पिड लोथ दड़क्क दड़क्क पड़ै, हुय हक्क अछक्क कढ़क्क हुवै।
ग्रिधणक्क गहकां चंडीं गुरवै, घड़ दोय अकारण होय ॥

घड़ी पित सूर वरै रंभ हूरपड़ी, इम जोस दोउं दळ आफलियूं।
तटीय इळ अंत रळतळियुं, पित सूरज राह निवाज षड़े ॥

लपवेरो अनै नवकोट लड़ै, वेयभीठ अरीठ गरीठ भिड़ै।
पांडीसांय रीठ नोत्रीठ पड़ै, काळ कीठ वळिट्ट सदीट्ठ कियै ॥

दोउं वांम झकोयन पीठ दियै, झिलमां सिर वीजळ वाढ़ जड़ै ।
घण जांण कांसी ठठियार घड़ै, पड़ैय छक लोहांये सीस पषै ॥

थुड़वै विटीया रिणताळ धकै, धारै सिर अंबर धुहड़ियूं ।
अरियां सुंए गोगोय आहड़ियूं, रिण जंग तुरंग सुरंग रुळै ॥

पड़ कायर भंग विभंग पुळै, षुल डाडर चंग सुचंग षगां ।
उतवंग बरंग बरंग अंगां, धजरंग षतंग निढंग घड़ां ॥

भुज लाग उमंग निहंग भंड़ा, गुण बांण कबांण जुवांण ग्रहै ।
वप ढांण वेधाण संधांण वहै, अत सांण वाषांण आरांण अषै ॥

पड़ सुर धधकैय सेस संषै, धुब घांण मथांण मसांण धरा ।
गिर बांण विमांण षड़ै गैहरा, किरबांण जिवांण केकांण कटै ॥

जमरांण गोगो अवसांण जुटै, असमांण सुं आंण विमांण अड़ै ।
जमरांण जुं आण आरांण जुड़ै, केयवांण वहै तनत्राण कटै ॥

जमरांण दोहुँ अवसाण जुटै, धुषवेध दळां निय सांण धुबै ।
हिदवाण अनै तुरकांण हुबै, पैय जोगण सुरांय श्रोण पियै ॥

देषैय छिब लुहर रंभ दियै, विडतां सुत वीरम देव वकै ।
शत्रु कोय धको नह साज सकै, भड़ धीर सधीरह व्रंद भळै ॥

मुह मेज कमंधज हूंत मिळै, गज ढल्ल अचल्ल हमल्ल ग्रहां ।
त्रहबल्ल सिंधू ववरै मल त्रहां, बरघल्ल कगल्ल कड़ी वड़ड़ै ॥

जुध्धमल बेहुँ अड़ियल्ल जुड़ै, भड़ठल्ल अचल्ल वहै झटकां।
हुय हल्ल उथल्ल पथल्ल हकां, कसमस्स कगस्स तुरस्स कटै॥

छड़ अंतस आतस तीर छंटै, धसमस्स धमस्स तुरस्स धरा।
बैहु आफल सगंस ऊबंबरा, घज घायक वायक पूर गहूं॥

दळ नाथ पठाइक भीच दहूँ, गुण सायक दायक सोर गजै।
रिष रंभ विनायक सूर रजै, षळ खायक दायक कूंत षगे॥

वरदायक गोगोय धीर वगै, सज धूहड़ धूहड़ राव सही।
वध धीर तणी तरवार वही, अर सानरण मारुय उस सीयों॥

ते तोडिय पांण रलतलियो, पडिया, पग गोगौये काप पहां।
दह धीर अनै सत्र दोय दहां, बैठोय सत्र जारैय उबंबरां॥

हुय लोह छको सलषेस हरो, ढिय चाल, षत्री दल दोय दहै।
रिण रांणक एक निलोह रहै, धिकतो रिण दीठोय षेड़ धणी॥

तिह चाह हुई तरवार तणी कथ गा राणक गोगाय हूँत कही।
सज आय अमां समसेर सही, जोइयो कोइ लेसीये आय जरे॥

क्यूंय रीझ सगा नेह मूझ करे, सुण देष, कमंधज तेण समै।
आवे लोय राणक रूक हमै, नर धुहड़ तो मन धोह नहीं॥

सज ओड़व मो दिस मूंठ सही, चित काहळ मूंछ ब्रूहां अड़िये।
धर मूंठ अरी दिस धूहड़ियै, सांमी जद राणक सालळियो॥

वप गोगइ तैमै विलकुंवियो, सत्र साजरा रूक षत्री समरी ।
कल जाणक नट्ट कुलट्ट करी, धेषे कर वेग गोगैय धरियूं ॥

तद राणक भागोयो देषयूं, वियमोह हुतां षंग वैग वुही ।
हद जंध उभै निरलंग हुई, ऊभी, रह कम भाजै मुझि अग्ग ॥

सज तालिय तालिय आव सगा, कहरांणक तालिय हास किसो ।
जुग की धोय गोगैय आप जिसो,चक च्यारुंय नामीय चंदवडौ ॥

पाड़ेय षल धूहड़ षेत पड़े, घर सूंघट गोगाय काप घणो ।
तेंहां जांप जप्यो नव नाथ तणो, कटिये पग सेवग साद किये ॥

दरसाव इतै सिद्ध राव दियो, सुझरीझ जलंधर पाव सही ।
जग कीधोय अम्मर आप ज्युंहीं, हुय सिद्ध गोगो हुय आप मतै ॥

इल अंबर सूरज चंद इतै, सज षाग षलां सलषेस दुवो ।
हद सूर दसमो नाथ हुवो, सुध वायक पाहड़ षान् सही ॥

कव क्रित उकत पर माणकही, लष कोड़ करी अस पुत्र लहै ।
रिध सिध सदा अणघुट्ट रहै, मोमुज सात्रव दालद रोग मिटै ॥

पिंड आणद जोस कलाय गटै, कर धूप प्रभातेय पाठ करै ।
हुय जैत षगां सत्र दोष हरै, धिन धिन गोगा कनवज्ज धणी ॥

तैय पुरिय आस कविद तणी, कव प्रीत हुँता तव क्रीत कहै ।
रिव चंद जितै तोय नाम रहै,, सिषैय गुण भाषैय क्रीत सुणै ॥

तन वाधेय दोलत तास तणै, भव मत्त सारू कवि षांन भणी ।
तेय कीरत गोगैय राय तणी, घण सज्जन मात पित्र भ्रात घरै ॥

करड़ै दुष आप सिहाय करै ॥

संपूरण रूपग गोगादेजी रो ।
आठा पाड़ षानजी रो वणायोड़ो ॥

———

परिशिष्ट १

अथ वीरमदे सलषावतरी वार्ता लिखीयै छै ।

राव सलषाजीरो बेटो वीरमदे वडो रजपूत । परभोम पचायण । वडो आषाड़सिध रजपूत । महेवै टीकै रावल मलीनाथजी तपै । सो वीरमदे निपट ओनाड़ । मलीनाथजीरा कथनमै नही । सो वीरमदे आठ पोहर अधूला रहै । अढंगा दांन दीजै । तिको वीरमदेजीरो जस सारा रजपूत बोलै । तिको वात जगमाल मालावतनै सुहावै नही । इतरामें सुहांणा गढसु देपाल जोईयौ किण हेक आंटै नगर महेवै आयौ । वास कीयो । घणो माल वित लेनै घणा अमोलक घोड़ा लेनै महेवै आयौ । देपालजीरै नै वीरमदेजीरै जीवां चैन घणो बंध्यो । देपाल नै वीरमदेजी भेला रहै । वरस २ तथा ३ वीता । इतरामै मलीनाथजी नै जगमाल देपालरै घणो माल वित देष नै मारणो तेवड़्यौ । घावड़्या विदा कीया । तरै आ वात वीरमदे सांभली । तरै वीरमदेजी देपाल जोईयासु आंण भेला हुवा । वीरमदेजी देपालजी बैठा बात करै छै । इतरामै घावड़्या आया । आगै देषै तो वीरमदेजी बैठा छै । तरै काई सूझी नही । तरै पाछा वलि गया । जाय नै रावल मलीनाथजी नै जगमालजीनै कह्यौ । आगै वीरमदेजी बैठा छा । तरै काई सभि नाई । मालोजी जगमालजी, वीरमदेजी सूं घणा रीसाया कह्यो । वीरमदे घणी करडी तांणै छै । इतरामै वीरमदेजी मनमै विचारियो । देपालजीरै नै मांहरै हेत मालोजी करै । मारणो तेवड़्यो तो देपालनै कुसले काढां । तो रजपूती पणो रहै । तरै देपालजीनै कह्यौ । देपालजी अबै महेवासु परा नीकलो । थां उपरै मालैजी नै जगमाल चूक तेवड़्यो छै तरै देपाल आपरो माल-वित, घोडा, रषत-बषत लेनै नीकल्यौ । तरै राठोड़ वीरमदे सलखावत देपाल जोईयारै साथे होय कितरेक दूर पुहँचाय आया । तरै वलतां नै वीरमदेजी नै देपाल जोईयै समाधि वछेरी दी । तिका ले नै पाछा महवै आया । तरै मालैजी बात सांभली । वीरमदे समाधि वछेरी ले आयौ । तरै मालै रावल

घणेरो बुरो मांन्यौ । तिण समीयारी साष —

नीसांणी

पवर हुई है वीरमै मन धीर बंधाई ॥
जायैं सब ही लूणीयांण राषे सरणांई ।
कुसली वर नो डाईयां संग जाय सिषाई ॥
समाधि आंण सलषीयांण तै असमाधि उपाई ॥१

वार्त्ता

अबै मालैजी नै वीरमजी सासती चित षांति पडती जाय । मलीनाथजी धरतीरा धणी तिको वीरमदेजीनै क्यु ही दे नही । वीरमदे दातार–झूझार । संसार उपर वहे सासता धाड़ा आंणै । तिको इण भांति काम चलावै । गरीबरी प्रतपालणा करे । तिकौ स कोई चारण–भाट स कोई जस भेट ल्यावै । भलां बोलै तिको मालाजीनै सुहावै नही । आपरा रजपूतांनै वरजै । वीरमदे कनै मती जावौ । बैसो मती । धाडा साथे मति जावौ ।

सो एकरसु वीरमदे सलषावत एक आप असवार नै एक साथे पालो लेनै तटीनै मोहिलांरा गांव वठै बीकानेर परानै तटी हेरो घोडीयांरो कराय नै उठीनै चढीया । वरसालारा दिन था । सो उठै मोहिलांरो देस बापरावटी कहीजे छै । तठै घोडीयां निपट घणी छै । अमोलक हुवे छै । तिके छूटी मोकला तालर माहे चरै छै । सो उठै माछर डांस घणा छै । उठै वीरमदे जाय नै धूंई कीनी । घोड़ीयां सगली माछरांरी संताई धूंई उपरि आई । तिको वीरमदे पांडवां नै मारिनै घोडीयां ले नीसर्यौ । तद मेहिलारी वडी वार वहे छै । सो सात वीसी कवर पाबती तलाव झूलता था । घोडा असवारीरा कायजे कीया उभा था । तठै किणहेक जाय नै बाहर घाली । तरै कह्यो सांहण रावलो लीयां जाय छै । तरै कवरां कह्यो साथ पैलो कितरोयक छै । तरै उण कह्यो एक असवार नै एक पालो लीयां जाय छै । तरै सगलां मोहिलारां कवरां वात मांनी नहीं । इसड़ो कुण छै ? इणैं ठौड़सु एकल असवार एक पालो रावलो सांहण ल्यै । यु कहनै बाहर चढीया । आगै घोड़ी लीयां जाय छै । दिन घणो चढीयो छै । वीरमदेजी अमल घणो षाधो थौ । तिणरी गरमी घणी हुई छै । तिरै मारग विचै एक गूजरांरो वाड़ो आयौ । तरै वीरमदेजी माहे गया । आगै गूजर वडो अ आवर ? छै । आगै गूजरी गरढी पीढी माथै बैठी उन करै छै । केयक माटा दहीरा भरीया छै । केयक माटा दूधरा भरीया छै । केइक माटा चाछरा भरीया छै । तठै वीरमदेजी नैड़ा आय नै कह्यो माता डोकरी थोडी सी तो चाछ पाय । तरैं डोकरी वीरमदेजीनै कह्यो बेटा दूध दही तो परमेश्वरजी घणो ही दीयो छै । तोनैं मावे जिक्यु हेठो उतरि नै पी । तरै

वीरमदेजी घोड़ासूं हेठा उतरीया नै कटोरदांन काढीयौ। माटा उपरा आय नै माटो १ तो दहीरो पी गया। माटो १ दूध रो पी गया। उभा थका हीज हाथ पोत्यासुं लुया। कुरला विण कीधां चढि नै आया हीज षडीया। नै लारासुं सातवीसी कवर वाहर दोडीया छै। तिको उण गूजरी रै वाडै षोजांरा षोजां आया। गूजरी नै कह्यो माता गोरस पाय। तरै डोकरी माता कह्यो ऐ माटा दही दूधरा भरीया छै। मोकलो चाछ माटा भरीया छै। थांरी दाय आवै सो पीवौ। तरै कंवरांरो साथ घोड़ासूं उतरि नै हाथ पग धोवण लागा। आंष्यां छांटण लागा। चाकरांनै कह्यो पांणी पीवणरा वाटका काढि ल्यावौ। तरै पइसा ५ भरत छाछ भरी छोटी वाटकी ल्याया। सो सातवीसी कवरां वाटक्यां करि नै माटो १ दहीरो पीयो। तरै उण गुजरी कवरांनै पूछीयौ–बेटा थे सिध जावो छो। तरै कंवरां कह्यो माता डोकरी एक असवार नै एक पालो मांहरी घोड़यां लीयां जाय छै। तिणरी वाहर आया छां। तै दीठो होय तो बताय। तरै गुजरी कह्यो मैं दीठो। अठै आयो थो। घोड़ासूं उतरिनै माटा २ दहीरा पी नै गयो छै। तिको वीरा थे अबै उण वांसै मती जावो। तरै कंवरां कह्यो माता डोकरी थूं म्हांनै किसै वास्तै वरजै छै। तरै डोकरी कह्यो वेटां उणरी इसडी फुरत दीठी छै। थांहरी पिण दीठी छै। थे मत जावो। तरै कंवरां कह्यो वाई थूं इण वातमै समझै नही। कांई हुवो किण ही घणो पाधो तो। पाधां तो वल हुवै नही। तरै डोकरीरा तो वरजीया कंवर लागा नही। कंवरां घोड़ा आगा षडीया कोस ७ तथा ८ गया। वीरमदेजी नै कंवरांरै साथ निजर देठालो हुवो। तरै वीरमदेजी चाकर नै कह्यो। थूं घोड़ी लेनै हालतो होय। वीरमदेजी वाड़यांरो सांकडो सेरयो थो तठै उभा रह्या। सो उठै मोहिलांरा कंवर उतावला आया। तिको वीरमदेजी वडा तीरंदाज छै। तिको कवांण झाली। सो कवांण दीनी। तिको कंवर ५ तथा ७ तीरांसुं मारि लीया। जिणरै तीर लागै तिणरै दुवासु नीकल जाय। युं करतां पांच सात सिरदार काम मारीया। तरै मोहिलांरो साथ भागो। तरै वीरमदेजी वांसै घातीया। घोडानै पुरी कराय नै उपरै नावै। पाषतीसु तीरांसु मारै। वीरमदेजी हाथरो तीर पांवडा ५०० पांच सै उपरै जातो पडै। तरै मोहिलांरां कंवरां दीठो। नाठांही छूटां नही। तरै कंवरां उतरिनै दांतां तिणा लीया नै कह्यो मांने जीवता जांण द्यो। तरै वीरमदेजी कह्यौ हथीयार परा नांषो। तरै उणां हथीयार परा नांषीया। तरै वीरमदेजी सगलांरा हथीयार भेला कराय नै भारा वंधाया। भारा कवरांरै माथै देनै मुँहढ़ा आगै करि लीया। उणांरा घोडा था तिणांरी डोर उणांरै हीज हाथै दीनी नै मुँहढा आगै करिनै मोहिलांरा कंवरांनै महेवै ले आया। सो इण वातरो सगलांहीनै इचरज हुवो नै वीरमदेजीरै अंतवर मांगलीयांणीजी थी। सो निपट समझवार छै। तिण वीरमदेजीनै कह्यो आपनै इसड़ी वात कीनी न जोईजै। एक तो आप इणांरो वित लीयौ। फेर इणां री गत गमाई ईजत गमाई। तिको इण भांति श्री परमेश्वरजी अति सांसवै न छै। तरै वीरमदेजी मांगलीयांणीजीनै कह्यौ। अबै मांगलीयांणीजी थे कहो ज्युं करां। तरै मांगलीयांणीजी कह्यो जिके गांव माहे च्यार सिरदार हुवै तिणांरी वेटी, थांहरै भाई बंधांरी बेटी इणांनै परणावो। इणांरा हाथीयार परा दिरावौ। इणांरा घोड़ा वित ल्याया तिको दत डायजामै परो दिरावौ। तरै वीरमदेजी भाई बंधांरी बेटी, रुडां रजपूतांरी बेटी परणाय दत डायजो सेझवाला देनै सीष दीवी। तिके आपरै ठिकांणै गया। तठा पछै

कितरेक दिने वीरमदेजी थटारै पैडै पातिसाही घोड़ांरी सोबत आंवती थी तिका वीरमदेजी मारि लीधी। घोडा लेनै महेवै आया।

इतरामै घोड़ांरी पुकार पातिसाहजीरी हजूरि गई। तरै मलीनाथजी वीरमदेजीनै तेड़िनै कह्यौ। वीरमदे मांहरी कितरेक ठकुराई छै। जे पातसाही सोबत मारि तिणनै म्हे रापां। सवारै पातिसाही फौजां आवती तरै म्हा वतै थांरो उपर कोई होसी नही। थे थांहरो सूल देपनै रहो। तरै वीरमदेजी रीसायनै कह्यौ। मांहरो फाड्यो म्हे हीज सीवसां। इतरामै वीरमदेजी उपरै पातिसाही फौजां विदा हुई। तिका महेवा नजीक आई। तरै पातिसाही फौजांरा प्रधान मलीनाथजी कनै आयां। कह्यो। थांहरै भाई वीरमदे पातिसाही सोबत मारी तिको किसै वासतै? कैतो थे घोड़ांरो मन मनावो। नही तर म्हे थांहरो देस पराव करसां। तरै मलीनाथजी उकील प्रधांनांने कह्यौ। म्हे तो पातिसाहरा हुकमी छां। ओ वीरमदे नै ऐ थे। थांहरी दाय आवै ज्युं करो। इणरा गांव पिण जुदा छै: मांहरा कथनमै ओ न छै। थांहरी गता गम आवै ज्युं करो। तितरै पातिसाही फौजां महेवासुं निपट नजीक आई। मालैजी उतर दीयो तिणरी पवरि वीरमदेजीनै हुई। तरै आपरा साथरां रजपूतांनै कह्यौ। आपे पातिसाही फौजासुं वेढि कीयां पड़प नावां। मालैजी नैं जगमालजी तो पोत काढि दिपाल्यौ। आपरी वसीरो लोक हतो तिणनै थलीनै विदा कीयो। वडो बेटो देवराज लोकरै साथे दीयो तिको वसी लोकनै लेनै थलवट माहे गयो। आप असवार २०० साथे लेनै सेभ्रवालो १ मांगलीयांणीजीरो साथे लेनै टालो दे गया। तिको जांगलुनै पडीया। वांसै पातिसाही फौजा हुई। आगै वीरमदे नै पाछै पातिसाही फौजां। अवै वीरमदे सलषावत नै बाहादर ढाढी नीसाणी कहे।

नीसांणी

मोहर वीरम वांसै पंधार जांगिरु आया॥
बीसल मोकल भारमल वड़ हठ रचाया॥
जिगटै हथ कटार मल पुत्र मुंजे जाया।
वीरम कारण सांपलै सिर कीया पराया॥२*

वार्त्ता

अवै वीरमदेजी पातिसाही फौजां लीयां जांगल आया। जठै उदो मूजावंत सांषलो ठाकुर राज करै। सो जांगलुसु कोस १ नैड़ा आया। तरै आदमी २ मातबर वीरमदेजीमेलनै

---

* यह नीसांणी वीरवांण की नीसांणी सं० ३८ का परिवर्तित रूप है।

सांषला उदा मूजावतनै कहाड़ीयो जे मांहरै वांसै पातिसाही फोजां छै। सो था वतै मांनु राषीया जाय तो म्हे माहे आंवां। तरै उदै मुंजावत उठिनै आपरी मांनै पूछीयो। माजी साहिब जो जांगलु रै ओलै आज महेवो आवै तो आंणीजै कै न आंणीजै। तरै मां कह्यो बेटा उदा आ देही कारमी छै। रजपूतरी वट छै। किणहेक आंठै आवसी जिकुं होणहार छै सो होसी। ओ ओसर आय वण्यौ छै तो चूकज्यौ मती।

तरै उदो मुंजावत सांमो जायनै वीरमदेसु मुंजरो कीयौ। घणौ आदर भाव मनुहारि करिनै वीरंमदेजीनै कोट माहे आंणीया। इतरामै प्रभाते ही लारा लगी पातिसाही फोजां आई। तिणसु उदो मूंजावत जायनै सांमो मिलीयो। तरै पातिसाही फोजां माहे जिके रुडा मांणस उमरांव था त्यां कह्यो। म्हे इतरी दूर वीरमदेनै मुढा आगै कीयां आंयां छां सो वीरमदे थांहरा कोट माहे छै। तिको वीरमदेने उरो सूंपो। तरै उदै मुजावत सांषलै ठाकुर कह्यौ। जे क्यु सूरज छाबडै ढकीयो रहै नही। तिको वीरमदे मारा घरमै समावै नहीं। आप डेरो करावो। सवारै म्हे समझनैं जाब देसां। तरै पातिसाही फोज डेरो कीयो। घास पांणीरो जाबतो करायौ। तुरक पिण ठंढा पडीया। मन माहे जांणीयो सवारै मांनै वीरमदेनै सूंपसी।

उदो मूजावत कलविकल करिनै कोट माहे आयो। वीरमदेजीनै कह्यो जे पातिसाही फोजां निपट सबली आई। जे जांगलुरा कोटसु धको सहणी आवै नही। उदै मूजावत वीरमदे-जीनै कह्यो जे आप हुकम करो तो राजरा मुंढा आगै लडिनै कांम आवां। जे राजरी दाय आवै तो घोड़ा ऊंट'र रजपूत लेनै आवां तरै वीरमंदेजी मनमै विचार्‌यौ। जांगलुरा कोटमै तो रह सका नहीं। तरै वीरमदेजी घोडा ऊंट बलद षरची उदाजी कनासु लेनै देपाल जोईयारां देसनै रातूं रात षडीयां।

वीरमदेजी तो देपाल जोईयां कनै गयां। तुरकरी फोज उठै हीज रही। तरै प्रभाते ही निबाब फोजरै नायब उदा मूजावतनै बुलायौ। तरै उदै आयनै मुजरो कीयो। उदैजी आपरा साथनै कोटरो जाबतो दे आया था। कोटरी पोल सैठी जड़ मेलज्यो। इतरो जाबतो करि नै उदोजी तुरकां कनै आया। तरै तुरकां कह्यौ उदाजी वीरमदेनै उरो ल्याव। तरै उदै मूजावत कह्यो। वीरमदे मारा घरमै समावै नहीं। थे थांहरी षबरि करल्यौ। कोट जोयल्यौ। वीरमदे तौ देपाल जोईयारै देस गढ सुहांणानु षडीया। तरै मुगलां उदा मुजावत नै पकडीयौ। तिको उदारी पग सूं षाल पाडणी मांडी। तरै उदारी मा जांगलुरा कोट उपरा चढनै जोवती थी। सो उदारी षाल पाडतां दीठी। तरै उदारी मा मुगलांनै कह्यौ हेलो

पाडिनै । वीरमदे तो उदारी षोपरीमै छै । पगांरी षाल माहे न छै । सो थे उदारी षोपरी पाडौ । ज्यु वीरमदे नीकलै । तरै तुरकां कह्यो आ कुण छै । तरै किण हेक कह्यौ आ डोकरी उदा मूजावतरी मां छै । तरै तुरकां डोकरीरो वचन सुणनै उदानै परो छोड़ीयौ । तिको उदो जांगलुरा कोटमै आयो । वीरमदे तो सुहांणा नै गयो । आगै जोयांरो मांमलो करारो दीठौ । तरै पातिसाही फोज अठासु पाछी वली ।

वीरमदेजी जोईयांरै देस देपाल कनै गया । आगै जोईयौ देपाल बीजाई जोईया सिरदार दांण उगरै थो तठै दांणी चोतरै आया था । तिण दिन वीरमदे सोहांणारै तलाव आंणि उतरीया था । सघरी छांह देखनै देपाल जोईयो दांणी चोतरै बैठो थो । वीरमदेजीरो साथ देपालरी निजर आयौ । तरै आपरा भाई बंधांनै देपाल कह्यो । जिसड़ो राठोडांरो साथ हुवै जिसडा दीसै छै । तरै देपाल आपरा बेटा जैतसीनै कह्यौ तु षबरि ले आव । ओ साथ कठारो छै ? तरै जैतसी आपरै घोड़ै चढिनै षबरि करणनै आयौ ।

आगै वीरमदेजी बैठा था । उठै जैतसी आय जुहार कीयौ । वीरमदेजी पूछीयो आपो कुण ठाकुर छो । तरै जैतसी कह्यौ । हु देपाल जोईयारो बेटो छु । तरै वीरमदेजी जैतसीनै आघो बुलायो । मिलीया । मिझमांनी कीनी । आपरा माथारी पाघ जैतसीरै माथै मेली । जैतसीरी पाघ वीरमदेजी मेलीनै कह्यो । जैताजी देपालजीनै वीरमदे सलषावतरो जुहार कहज्यौ । वीरमदेजी पाघ जैतारै माथै मेली ।

तरै सांवणी कनै उभो थो नै ढाढी बहादर हजूरि उभो थो । तरै सांवणी माथ धुणीयो नै कह्यो । जे वीरमदेरो माथौ इण धरतीरै आंटै जासी । इतरै जैतसी सीष करि देपालजी नै षबरि दीनी । जूहार कह्यो छै । वीरमदे सलषावत छै । महेवासु आया छै ।

तरै देपालजी उण सायत आपरो साथ लेनै वीरमदेजी कनै आया । बांह पसाव करिनै मिलीया । वीरमदेजीरो घणो आदर भाव कीयौ नै सुहांणागढ माहे वीरमदेजांनै ले आया साथ सांमांन सूधा । वीरमदेजी रै प्रधांन दोलो गहलोत छै । सघरी जायगा डेरो दिरायौ । घास पांणी घोडांनै दांणारो जाबतो करायो । भली भांति महमांनी करि नै वल कराई । घणा जतन कीया ।

इतरामै वीरमदेजी दोला गहलोतनै देपालजी कनै मेलिनै बात कराई । मांहरो च्यार महीना पड़पाव करो तो म्हे अठै रहां । तरै देपालजी मनमै विचार करिनै दोला गहलोतनै कह्यो । म्हे महेवै आया जदि वीरमदेजी मांसु वडो उपगार कीयो छै । अठै घोड़ा रजपूत

गांव गोठ छै सो वीरमदेजीरा छै । दस भाई म्हे लूणा जोईयारै डीकरा करेछै । त्यांरा गढ सुहांणा माहे दस हैसा छै । त्यु इग्यारमो हैसो वीरमदेजीरो छे । वसीरा लोकनै घर बताया इग्यारमो हैसो दांणमै करि दीयो । तिको रोजीना दांम ढाल भरीया आवै । आपरी रहवासनै वसीरा लोकनै गांव बडेरणो बतायौ । जठै वीरमदेजी जाय रहवास कीयौ ।

वसीरां लोकां पिण जाय वास कीयौ । वीरमदे वडो रजपूत हुवो । पाकतीरा गांवांरा रजपूत आय नै वीरमदेजीरै वासि गांव बडेरणै वसीया । दिन २ ठकुराई वधती जाय । दांणरा हैसा निपट घणा आवै । तिके रुपीया ढालां भरिनै वहचीजै । वीरमदेजीरी ठकुराई निपट जोरै चढी । तरै देपालजीनै वले कहाड़ीयौ । इतरामै तो पड पाव न हुवै । तरै देपालजी टालिमा बीस पचीस गांव दिराया । वीरमदेजीनै वीरमदे घणां रजपूतमै जडांणो सात सै असवारांरी जमीत हुई । ठकुराई जोरै चढी । तिण समीयारी नीसांणी ।

नीसांणी

ऐहज वीर मराठ वड सलषाणै जाया ।
कढि कटकां लंघीया देपाल ठंभाया ॥
वीर मनतु सारै आंपणै घर मांहि पराया ।
झलर पषरीया वतां वीरमदे आया ॥
नेप थीयां अनिपाईयां पेषि पावत्र बदे ।
चीहल मो हला सापले निव कढन बदे ॥
लऐ मरोटह पटणु नित धरम वंहदे ।
देस सम पेरांणीया सहवीर वंसदें ॥
वडे दें पन धलीया परिहस पवंदे ।
बहादर उचभि दांणीयां बडे रायसल पहंदे ॥

वार्त्ता

वले वीरमदेजी दोला गहलोत साथे देपालजी नै कहाड़ीयौ । इणा रोजगारां उपरा-इणां गांवां उपरा म्हांरो पड पाव नही । अठै परदेसरो मांमलो । घोड़ा रजपूत राषीया जोईजै । चारण भाट आवै तिसनै च्यार टका विदारा दीया जोईजै । षटदरसण नै सेर आटो दीयो चाहीजै । आया गया रजपूतनै रोटी खवाड़णी जोईजै । सो थे क्यु दांण माहे इधको है सो कराय द्यो ।

तरै देपालजी सुणिनै आपरा भायांनै कह्यो । वीरमदे वडो रजपूत छै । आपांसु बड़ो उपगार कीयौ छै । आपां कनै वीरमदे कठा पिण वायरी मारी कोयल आवै ज्यु आयो छै । सो थे इणांनु दांण माहे हैसो पांचमो कर द्यौ । तरै देपालजीरा भायां भतीजां कह्यौ । आप

वडेरा छौ। आपरो कीयो कछू लायक छै। तरै वीरमदेजीनै हैसो पांचमौ कर दीयौ। तरै वीरमदेजी वड़ेरणै राजस्थांन घणा रजपूतांसु सुषै राज करै छै। वडेरणो गांव सुहांणासु सातां कोसां उपरा छै।

अबै कितराइक दिन वितीत हुवा। तरै वीरमदेजीरा लोक रजपूत जोयांरी धरतीरो विगाड घणो करै। तरै देपाल नै सगला कहण लागा। आ थे किसी उपाधि षाटी। वीरमदेजीरा लोक दीठै दावधर। तीरो विगाड निपट घणो करै। तरै देपाल जोईयो गाडी जोतरि नै गांव वडेरणै वीरमदेजीनै ओलभो देणनै आया। आगै वीरमदेजी मांचै वैठा दाड़ी संवराता था। सो देपालजी आयनै जुहार कीयौ। सो वीरमदेजी मांचै बैठां हीज जुहार कीयो। सांमो मांचो पडीयो थो। तठै देपालजीनै कह्यो थे बैसो। सो देपालजी मन मांहि अटक लीयो। जे धरती मांहरी मांहि रहै नै मो आयां उठि उभो न हुवै। तरै देपाल बोलीयो। वीरमदेजी म्हेतो थांसु काई मुंडी न कीधी छै सो थे मांहरी धरतीरो विगाड करावो। तिणरी साष।

नीसांणी

वीरम असी तो साझि कै किते गुनह जाय खवंदे।
मुणे सलष वनीडं कीया हुरतांण फुरंदे॥
हैकण थेक न मावही दुय खग लोहंदे।
हेकण झल न मावही दुहुँ सीह मुकंदे॥
जोईयां भाल षहडीयै कांम चालै मंदे।
दुय घर डायण परहरै गांवै विढहंदे॥

वार्त्ता

देपाल वीरमदेजीनै कह्यौ। थे मांहरी धरती माहे रहिनै मांहरा हीज देसरो विगाड करावो छो। सो भली वात। एक घर तो डाकणि हुवै जिका ई परहरै छै। तरै वीरमदे कह्यो देपालजी थे कहो तिका वात साची। जो डाकणि भूषी हुवै बाहिरलो न मिलै तरै घररा नै घायक न पाय। तो बीजारी किसी वात। नीसांणी तिण समीयारी।

नीसांणी

वडा दलै देपालदे हर पाल सरोवै।
मदो लूणै हंदीयै सबल जांधोवै॥
मुह अपै वीर मराठ वडए नलहन रोवै।
डायण किण ही न परहरै जो भूषी होवै॥*

---

* यह नीसांणी यां वीरवाण में प्रकाशित नीसांणी सं० ४३ और ४४ परिवर्तित रूप हैं।

वार्त्ता

तरै वीरमदेजी देपाल नै नाहर रो बनाव दीयो। जे थांहरा देसरो नाहर मांहरी वसीरा द्राव सगला मारीया सो थे मरवाया। तरै देपाल वीरमदेजी नै कह्यो। बड़ा ठाकुर इसड़ी वात अनाकरी कांई करै। नाहर किणहीरा भरमाया लागै। थांहरै जो किण ही वात दिसा उपाव करणो हुवै तो थे जांणो। तिण समीयारी।

नीसांणी

दला कु लाजै तसी लो भार जूवारा ।
चोहिल सांजि अपणां वीर चडै सवारा ॥
तु लेपो लपिवाईयै रेवंत सतारा ।
वीरम देस दिपावीया सिर देवण हारा ॥
वीरम न्याव न भाव ही अनीयाव पीयारा ।
सेई रोजे भिस्त जाय त्यां न्याव पीयारा ॥

वार्त्ता

देपालजी वीरमदेजी नै कह्यो थांहरै नै मांहरै वात विगाडी छै। अबै लोकनै वरजजो विगाड़ करण देज्यो मती। विगाड़ कीयो तो अबै विगड़ैली। तिण समीयारी।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां कालिआई न कंपै ।
अजकल्ह क आध्रमण पग बहि सेजंपै ॥
नैंडो घेह न लभ्भही वीरमां मन दपै ।
सरणागति तुम आवीया जल नावक नपै ॥
सै नर वीरम दिठीयां किरणालां कंपै ।
मीजां सिसिरं छत्रालीयां देवंगां चपै ॥
सचा धरिया वीर नांम जिण पुत्र सलपै ।
वीरम जांण अजांण होइ भै देवण सपै ॥

वार्त्ता

देपालजी तो वीरमदेजी नै ओलभो देनै घरे आयो। तिण समै भाटी बूकण वैर सीयांण नाले आयौ। तरै देपालजी बूकण भाटी रै परणीयौ। तरै दोलै गहलौत राव वीरमदेजी नै

कह्यौ । रावजी जोईया तो आगै ही चोवीस हजार घोड़ांरा धणी छै । ठठा भखर रो पातीसाह मृगतमायची जिणरै परधांन बूकण भाटी छै । तिणरै देपाल परणीयौ । अबै आपणै हाथ आंवणसु रह्या ।

तरै वीरमदेजी बूकण भाटीनै मारणरो उपाव मांडीयौ । भाटी बूकणनै नालेर मेलीयौ । सात बेटी छै । तिको आपनै वलेथांहरां भाई भतीजांनै परणावसां । नालेर झेलज्यो नै राज परणीजण पधारज्यो । सो उण वीरमदेजीरी वात सांभली थी । सो भाटी बूकण नालेर झालै नहीं । भाटी बूकण कह्यौ पहला वीरमदेजी मांहरै परणीजै तो पछै म्हे थांहरै परणीजसां । तरै भाटीयांरो नालेर वीरमदेजीनु ल्याया । सो वीरमदेजी नालेर झेलीयौ । मन माहे चूक तेवड़ नै । आ वात जसै लूणीयांण देपालजीरै भाई सांभली । वीरमदेजी भाटीयांरो नालेर झालीयौ । तिको चूकरो मतो दीसै छै । तरै जसै लूणीयांण देपालजीनै कह्यौ । वीरमदेजी चूकरो नालेर झालीयो । तिको भाटीयांनु मारसी । तरै देपालजी कह्यौ जसा भाई आ वात हुवां नही लाहोरसु सात कोस तलवडी छै । मारि सकै नही । धरती उभी छै । अबै वीरमदेजी नालेर झेलनै भाटीयांनै कह्यौ म्हांरै वैर घणी जायगा छै ! थे जाहर करो मती । असवार पचास साठिसु छांनो सिकाररै मिस आउं छु । थे कठै ही जणावजो मती ।

इतरो कहिनै भाटीयांरा आदमीयांनै सीख दीनी । पाछै वीरमदेजी सातसै पखरैत असवारांसु चढीया सो मजलां मजलांरा वीरमदेजी भाटीयांरी तलवड़ी गया । जायनै एक आदमी वधाईदार तलवड़ी मेलीयौ । जाय नै गोरवै उतरीया । आदमी जाय नै वधाई दीनी । तरै सातेई कवर भाटीयांरा सामा आया । आंणनै जुहार कीयौ नै ऊपरै तरवारि पडी । कंवरां नै मारि लीया नै वागां उपड़ी । आगै सांमेलो आंवतो थौ । सो बूकण भाटीनै सांमेला माहे मार लीयौ । गांव मारि लूटि रोस करि नै वीरमदेजी पाछा आया । लारै देपाल जोईया कनै भाटीयांरी फिरयाद आई । तलवड़ी मारी । तरै जसै लूणीयांण देपालजी नै कह्यौ । थांनै म्हे पहला हीज कह्यौ न थौ तिणरी साषरी ।

नीसांणी

देपालै कसमीर दे गल भणै न रोई ।
वीरम हइस तोलींया सलखांणै सोई ॥
कूटी पीटी तलवड़ी विवाह न होई ।
जसे जेही जाप दी तेवी ही होई ॥

वार्त्ता

वीरमदेजी पाछा आया तरै दोलै गहलोत कह्यौ । अबै अठै आपां नै रह्यां भलाई नही । सवारै आपां उपरै जोईया आवसी । तरै वीरमदेजी गांव वडेरणो छांडि नै रातो राति गाडां भार घालि कागासर नै कवलासरमै वासारी वांकी जायगा छै तठै आय नै

वीरमदेजी भाग फाटती समा गाडा छोडीया । तरै वीरमदेजी दोला गहलोतनै कह्यो । जोईयांनै मारणरो उपाय करो । इसो विचार करि नै वीरमदेजी कागासरनै कवलासर रहै छै । इतरामै कासमीरदे भटीयांणी देपालजीनै कह्यौ मांहरा पीहररो वीरमदे नास कीयो । आ उपाधि थे क्युं राखी थी तिणरो फल अे देषौ वले देषसौ । कालंदार सरपनै घर मै घाल्यौ तिको आप घणी दुष पावसौ । तरै देपाल मनमै विचार्यौ हुं जाय नै मोहिलानै तेड ल्यावुं छुं । मोहिलांरै नै वीरमदेरै आगै ही वैर छै । उणांरी घोडी आंणी थी । उणांरा सात आठ बेटा मारीया छै तिको उठीसुं तो मोहि आवै अठीसुं म्हे जावां तो विचै भिरडामै देनै वीरमदे नै मारि लेसां । इसो विचार करि नै देपालजी वहल १ जोतराय नै माहे बैस नै आदमी पांच तथा साथे लेनै रातो राति मोहिलांरा देसनै षडीयां जाय छै । सो कागासरनै कवलासररै गोरवे आय नीकल्या । सो देपालजी न जांणै आगै वीरमदेजी रा गाडा छै सो अजांण थका आया ।

आगै वीरमदे समाधि वछेरी कुदावै छै । होकारा करै छै । तिके देपालजी साथीयांनु कह्यौ थें मोनै कठी ल्याया । आगै तो वीरमदे होकार करै छै । साथरां कह्यौ वडा ठाकुरां बीयौ मती । अठै वीरमदे कठासु । तितरै वीरमदेजी नैड़ा आयनै होकार कीया । तरै देपालजी अडायरो ओढि मांदरो मिस करि नै सुय रह्यो । तितरै वीरमदेजी घोडी दोड़ाय नै वहल कनै आया । तरै वीरमदेजी देपालनै दीठो । तरै कह्यौ आज युं से कटीनै । तरै देपालजी सूतां हीज रांम रांम कीयौ नै कह्यौ मौसु भायां चूक तेवड़ीयौ यु कहै छै । देपालनै वीरमदेजी एक हुवा सोहुं आप कनै आयो छु । तै मोहिलांनै तेड़णनै जाउ छु सो आये भेला होय नै भायां नै मारसां । आपांरै धरती आधो आध छै ।

तरै वीरमदेजी देपालजीनै घरे ल्याया । कुमाररै घरे डेरो दिरायो । वीरमदेजी मांगलीयांणीजीनै कह्यौ । म्हे आज एकलो देपालजीनै तेड़ ल्याया छां नै दोला गहलोतनै बुलायो छै । तिको घर बैठां ही सिकार आई छै । तरै मांगलीयांणीजी वीरमदेजी नै कह्यौ । देपालजी तो थांरु काई बुरी न कीधी । भला थोक जिके देपालजीरा कीया छै । थे इसी विचारो । तिण समीयारी

नीसांणी

मांगलीयांणी वीरमा इक सीष सुणीयै ।
हेकण हथै जोईयां तो सांम ठंभीयै ॥
कालें रुंप न कटीयै जो छांह अजीयै ।
मधी पधी नां मरै परमल काजीयै ॥
जो मोहलांणी तांण होय तो अंग रोस जरीयै ।

वार्त्ता

मांगलीयांणीजी देपाल कनै आया । वीरमदेजी तो अमलां मै चाक हुवा पोढ्या छै । दोलो गहलोत पिण आयो न छै । मांगलीयांणीजी देपालजीनै कह्यौ । देपालजी इसड़ी

वेला पड़ै तिण वेला थे पिण मां सु उपगार करज्यो । ओ वचन याद राषज्यो । थे परा उठो । वहल जोतरो । थे नीकलो । रावजी सूता छै । दोलो गहलोत आयां थां उपरे तरवारि वाजसी । तरै देपाल वहल जोति नै रातो राति नीकल्यौ । इतरै दोलो गहलोत आयो । वीरमदेजी कह्यौ दोला वधाई देज्यौ । देपाल एकलो आंपारै हाथ आयो छै । तरै दोलै गहलोत कह्यो मारीयो कना नही । वीरमदेजी कह्यौ अबै मारिस्यौ । तरै दोलो घावड्या साथे लेजाय कुमाररै घरे खबरि कीनी । आगै देखै तो देपाल नही । कुमारनै पूछीयो । देपाल कठो गयौ । तरै कुमार कह्यौ अठासु तो पोहर १ रात रो वहल जोतिनै नीकल्यौ । तिको पबरि काई नही । कठी ही गयौ । कोस ५ तथा ७ दोड्या पिण देपाल तो जावो रह्यो । दोडिनै पाछा उरा आया । देपाल तो कुसले घरे पुहतो ।

अठै वीरमदेजीनै दोलै गहलोत पिछतावो घणो कीयो जे देपाल घरै आयो कुसले जाय । तरै मांगलीयांणीजी कह्यौ रावजी देपाल आपां सु तो लपरी कीनी थीनै आप उणांरो रजिक पायनै उणांनै हीज मारण तेवडो छो तिको नारायणजी सांसवै न छै । पछै तो आप जांणो । पिण वीरमदेजी रै मन मांनै नही । मन मै मारणरो डाव घणो ही करै छै । हर भांति करिनै जोईया मारिनै धरती धावीजै । इसी वीरमदेजीरा मन मैं वरतै छै ।

इतरै ढोली आई नै गेहर वाजण लागी । सुहांणै गढ गेहर वाजै तिको ढोल निपट सखो वाजै छै । तरै वीरमदेजी कह्यो जो यां ठाकुरांरो ढोल बोहत सखो वाजै छै । तरै चाकरां कह्यौ महाराज जोयांरै ढोल आंबारो छै । आंपणो ढोल लोहरो छै । तिको मधुरो वाजै छै । लोहांणै नै कागासर कोस १२ रो आंतरो छै । ठंढी रातरो ढोल निपट नेड़ो सुणीजै । तरै वीरमदेजी कह्यो आंपणै पिण ढोल आंबारो करावां तो आछो ।

तरै कारीगरानै बुलाय नै वीरमदेजी कह्यो कठैक आंबो वढाय नै ढोल करावो । तरै कारीगरां अरज कीवी महाराज थलवट मे आंब नै फरास कठकै लाभे । तरै दोलै गहलोत कह्यो जोईयां नै मारणरो उपाय करो छो तो आंपा हालिनै वीर धवल नांमा फरास वाढां नै ढोल करावां नै फरास जोयांरै पूजनीक छै । तिण उपरा जोईया आंपांसु वेढ करसी तरै आंपे देपालनै मारि लेसां ।

तरै दोलो गहलोत फरास वाढण नै गयौ । तरै वीरमदेजीरै वहु मांगलीयांणीजी छै तिका निपट समझणी छै । तिकण सुणीयो दोला गहलोतनै वीरमदेजी जोयांरो वीर धवल नांमा फरास वाढणनै मेलीयो छै । तरै मांगलीयांणीजी वीरमदेजीनै कहै ।

नीसांणी

उहीज आवै रतडी सिर लापै लोवै ।
धोबी धोवै कपड़े मोटीयारां धोवे ॥
चिरोज चवै सार बेप वहंदी होवै ।
मांगलीयांणीनै सांपली एकायज रोवै ॥
जे फरासन वढीयै तो कलिकेथी होवै ।

वार्त्ता

वीर धवल नामां फरास वढाय नै ढोल करायो। तरै ढोलै गहलोत कह्यो। अबै हुसीयार होज्यौ। सवारै आपां उपरि जोईया आवसी। इतरै फरास वाढीयांरी षबर गई। तरै सारां ही जोईयां मिल नै देपाल आगै पाघडी पटकी। कह्यो देपालजी घरमै पिसादि घालि नै जोयांरो माथो झुकायो पाघडीयां मै धूल पड़ी। जोयांरै पूजनीक फरास वाढ़ीयो तिको वीरमदे अबै पेट मै क्युं कर समावै।

तरै सगला जोईया भेला होय नै घोड़ो हजार २४ सुं चढीया। तिण माहे दलो देपालांणी मोहर वधीयौ। आपरा साथ सुं वधनै वीरमदेजीरी गायां लीधी नै गोहर आंथिनै वाहर धाणी। तरै वीरमदेजी चढण लागा। तरै मांगलीयांणी वरज्या। वडा रजपूत थे इणांरा इतरा षून कीया छै तो एक षून इणांनै ही बगसौ। पिण वीरमदेजी तो मांनै नही। तिण समीयारी।

नीसांणी

जो फारस न वढही तो कलिकेथी चलै।
मांगलीयांणी वीरमा धाय लगी पलै॥
किणहेक पड पण आंपणै धण लीया दलै।
हाकां सुणि वीरम ची जोईया दहलै॥
अठ वीस पुडअ कंपीया तिके उथल पथलै।
गह भरि वीरम गरजीया अरि तिही सलै॥
कलि अकथ कीधी सलप सुत जोईया मिल किलै।
छाडावत छिल तेम छर केहरि गज पिलै॥
वरी अपछर वीर वर मांणिग महलै।
कविता ढाढी वीर कहि जोईया पर जलै॥

वार्त्ता

मांगलीयांणीजी तो घणा ही पाल्या पिण वीरमदेजी न मांनी। सातसै सौव पषरैत असवारांसु चढीया। तिण समैरी।

नीसांणी

वीरमदे पीडाईयांता जिण पचवांणी।
समाधि नचै पिड पषरी चंगा केकांणी॥

वीरम पहरै कपड़े धोए सारक तांणी ।
राग रंगावलि अंग जिरह झमझपस आंणी ॥
वीरम चढीयां सत्र चढै सवें सलपांणी ।
मांणिक हरीया दोलीया वड थट फरांणी ॥
पाऊं थहै लूझणा जसदी करवांणी ।
वीरमनु केहा कहै कहै मांगलीयांणी ॥
जोतु वीरम सलपीयांण आगै लूणीयांणी ।
धीरे धीरे जोईयां आया सलपांणी ॥
मदो आय विलंब सी वगजे ही पांणी ।

वार्त्ता

वीरमदेजी तो वाहर चढीया । सगला साथसु जोईयांसु जाय नैदे ठालै हुवा ।

नीसांणी

वीरमस माथि कुदाईयां जेहा मालाला ।
भापे भापे आवीयो मोहिल सूछाला ॥
पाहु थट सलूझणा भाला लूवाला ।
सा ज्या तोनै जोईयां सलपांण रढाला ॥
एकै कांनी दोलीयो के वीरम छत्राला ।
मदो तेजा उथस्या दल दो छै हीरा ॥
ओचक ढाहे दाढीयां तोह उपर बीरा ।
वहादर मदो वधीयाद्रि मायं गहीरा ॥

वार्त्ता

वीरमदेजी घोड़ी षमसाय नै आपड़ीया । मदो सगला कटक आगै छै । तरै मदानै वीरमदेजी दीठो । तरै मदा उपरि वीरमदेजो नांषीया नै आय नै मदानै तरवारि वाही । सोतरवारि तूटि गई । तिणरी साख ।

नीसांणी

चावष लाया सलषीयांण छिडता जिण धुटी ।
थे कुलई यां न मिसरी षुरसांण चिहुटी ॥

मदो दे सिरवालीया न सीस वीच चिमुढी ।
टेपे एकती फीयुं जांण चांच वहुटी ॥
तुटे होवै मिसरी वाच वहादर षूटी ।
झमदे तेग सलषीयांण किरवांणी तुटी ॥
तर मेपे लास लषोयांण छेड तुरंग उगांही ।
वीरम दुही मिसरी सारमांतांही ॥
तुटी होय मिसरी वहादर सरांही ।
वाहण हारा क्या करै जब फवै नांही ॥

वार्त्ता

वीरमदे तरवारि वाहिनै आपरा साथमै पाछो जाय उभो रह्यौ । वीरमदेजी पिछतावो करै छै । जे मांहरी वाही मदो जीवतो रहै तिको आज दीसै छै । यां रै हाथ षेत आवसी । जैतसी देपालांणी कह्यो दीठो जिका कर गयो छै । आज आपां सगलांनै मारसी । तरै जोईयां विचार दीठो समाधि वछेरी जैता थे फेरी छै । सो तोनै इणरी कीमत छै । तिको तुं इगताली डाकै ढोल वजाय । ज्युं समाधि वछेरी नाचै तो वीरम देपालो हुवै । तो आंपे मेला होय नै वीरमदे नै मारां ।

इतरै वीरमदेजी वाग उठाई । वीरमदे नै आंवतो देष जैतसी इगताली ढोल वजायौ नै होकार कीया । तरै समाधि तो नाचण लागी ज्युं ढोल वाजै ज्युं घोडी नाचै । आघो पग नचातरै । तरै दोलै गहलोत कह्यो । वडा ठाकुर उरो आव । अबै परो मरावै छै । तरै वीरमदे घोड़ी पाछी वाली । तरै जैतसी पाछै आयनै घोडीरा पाछलां पगारैं झटका री दीधी नै घोड़ी तो हेठी पडी । तरै वीरमदेजी लारानै उतरीया । तिणरी साषरी ।

नीसांणी

आंवदीया हीघ तीय न छोह छोही दगी सै ।
जैतल झाडी कराचली आप केही वगी ॥
समाधि दीयै क्युंनां रही त्रिगनालि विलगी ।
उझकै देता जिण करै त्रिहु होय पगी ॥
वीरम समाधि कूद ही होकारै देई ।
धाई धाई अखीयै ढोल वजैघाई जैतलघुई ॥
मिसरी सो वन जडाई उतरीया कमंध जै पगग्रडाई ।
वीरम समाधि गुझाय कै असमाधि उपाई ॥

वार्त्ता

अठै मदोनै वीरमदे दोनु लथो बथी हुवा । माहो मांहि कटार्‍यां वही । वीरमदेजी कटारी वाहै तिकौ मदो टाल जाय छै । वीरमदेजीरै कटारी लागी मरमरी मदो वीरमदेजीरी चोट फबणदे नही । तरै वीरमदेजी दांतां सु कटारी झाली मदानै बाथांमै झालि वीरमदे दांतां सु कटारी चलाई । सो मदोनै वीरमदे दोनु रिण षेत रह्या । तिणरी साख ।

नीसांणी

मदो नै वीरमदे दल मझ समेत ।
उ जोयो उ राठवड़ राजै छत्र पते ॥
दुहु घती भलबथीयां दुहु अहथ घते ।
जांणै छाजां वजीयां किरमाल उलते ॥
मदो नै वीरमदे रिण रो है फबै ।
उ जोयो उ राठवड़ मन दुहुँ गरवै ॥
वहादर लूणै सलपीयांण वहिगए सलछै ।
सझे हथ कटारीयां मतवालै षछै ॥

वार्त्ता

वीरमदेवज कांम आया । तरै दोलै गइलोत पागड़ौ छाडीयौ । तरै सगलै साथ पागड़ो छांड्यौ नै आंमो सांमा तरवारयां भिल्या । तिणरीसाष ।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां तेरी धुहकारा ।
मांणिक हरीया दोलीया यड़ थाट कगारा ॥
रायाहु थटां लूझणा खांडा दो धारा ।
वीरम पासै दोलीयै भलकीया उतारा ॥

वार्त्ता

दोलै गहिलोत मांणिकदेनै कह्यो । मांणिकदे मदांणी मदाजीरै प्रवाडै तो वीरमदे । वीरमदेजीरै प्रवाडैमदो । वड़ा रजपूत सांमै मुहडै आव । तरै मांणिकदे मदांणी दोलो गहिलोत दोनु लथोबथी हुवा तरवार वाजि नै वेहु रिण खेत रहया । तिणरी साखरी ।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां वाजी निकरारी ।
दोलै श्रीहि मिसरी पुरसांण पलारी ॥
मांणिकदे वल छंडीयौ वडनरी करारी ।
मांणिक लड़ीया दोलीया हुँ ईंद्र हारी ॥

वार्त्ता

मांणिकदे ने दोलो दोनु लड़ि नै कांम आया । कलौ मोहिल नै जसो लूणीयांण दोनु लडिनै कांम आया । तिणरी साख ।

नीसांणी

आपे आपे आवीया मोहिल उदंडा ।
खवै खेडा चित्रकोट झरल झोरंदा ॥
वहादर ढाढी अखीया नीसांणी छंदा ।
चाकहि जांण उतारीया सिर जे सोहंदा ॥

वार्त्ता

अठै, वेढ नीवडी । देपाल पाछौ जाय उतरीयो । बगतर उतारि नै देपाल जोईयौ अपूठो रिण जोवण नै आवै छै । निसंक थको पुनड़ा आहेडीरा हाथ पडि गया छै । पिण सावचेत छै । तरै पुनडै आहेडी देपाल नै आवंतो देख नै दोला गहिलोत नै कह्यौ । दोलाजी देपाल नै आंवतो देखो छो । थांहरो हाथ सावता छै नै मारै डांगडै तीर चढायद्यो तो देपाल नै पाडि राखु । तरै दोलै गहलोत विसनै डांगड़ो चढाय दयो । पुनडै आहेड़ी पगांसु डांगडो झाल नै तीर दांतांसु झालिनै देपाल रै बगल मै झाटकी । तिको तीर दुवासु फूटि बगवल मै जाय लागो । देपालजी तो रिण खेत रह्या । जो यां रो माझी मारि राख्यौ । तिणरी साख ।

नीसांणी

धण हय भूती पुनडै जे पट पलोटी ।
चुण तरग सहुँ कढीया बे भरी क पोटी ॥
देपालै तन लाईयां वात करी न खोटी ।
चोगुणी कीनी पुनडै रावतां दी रोटी ॥

वार्त्ता

राठोड़ वीरमदेजी रो साथ सगलो कांम आयौ । जो यांरो साथ साढी तीन हजार लोक कांम आयो । देपाल जो यासु मांगलीयांणीजी उपगार कीयो थौ तिण सु गांव वसी लूटी गई । तरै मांगलीयांणीजी नै से झवालै छै सांण नै आदमी ४ साथेदेनै मारवाडि नै पुहचता कीया ।

माल वित तो लूटि मैं गयौ सो थलवट माहे चारणांरो काला उगांव छै तठै मांगलीयांणीजी आय छांनों रह्या । चूडोजी नांना वरस ५ तथा ७ मै छै । संवत १४४० वीरमदे जी कांम आया । काती वदि ५ राठोड वीरमदे कांम आयो । तिण समीया रो गीत हर सूँ बारट कहै—

गीत

वटाऊ वात कहो वीर मांयण, जोषम दीह तणौ जडीया ।
पोरस आयस कोई पूछै, पैला केता रिण पडीया ॥
विढण वारवांण कहो वटाउ, ऐता क्युं मैं आवडीया ।
सैहथ आप महेवा सांमी, पाडे माझी रिण पडीया ॥
वीरमसु देपाल विढंतै, अणी चढे नह उवरीया ।
राव जोयां अनै कमधज राव, राविहु भेला रहीया ॥
रावधूरा भई वीसलदे, करे काट अप साथ कींया ।
अंतेवरां न सु क्या, एकल पण पर शुंय साभण हार पीया ॥

वार्त्ता

वीरमदे पुत्र राव चूडो १, देवराज २, गोगादे ३, जेसिंघ ४, विजो ५, देवराज वीरमोत वडो बेटो तिण नै वीरमजी महेवासु नीसरीया । तरै महाजन लोक वसी सगली दे नै थली माहे मेलीया था । सो लोक लेनै देवराज थली नु गयौ । तिकौ देवराजजी कालाउ सोम सिर विचै पूगलीयो को हर छै । तठै राज थांन मांडि नै रह्या । जेठांणीयां कनै तठै रहै छै । पमारांरी ठकुराई तद सहज मै भागी थी सो थलवट माहे गांव हुरडावै आसाय चांके इक फुटकर रजपूत रहता । तिण कालाउ गांव माहे देवराज आय रह्यो थौ । सो ओ रजपूत दिन २ गलता गया ऐं धरतीग धणी होता गया । देवराजरी ठकुराई बंधी तिके देवराजौ तउठारा उठै हीज रह्या । देवराज पुत्र रावतराजो १, दुरजन सल २, महिराज ३, पूनो ४, चाहडदे ५, गोगो ६, रांणो ७, खीमकरण ८ । इति राठोड़ वीरमदे सलखावतरी वार्त्ता ।

अथ गोगादे वीर मोतरी वार्त्ता—

गोगादे वीरमोत वडो रजपूत । सेवालै राजथांन वडो आषाडसिध । गोगादेनु मांणकी तरवारि जलंधरी नाथ दीधी । वडेरणै रैहता वीरमदेजी थकां एकै दिन रावल मालाजीत नु जगमालजी नु दसरावा उपर गोगादे मुजरो करण नै महेवै आया था । सो रावलजी उठै ही राषीयौ थो ।

एक दिन जगमालजी गोगादेजी कना भैसा नै झटकौ बुहाडीयौ सो गोगादेरा झटका सु भैसा रो माथौ अलगो जाय पडयौ । तरै सगले साथ झटकौ वषांणीयौ । तिको गोगादेरा वषांण जगमाल नै सुहावै नहीं । तरै जगमाल ओकर वचन बोलीयौ । भैसानै आगै पाछै

बांधिनै माथो चाटै तिणरा किसा बषांण। रजपूती पणौ गोगादेजीरो जद जांणा दला जोईयारो माथो इण भांति पाडैं तो बापरो वैर लेतो। इसो वचन जगमाल गोगादेनै सुणाय नै कह्यो। तिको गोगादेरा मनमै हुसार वही।

गोगादे वरस ३५ री उमर छै। इतरै गोगादेजी जासूस मेलीया। तिकां जासूसी पजोय दला जोईयारी निगै लेनै गोगादेजीनै आंण कह्यौ। दलो जोईयो ढांणीयां रहै छै। आंमो सांमा गाडा उभा करिनै हेठै ढोलीयो विछायनै धणी धणीयांणी सुवै छै। फलांणा थल हेठै दला जोईयारा गाडा छै। इतरी षबरि जासूसाँ आंण दीधी।

इतरा मै धीरदे जोईयो दला जोईयारो भतीज जिण जेसलमेर परणीजण जातां का कीनै कह्यो थौ जे आज कालिह सांवण आकरा बोलै छै। तिको अण चीतीया वैरीयां सुध को होय तिण सुं मो आयां पहली मोसर देषो तो वेगी षबरि मेलजो। इसोकहिनै जांन चढो।

अठै गोगादेजी ३०० रजपूतांसुं चढीया। तिको राती वाहो दीयौ। दलौनै दलारी बहु रथांरा ओधणां हेठै सूता छै। तठै आय नै गोगादेजी मांणकीनां मा तरवारि मेली। तिको दोय रथांरा ओधण नीचै धणी धणीयांणी सीरष पथरणो दोवड मांचो नीचै धरटी एकण झटकासुं इतरा वाढीया। तिण समैरा।

दुहा

सझि गोगादे साट, वाही वैरां वालवा।
ओवट घरट निराट, दोय रथ ओधण वरभीया॥१॥
गोगै वीरम वैर छल, ए वाही कुलवट्ट।
दोय रथ ओधण वत्रीया, सीरषइ सघरट्ट॥२॥
गोगै वीरम वैर छल, भली ज वाली रीस।
मार्‍या दला जोईया, वटका कीया बत्तीस॥३॥

वार्त्ता

इतरामै वितले नै पाछा वलीया। दला जोईया रो घोड़ो असवारी रो नांम पावटौ तिको भूहरामाँहि वाधो छै। तिणनै मदा जोईयारी बहु कह्यौ। थारा असवारनै मारयो लूण रीता सीर वहो तो आ वेला छै। जेसलमेर जायनै धीर देनै वाहर घालि घोडानै छोडीयो। तिको जेसलमेररो मारग लीयौ। तिको जेसलमेररै गोरिवै जांती हीस कोधी। तिका धीर दे कानां सुणी।

तरै तीजो फेरो लेता था। तरै घोडै वले हीस कीनी। तरै धीरदे जोयो हथलेवो छुडाय नै चोथो फेरो विण लीधां चढीयौ। साथे रांणंगदे भाटी हुवौ। सातसै असवारांसु

इणां पिण पाघरा ओ सांटीया गोगादेजी रा साथसुं देठालो हुवौ। तरै गोगादेजीरै साथ तलाव रोकीयौ। न्हेहु साथ तरवारयां वागी। तिण समै जोईयां भाटीयांरा साथनै तिस लागी। तरै रांणंगदे भाटी गोगादेजी नै कह्यौ तु मारवडिरो छत्र मांहरो साथ त्रिसी थो पांणी विण पीधा मरसी तौ अगत जासी। तिणसुं मानै तलाव पांणी पावौ। म्हे पांणी पीनै तलाव थांनै पाछौ सूपदेसां थां विचै मां विचै कटारी उपरा हाथ दे कह्यौ आ छै। किण ही वातरो अपसोस जांणज्यो मती। रांणंगदे भाटी राम नमै घणो तिको कटारीरी पड़दड़ी मांहि तीतर राखीयो छै। तरै गोगादे साच मांन आपरा साथसु अलगा जाय उभा रह्या। जोईयां भाटीयां पांणी पीनै फेर तलाव उपरा वेढ कीधी। गोगादेजी रो साथ सारो कांम आयौ नै गोगादेजी लोहांसुं धापनै पडीया। गोगादेजी रा हाथ रो खडग विजैनांमा नव हाथ वधै। तिकौ रांणंगदे नै कह्यौ। वडा सगा ओ मांहरो खडग विजैनांमा थांहरा हाथमै राखौ। तरै रांणंगदे बोल्यो। थे राठोड भाई छौ। थांहरो वेसास किसो। तरै गोगादेजी आप दिसी अणी कीधी। मूठि रांणंगदे भाटी दिसा करिनै हाथ पसारयौ। तरै भाटी षांडो लेण नै सलबौ आयो दीठै। तिण समै गोगादेजी छुरीसु उछाल मूठ हाथमै झाल रांणंगदे नै वाही। तिको जांणे सावलमै तांत वही। गोडां उपरा पडी। तिको राणंगदे पूठां हुवांणा पटदे धरती पड्यौ।

तरै गोगादेजी हसीया। दांत चोकारा मोटा छा। तिको देषनै भाटी रांणंगदे कह्यो। वल्या दांतांरो घोस। तद गोगादेजी कह्यो मांहरो कोई केडांयत होय। तिको पांचे पचासे दिने वैर ले। तिको भाटी ठाकुरां कना लेज्यौ। तटासु गोगादेरो वैर भाटीयां रै माथै टाहरीयौ। संवत् १४४७ रा जेठ वदि १३ भुणीयारडा गांवरी पाषती तलाव उपरा कांम आया।

कवित्त

चुडो चरु सु गाल राव गुरु राव भणीजै,
विजो वीर वीराधि लाप मै एक गिणी जै।
गोगा देगिर मेर जिको नरपति नारायण,
जेसिंघ दे जगपति अहित वण दांन परायण।
देव राज दांनइ लउ परै,
सरणाई सुहडां जणा।
कहीया प्रगट महि मंडले,
सात पुत्र वीरम तणा ॥१॥

वार्त्ता

सात सिरदार जोईयांरा कांम आया। गोगादेजीरा तीन सिरदार कांम आया। गोगादे पुत्र करमसी १. सहसमहल २. केला ३. सैंशा ४. उदैकरण ५. सहसमलरां वेटां पोतरांनै टीबरी गांव पटै छै। केलारां वेटा पोतरांनै पिरज गांव पटै छै। उदैकरण गोगादेजी साथै

कांम आयौ। जेसिंघ पुत्र सूरो १, अल्हो २, नरो ३, तेजो ४, वैरो ५, इणैरा बेटा पोत्रा निनेउ गांव छै।

इतिगोगादे वीरमोत्तरी वार्त्ता।

भाटी रांणंगदे गोगादेजी रै हाथ कांम आयौ। तिणरो बेटौ तिण अरडकमल चुडावतनै मारयौ। तिणरो वैर राव चुडैजी काढीयो। पछै तिण आंटै केलण भाटी मुलतांनरी फोज ल्यायनै नागोर मराई। पछै तिण आंटै राव रिडमलजी आसणी कोट जाय नै भाटी देवराज सातलोत मारीयो। पछै वैर भागौ।

तरै राव रिडमल रो बेटा सहु हुता पिण एक ना थो। रिडमलजी रो बेटो वैर भांजणरी वेका न थो। तरै सारां राठोडां कह्यों भाटी ठाकुरां नाथो नहीं आयो छै। तरै केलण भाटी कह्यों राठोड ठाकुरां मांहरै ही इसडा नथड भथड घणाही छै। तरै सारां राठोडां कह्यो ठाकुरां नाथो रिडमलोत बारै छै। तरै सगलां भाटी ठाकुरां कह्यो इण वातरो किसो सोच छै। नथड भथड केई छै। इण वचनरा आंटा उपरि नाथै अको केलणोत मारीयो। पछै नाथूरां बेटां केलण भाटीरां बेटां घणा दिनतांई वैर धखीयो। पछै राजा रायसिंघ बीकानेररो धणी जेसलमेर परणीयो तरै राजा रायसिंघ रावल भीमनै नाथूरां बेटां पोतरांनै अका केलणौ तरां बेटा पोतरांनै भैला बैसांणीया। तद पूरो वैर भागौ।

राठोड वीरमदेजी गढ सोहांणै जोयांरै मामलै कांम आया तरै मांगलीयाणीजी चुंडानै लेनै मारिवाडि माहे आया छां। नाथ काथलवट माहे कालाउ गांव छै चारणांरो तठै रह्या। आपो प्रकासीयो नहीं। मोल मजुरी करिनै पेट भरै नै चुडोजी वरस ७ तथा ८ मै छै। तिको गांवरा टोगडा चरावै। एक दिन चुंडो टोगडा चरावतो खेजडी हेठै सूतो छै। इतरामै एक कालंदार सरप चुडारा माथा उपरि फण करिनै बैठो छै। तिण समै आल्हो चारण जाति रोहडीयौ खेत देखण नै आंवतो थौ। आगै देखै तो चुडो मारगमै खेजडी हेठै सूतो छै। उणरी निजरि आयौ वासिग राजा। तरै चारण मनमै विचारियौ वात उल्याडी नहीं। इतरा दिनांमै इणडा वडारी ठीक न पडी। किणरो बेटो। किणरो पोतरो। जाति किसी। तरै सोच विचारिनै राजा वासिग नै कह्यौ गोग धरमी बडा चहुवांण आं ताकि हुवो तो भली वात। तरै गोग धरमी तो पयाल दाखल हुवो। तरै चुडा नै जगायनै पूछीयो बाबा तु कुण छै। साच कहि। घणो हठ करिनै पूछीयो। तरै चुडैजी कह्यो हु वीरमदे सलखावतरो बेटो छु। तरै चारण मन मै जांण्यो आवात जुगत छै। अठै चारण सुभराज दीयो। कह्यो बाबा तु मांहरो धणी छै। थारै माथै छत्र बेगो मंडसी। तु धरतीरो धणी हुसी। तरै तु मांनै कांहु देसी। तरै चुडै कह्यो चारटजी राज हुं धरतीरो धणी हुवौ तो राज मांगसो तिकुं देसुं।

तरै चुडानै लेनै चारण मांगलीयांणीजी कनै आयो। मांगलीयांणीजी नै ओलभो दीयो। मांत लिछमी राज मांहरा धणी इतरा दिन वात पल मै राखी। तरै चारण मा बेटां नै कपड़ा कराय दीया नै कह्यो रावल मालाजी रै नाई भीवो प्रधांन छै। तठै चालो तो राजरी जमीत टहरावां।

तरै चारण मांगलीयांणीजीनै चुडानै साथे लेनै महेवै छांना आया । मांगलीयांणीजी तो गांव मै छांना श्रो ताकि राखीया । चुडीनै लेनै भीवा षवास कनै गया । रांम २ कीयौ । हेठा बैठा । तरै भीवै षवास पूछीयो । बारटजी राज श्रो मोटीयार कुण छै ? तरै बारटजी भीवारा कांन मै वात कही । वीरमदेजीरो बेटो चुडौ छै । मांगलीयांणीजी गांव माहे फलांणी जायगा छै । भीवाजी राज चुंडो श्रापरै षोलै छै । वरदासत करावज्यौ । इतरी भलावणि देनै बारटजी सीष कीनी । पछै भीवो षवास मांगलीयांणीजी रै पगां लागा नै षरची दिराई । कितरायक दिन तो इण तरै गुदरांन कीयौ । चुडोजी भीवा षवास कनै रहै सादो रजपूत रहै जिण तरै ।

एक दिन मालोजी दरबार बैठा था । भीवो षवास चुडानै लेनै दरबार गयौ । मुजरो करि नै हेठा बैठा । इतरामै रावलजी नाडाछोड करण नै उठीया । तरै चुडै उठिनै जोडी श्राघी कीनी । तरै रावलजी सांमी निजरि देनै जोयौ । नाडा छोड करिनै पाछा पधारया । तरै भीवानै पूछीयो । भीवा ! श्रो मोटीयार तो कनै कुण छै । तरै भीवै हाथ जोड नै अरज कीनी प्रथीनाथ तकसीर माफ हुवै तो रावलजी मुं मालिम करु । तरै रावलजी कह्यौ हुवै तिका परी कहो । थांरो कह्यो कोई लोपां नहीं । तरै भीवै कह्यौ महाराजरो षांना जाद छोरु छै । वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै । तरै रावलजी वतै भीवानै क्युं कहणीश्रायो नहीं । तरै भीवारा कह्यासु सालोडी गांवरै थांणै मेलीयौ । तिको चुडो रोजिगार पावै ।

अबै चुंडारो दिन वलीयौ । जिका ते वडै तिको पाधरी पडै । चुडारी ठकुराई बधी । चुडोवज वजीयौ । साथ सांमांन राषण लागौ । सो मालै रावल सुणीयौ । तरै भीवा षवास नै श्रोलंभो दीयौ । भीवा तै श्रा किसी उपाधि षाटी । वीरम विराघीरा छोरु वधारया । तरै भीवै कह्यौ । रावलजी सिलांमत श्राप आगै जिण ठाकुर कही छै तिको षरीज हु सी । पिण मै तो घणो बधीयो क्युही दीठो नही । यु कहि नै भीवे वात टलाय दीनी । पछै तीण दिन सुं चुडै भुजाई मांडी । लोकां माहे घणो जस हुवौ । तिको रावलजी घणो दुष पावै । तरै रावलजी सालवडी जांणरो विचार कीयौ । तरै भीवै चुडानै कवाडि मेलीयौ जे रावल मालोजी साल वडी पधारसी । थे सादै सैलवेस माहे रहज्यौ । तितरै मालोजी पिण सालवडी श्राया । तरै चुडारो लवेस सादी सलै दीठौ । तरै रावलजी कह्यो । मां श्रागै जिणां ठाकुरां कह्यो तिणां रै मुहढै धूल पडसी । सरै रावलजी पाछा महेवै श्राया । वांसै चुडो इण हीज भांति वज वजीयौ ।

इतरामै चुडानै माता नागणेची । तूठी प्रतक्ष होय नै चुडासुं वातां करै । जठै चुडो जठै चांमंड । सो एक दिन चांमंड श्राधी रातिरी श्राय नै कहण लागी । चुडा जागै छै ? तरै चुडै कह्यौ माताजी जागु छु । तरै माताजी कह्यो । सवारै जालोर दिसलै मारग व्यापारीयांरा पोठ्या ४ लुणसुं भरीया छै । माहे सोनारी ईंट छै । उपरा लूण छै । तु सोनो उरोलै । तरै चुडो पांच सात श्रादमी मातबर लेनै जालोररा मारगमै जाय बैठो । प्रभाते ही पोठीया लीयां व्यापारी श्राय नीसरी या । चुडो व्यापारीयांनै पकडि नै पोठीया ले श्रायो । मांहसु सोनो काढिनै परची कीनी । बाकीरो सोनो गांवरी सीव मै धरती मै गाडि दीयौ । पोठीया पाछा लूण सु भरिनै महेवै पुहचता कीया । पछै व्यापारीयां नै छोड दीया । तिके रावल

मलीनाथजी कनै पाधरा फिरादु गया। तरै रावलजी चुडानै बुलाय नै हकीगति बूजी। इणांरो माल क्युं लुटांणो। तरै चुडैजी अरज कीवी महाराज राहगीरी दांण मांगतां बोलाचाली हुई। तर यां व्योपारयां दरबाररां चाकरां नै गोता दीया। तिण उपरा दिन १ तथा २ रोक बेसांणीया। ऐ समाचार छै। तरै रावलजी वात सांची मांननै चुडा नै सीषदीनी। व्यापारीयांनै परा धुरकार दीया। भ्रमारो छो। कुडी फिरीयाद क्युं करणी पडै। तरै व्योपारी फीटा पडिनै परा गया। रावलजी दीठो लूण मै माल कुण घालसी। कूडो तोफांन करै छै। अबै चुडाजीरै हाथ माल आयौ। खरचीरी बोहताज हुई। तिण समै मंडोवररी धरतीमै तुरकांणी हुंती। धरती माहे फुटकर सा रजपूत हुंता नै कोटे चाईदा मांगलीया। सिध लइणांरी चोरारी हुंती नै मंडोवर तुरकांरो थांणौ रहतौ। तिको टेचा आसायच मांगलीया सीधलां कना घासरी षरहरी मंगाई सो इणां सगलां ही आंणी। तरै मुगलां ईदांनै कहाडीयौ घासरी षर हरी थे पिण ल्यावज्यौ। तरै ईदां मनमै विचारि दीठौ। धरतीमै लोक कोई न छै नै आ वात भली न लागै। सवारै वले म्हांनै हीज वेगार पकड़सी। तरै ईदां माहे वडेरो हर धवल गोडावत उदो गोडावत ए दोनु भाई बडा रजपूत छै। सो इणां मुगलांसु जबाब कीयौ। म्हे षरहरी आंणसां। घरांनै सीष कीवी।

आंथमणरा भाई बंध बुलाय नै आलोच कीयौ जे मुगल तो जोरै चढीया। आपे इण भांति पडप सकसां नही। जे थे क्युं बल बांधो तो आपे मुगलांनै मारां। तरै सगलां ही भाई बंधां कह्यौ मांहरै थे वडेरा ठाकुर छो। जिका थे करसो तिण बात माहें सगला ठाकुर छां।

तरै ईदां गाडा षडरा एक सौ १०० घाससुभरीया। गाडां माहे पांच २ जणा कट रजपूत बेसांणीया नै गाड्यां जोतर नै मंडोवर गढरी तलहटी जाय उतरीया। हर धवल गोडा डे तउ दो गोडा उत गढ उपर गया। वडेरा मुगल हुंता तिणांनै कह्यौ म्हे षडरा गाडा आंणीया छै। तरै मुगल पांच सात सिरदार हुंता तिके षवास पासवांन लेनै गाडा जोवण नै तलहटी आया। मुगल घात माहे आया दीठा। तरै एकण समचै गाडांरा बंध षोलीया नै लोह उडायो। मुगलांनै तो मारि लीया। मुगलांरा आदमी २०० मरण गया। इणांरा पिण आदमी पांच सात कांम आया। तुरकांरा माभी मरण गया। मादलीयो मारयौ नै फीटी गोट गढ मंडोवर ईदां उरोलीयौ। गढ लेनै ईदै हरधवल उदै मनमै विचारीयौ। भाई बंधा नै कह्यो। गढ आंपणै पांचे पचासे दिने पछै ही रहसी नही। तिणसु गांव सालवडी रावल माला रो भतीज वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै। तिणनै गढ दीजै। तरै सारां ही ईदां मिलनै कह्यौ। राज मांहरै वडेरा छो। रावलीदाय आवै ज्युं करो।

तरै ईदो रायधवल सालवडी आयौ। आयनै चुडाजीनै कह्यो म्हे मंडोवरगढ लीनो छै। राज गढ पधारिनै टीको कढावो। तरै चुडौजी आ वात मांनै नही। जे गढ लेनै मांनै कुण देसी। तरै राय धवल ईदै आपरी बेटीरो नालेर दीयौ। तरै राव चुडो ईदांरै परणीयो। टीको काढिनै गढ मंडोवर हथलेवा मांहि दीयौ। राव चुडो मंडोवररो धणी हुवो। ईदा रजपूत हुवा सो आगै धरती माहे सीधलकै कोटेचा मांगलीया रजपूत हुंता। तिणांनै राव चुंडै काढीया नही। धरती माहे आपरा थका रजपूत राषीया। मांगलीयांणीजी आपरी मा राव चुडैजी महेवासु बुलायं लीया। मंडोवर ठकुराई चुडाजीरी वधती गई।

दुहो

इंदांरो उपगार, कदेय भूलो कमधजां ।
सहु जांणै संसार, मंडोवर हथलेवै दीवी ॥१॥

तठा पछै राव चुंडो नागोर उपरां गयौ । तरै नागोर मांसु तुरक नाठा । नागोर राव चुडै लीधी । पछै राव चुंडो नागोर हीज रह्यौ । ठकुराई निपट जोरै चढी । राव चुडारा पवाडा घणा छै । इतरामै आलो रोहडीयो कालाउ गांवसु चुंडानै धरतीरो धणी हुवो सुणीयौ तरै नागोर राव चुडा कनै आयौ । दिन पांच सात रह्यो । पिण ओलषै नही । तरै चारण समझावणी कीनी ।

दुहो

ऊकाला उकाह, तोनै चीत न आवै चुडरा ।
फाटो फुटो जाह, डीडवांणो डंडीया पछै ॥१॥

इतरा मै राव चुडै दुंहो सुणनै तुरत ओलष्यौ । रावजी उभा होयनै मिलीया । घणो आदर सनमांन दीयो । मास छ मास राषनै चारणनै लाष पसाव दीयौ । षिरज गांव सांसणमै दीयौ । वारटजी सीष कीनी । तिण समीयारी ।

नीसांणी

राव चुडावड राव न रांणा, डगर उठीया वीरांणा ।
वहै मंडोवर कीया धींगाणा, लीया पाटनै डीडवांणा ॥
ढाढी वाचै कागद पत्र, चुडै राव उठाया छत्र ।

पछै राव चुडै मोहिलांरी धरतीसु निपट जोर पुहचायो । तरै राव चुडानै मोहिलां लाडणुरै धणी धुणपुररै धणी आपरी बेटी परणाई । सो राव चुडो मोहिलांणीरै वसि हुवो ।

जगतमै राव चुडो प्रसिध हुवौ । वडो दातार घट दरसणरो आधार हुवो । रजपूतांरा झूलरा कनै रहै । हर हमेस माज रोज दीजै । भुजाई निपट घणी हुई । रोजीनो घ्रित १२ मण लागै । इण माफक बीजोई सराजांम हुवै । तरै भुजाई मोहिलांणीरै हवालै हुई । आप दारु पीनै मतवाला थका रहै । मोहिलांणी भुजाई दिन २ घटांवती गई । चुडाजीरै घरची भुजाईमे निपट सांकडी आंणी । तरै रजपूत था सो तो परा गया । घ्रत सेर अढ़ाई मै भुजाई आंण राषी । मोहलांणी एक दिन राव चुडाजीनै कह्यौ । रावजी म्हे थांहरै किसडेक सवार कीधी छै । वारै मण घ्रत लागतो तिको अढाईमे आंणीयौ छै । तरै राव चुडै कह्यौ । रजपूतांणी तैं तो वात विगाडी । माथा उपरि दुसमण घणा छै । तरै राव चुडै वारै आय नै दीठो । देषै सो रजपूतांरो साथ कोई नही ।

सो चुडे पहला सगलांसु दुसमणीगीरी कीनी थी। तितरै केल्हण भाटी मुलतांन सु सालमखाँनतु ले आयो। सांषलो देवराजमुलतांन जायनै फोज ले आयो। फोजरा मुषी होयनै राव चुडा उपरि आया। तरै चुडानै आपरां रजपूतां कह्यो। रावजी सिलांमति साथ थोड़ो छै। आप नीसरो तो भलो कांम करो। तरै रावजी कह्यो। वडा रजपूतां नीसरिनै जावां कठी। तरै आप चुडोजी मरण रुपी होय छै ठा नै कवरांनै काढणरो मतो कीयौ तरै कवर रिडमलनै बुलायनै चुडैजी कह्यौ। म्हे तो अठै मरण रुपी हुवा छां पिण मांहरो मन ठोड न छै। तरै कवर रिडमलजी कह्यो रावजी सिलांमति राजरा मन मांहि हुवै सो फुरमावै। आप फुरमावसो तिक्यु म्हे करिसां। तरै राव चुडै रिडमलजीनै कह्यौ मांहरो जीव मरतां सोरो जो नीसरै जो मोहिलांणीरा वेटा कांनानै टीको द्यो तो।

तरै रिडमलजी कह्यौ राजरो जीव सो हरो करो। म्हे कांनानै टीको देसां। जठासुधो कांनो धरतीरो धणी रहसी तठा सूधो ऊं कांनारी धरतीमै ऊभो रहिनै पांणी न पीयां। कहिनै कवरां इतरो सो साथ नीसरीयो नै राव चुडोजी १२ आसांमीयांसु वाजिनै नागोर कांम आया लारै सतीयां नागोर हुई संवत् १४६५ रा बैसाख वदि १४। राव चुडा पुत्र रिडमल १, भीम २, रिणधीर ३, अरडकमाल ४, पचांयण ५, सतो ६, कांनो ७, रांमो ८, पूनो, ९, सिवराज १०, लुमो ११, विजो १२, भोपत १३, राजिग १४।

कवित्त

रिडमल राजिगराव सतोहर चंद पटंतर,
रावत गुरु रिणधीर भुजां बल भीम समंगल।
कांनो अरडकमाल पुनो पोहवी अरिगंजण,
सहसमाल अर विजो लषे दल लुढो भंजण।
सिव राज रांमदे गोपाल कहि भोपति सेना सबला,
चवदै ही राव चुडा तणा हेक हेकसु अगला।

वार्त्ता

संवत् १४३२ राव रिडमलजीरो जनम संवत् १४६५। राव रिडमलजी चुडाजी टीकै बैठा। मुगल सेलमषांन मुलतांनरो। सोवायत राव चुडा नै मारिनै अजमेर रै पीररी जात आयौ। सो जात करिनै पाछो वल्यौ। तरै राव रिडमलजी साथ भेलो करिनै राव चुडारा वैरमै सेलमषांननै कुट मारयौ।

इति राव चुडारी वार्त्ता

सम्पादकीय टिप्पणी

परिशिष्ट संख्या २ के रूप में वीरवांण सम्बन्धी तीन राजस्थानी वार्तायें दी गई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१ वीरमदे सलखावतरी वार्ता।

२ गोगादे वीरमोतरी वार्ता।

३ राव चूण्डारी वार्ता।

वीरवांण का विषय इतिहास की दृष्टि से बहुत उलझा हुआ है। अब तक हमारे इतिहासकारों ने हजारों की संख्या में प्राप्त होने वाली ऐसी वार्त्ताओं को कपोलकल्पित मान कर इनको महत्व नहीं दिया है। वास्तव में ऐसी वार्ताओं का ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व हैं।

"वीरवांण" काव्य के अनेक अंश भी इन वार्ताओं में मिलते हैं, जिनसे काव्य की लोकप्रियता और सम्बन्धित विषय का ऐतिहासिक महत्व प्रकट होता है। साथ ही प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों से भी इन वार्ताओं की पुष्टि होती है।

परिशिष्ट ३

पाठान्तर

			पृष्ठ	पंक्ति
१.	तूझ महर परताप	दूहा १	१	२
२.	गाउं हूँ सलखाणियां	,, २	,,	२
३.	सुणी जिती सारी कहूँ लहूँ न झूठ लगार	,, ३	,,	१
४.	वीरम जुद्ध विचार	,, ३	,,	२
५.	सोभ जैत समियांण	,, ४	,,	१
६.	कुल में किरणाला	नीसाणी १	२	१
७.	वरवीर वडाना	,, ,,	,,	२
८.	साथलियां दल सामटा विरदां रुखवाला	नीसांणी १	२	३
९.	दल पारथ वाला	,, ,,	,,	४
१०.	देश दसूं दिस दाविया कीधा धकचाला	,, ,,	,,	५
११.	केवी धस गिर कंदरा	,, ,,	,,	६
१२.	जैत चढ़े गुजरात कूं	,, २	,,	१
१३.	चड धूर चलाया	,, ,,	,,	२
१४.	चित उजल चोगान में तंबू तणवाया	,, ,,	,,	४
१५.	श्रवैनंदे मीलाणका	,, ,,	,,	५
१६.	देस दिसाया जैत कूं	नीसाणी २	,,	२
१७.	गोयल षेड गमाड़िया उंणहूँत सवाई	,, ,,	,,	३

				पृष्ठ	पंक्ति
१८.	घरजासी घर लुट्टसी	नीसांणी	३	२	४
१९.	अषानंदा एकठा	,,	४	,,	२
२०.	हुकम'ज दियो हजूरियां	,,	,,	,,	३
२१.	चल करंतां चूक व्ही अरि काट उड़ाया	,,	,,	,,	४
२२.	राड़धरो कायम कियो	दूहा	५	३	१
२३.	लंगर लघू लार वहै	नीसाणी	५	,,	१
२४.	मालवियो वलराव है	,,	,,	,,	२
२५.	राज करै ध्रम रीत सों	,,	,,	,,	३
२६.	थित मंगल थाई	,,	,,	,,	४
२७.	मंडलीकां ज्यूं मालदे	,,	,,	,,	६
२८.	मिणधर रावल माल	दूहा	६	,,	२
२९.	रावल मालो राजवी राज करै ध्रम रूप	दूहा	७	,,	१
३०.	दत्तक भाव रचषा दुनी	,,	८	,,	२
३१.	तवेलै मालहा तणैं	,,	९	,,	१
३२.	तिकां दिनां मणियर तिको	,,	१०	,,	१
३३.	घर घर ब्यावै घोड़ियां वधै वछेरा वेस	,,	,,	,,	२
३४.	पड़ै मांहि नाहीं पड़ै घाट इसै घोड़ाहं	,,	११	४	१
३५.	ऐसा आघोड़ाह	,,	,,	,,	२
३६.	नग घर मीणियं नीपजै	,,	१२	,,	१
३७.	तीज तणै मगरै त दिन सुता'ज लेगा सात	,,	१६	,,	२
३८.	मांडल री धर मेलिया	,,	१७	,,	२
३९.	कंवर हूँत हेरू कहै ध्रुवै ज सुण धणियांह	,,	१८	,, ,,	,, १
४०.	कथ हेरूकी सुण कंवर	नीसाणी	६	,,	१
४१.	ऐहड़ा आपांणी	,,	,,	५	३
४२.	चढियो मालाणी	,,	,,	,,	५
४३.	तीजणियां सब आवजो	,,	,,	,,	६
४४.	कल मैहमद रै ईद री	,,	,,	,,	१०
४५.	ए तीजणियां एकठी	,,	,,	,,	११

		पृष्ठ	पंक्ति
दलै भेज परधान कूं	निसाणी ४३	२९	१
तुम हिन्दू गुना करो	,, ,,	,,	७
गाम धणियां हंदे	,, ,,	,,	८
आय परधानसूं अखियो	,, ४४	,,	४
दले अरु देपालकूं	,, ,,	३०	७
वीरम न्याय न हल्लही	,, ,,	,,	८
घोसै फेरूं घाजरू	,, ,,	,,	१०
दोनूं तरफांरों दलो	दूहा ११२	,,	१
झलिया रहे न जोइया	,, ,,	,,	२
दिन अगै पसरादियै	निसाणी ४५	,,	१
माणस पनरै मारिया	,, ,,	,,	३
झरतां हत्तां जोइया कूकाऊ आया	,, ,,	,,	४
सो सारा साहियांण मैं	,, ,,	,,	५
अधी ऊच आपां दई बंधी अपणाया	,, ,,	,,	६
दस हजार चढियां दुझल	निसाणी ,,	,,	१०
लषवेरे ऊपर लहर	,, ,,	,,	११
यूं देपाले अखियो सुणो दला लुणियांणी	,, ४६	३१	१
वास चोवीस वसाविया	,, ,,	,,	२
मुदै जवाई मारियो	दूहा १२३	,,	१
सूंप परी साहियांण	,, ,,	,,	२
दुसह वचन कहिया दलै	,, १२५	,,	१
तिण समीपै पूगल तणो	,, ,,	,,	२
बूझणरै दोय वेटियां	नीसाणी ४७	,,	१
सो मांगी देवराज यूं	,, ,,	,,	४
रांनल मुझकूं राजवण	,, ,,	,,	५
कहियो जद कसमीर दे	,, ,,	,,	७
हूँ परणां सूं हिंदवां	,, ,,	,,	८
सो कुण हिदू हम सूणां जिसकूं परणालै	,, ,,	,,	९
परणां सूं सगपण करे	,, ,,	,,	१०
जद पाछो कहियो जसू	,, ,,	,,	११

		पृष्ठ	पंक्ति
वीरम सांहस तोलिया	नीसाणी ५२	,,	२
छूट पड़ी किरत्रांणियां वीमाह न होई	,, ,,	,,	३
अवलज सूज़ो आषियो सो सांची होई	,, ,,	,,	४
बूकणका घर बोटिया साला सातूई	,, ,,	३४	५
बोतल हातल वेटियां वीमाह न होई	,, ,,	,,	६
आविश दल्लेषां आगै	,, ५३	,,	१
मूंभ गनायत मारिया जुध छुट्टी जागै	,, ,,	,,	३
वीरम सूं जुध वाजसां	,, ,,	,,	४
ऐ वल धारे ऊठिया	,, ,,	,,	५
उजवांला घर आपणी	,, ,,	,,	६
हैवर दोय हजारियां	,, ५४	,,	२
सहंस दसूं ही सांडिया	,, ,,	,,	३
लाख पचासां लूटिया	,, ,,	,,	४
मोटल सिरषा मारिया	,, ,,	,,	५
जोइयां सूं जुध जूटवा	निसाणी ,,	,,	६
मावै न छाती मधू	,, ,,	,,	७
भलिया रहै न जोइया	,, ,,	,,	८
दोऊं दिसरा दुष्र दलो	,, ,,	,,	९
मदपूर मचोल	,, ,,	३५	१३
कठा लगा कथ कूड़	सोरठा १३५	,,	१
लष वारै वीरम कनै	नीसाणी ५५	,,	२
आयाकूं आदर दिया	,, ,,	,,	४
लष वेरो रहवास कूं	,, ,,	,,	५
उसमांसूं वीरम तनै	,, ,,	,,	७
चोवी गाम चबूतरा	,, ,,	,,	९
षोसे इकसठ षाजरू	,, ,,	,,	१०
धरनीहि रहाया	,, ,,	,,	११
हाती रहै न जूटिया	,, ,,	,,	१२
मिलिया चिड़ियां महलै	,, ,,	,,	१३

		पृष्ठ	पंक्ति
वीरम सूं जुध बाजत्रा चित चेत न चल्लै	नीसाणी ६२	३८	७
जांरो सरणो ताकियो धणियाप धराईं	,, ६३	,,	२
वेहिज मारण ऊठिया सोहीज सहाईं	,, ,,	,,	३
मांगलियांणी मोटको	,, ,,	,,	४
आंपां कुसले काढिया	,, ,,	,,	५
मदु वै वै दिन मारकां	,, ,,	,,	६
कुछ वीरम कूं नह कैया	,, ६४	३९	१
बारै गांव ज बगसिया	,, ,,	,,	२
सात हजारां सांढिया दिन हेक दगाइ	,, ,,	,,	३
मोटल सिरषा मारिया जिण सकड जवाई	,, ,,	,,	४
षाधा षोसे षाजरू	,, ,,	,,	५
मधू अष्षे मारको संच	,, ,,	,,	७
गुना अनेकां जारिया दल्लै लुणियाणी	,, ६५	,,	१
सो फरहास कटाविया	,, ,,	,,	३
षाफर माल कुरांण कूं	,, ,,	,,	४
दुम्झल मदु देपालदे	,, ,,	,,	५
अपरा बांधर आपणी केदेहां पाणी	,, ,,	,,	७
जावे घरसूं जोईया कै खूटै सलषाणी	,, ,,	,,	८
हरषत मन सूरा हुवा	,, ६६	,,	३
कहिया भड़ भायां दलै	दूहा १४३	,,	१
वीरम सूं जासो विहण	,, ,,	,,	२
लषवेरै जाजो मती	,, १४४	,,	२
साकुर अरपा पांडवनै	नीसांण ६७	४०	१
मदू सेर जवाद पर	,, ,,	,,	३
बगतर कुठा नीड़िया	,, ,,	,,	५
सार छतीसूं साभ रात इम मदुवे आया	,, ,,	,,	६
जैतलसूं देपालदे सभ	,, ,,	,,	८

		पृष्ठ	पंक्ति
माला सूं चूंडो मिलै	नीसाणी १०४	५१	३
मन चिन्त मिटावै	,, ,,	,,	६
उगमसी नै आखियो	दूहा १५१	,,	१
मंडोवर (मैं) दी कर महर	नीसाणी १०५	५२	५
चांमंडरै बरसूं करै	,, १०६	,,	३
चंडी वर हुय चुंडकूं	,, ,,	,,	६
संग चूंडा लाया	,, ,,	,,	८
छल बींधा बल दाखिया	,, ,,	,,	९
हर बल ईंदा रांण हुय	,, ,,	,,	१०
ऐम तलेठी आविया	,, ,,	,,	११
सो गाडा उगम सरब गड भितर लाया	,, ,,	,,	१३
मुगला दोय हजार कूं	,, ,,	,,	१६
राज मंडावर चूंड कूं	,, ,,	,,	१७
रिघू मंडोवर राज	दूहा १५३	,,	२
ऊगम चूंडे आगला	नीसणी १०७	५३	१
किलमां थांणा काटिया	,, ,,	,,	३
इदांजिम करजो अवर	दूहा १५४	,,	१
दिवी मंडोवर दायजे चूंडो चंवरी चाड़	,, ,,	,,	२
सेत्रावैसूं भ्रात सब	दूहा १५५	,,	१
जसो गोग देवराज	,, ,,	,,	२
धर	दूहा १५६	,,	१
मंडोवर रो भोमियो	,, ,,	,,	२
सजियो गोग सकाज	दूहा १५७	,,	२
उठिदो दैतज कालियो एही गल ऊचर	नीसाणी १०८	,,	२
महर हुई खिरकर मया	,, ,,	,,	८
वप गोगै वल वादियो	,, ,,	,,	९
जपियो जाल धर	,, ,,	,,	११
बल हाली कल जाट सूं	नीसाणी १०९	,,	१
ऊठ दलो घर आवियो	,, ,,	,,	६
ऊदल धीरै जांन संग पूगल पाघारी	,, ,,	,,	७

		पृष्ठ	पंक्ति
चूंडो हेरूसूं चवै पाछो वचन प्रियोग	दूहा १५६	५५	१
हूँ मामो मारू नहीं	,, ,,	,,	२
घर चित जा तूं धीरियां	दूहा १६०	,,	१
धीरप दे मिल धीरसूं	दूहा १६१	,,	१
सुगन लेट चढियो सरस वेर लेण वरवीर	,, ,,	,,	२
चढ घूर चलाया	नीसाणी १११	,,	२
गड गड चबंक गाजिया	,, ,,	,,	३
ग्रस षडिया उचां वरै	,, ,,	,,	४
वैडा ऊजड वाटतै	,, ,,	,,	५
भाला ग्राव ठहकिया	,, ,,	,,	७
सूतां फोही सवद सुण	,, ,,	,,	११
ग्रव गल सीहो ऊचरै	,, ,,	,,	१५
ग्रलगासूं ग्रस षेड़िया	नीसाणी ११२	,,	१
ऊठ वेदला जोइया सूतो कन जंगे	,, ,,	,,	२
निस ग्राधी पल नेमियो	दूहा १६२	५६	१
घण सिर फूटै घट	,, ,,	,,	२
पांगां किरमर पाकड़े रिदे जालधर रट्ट	दूहा १६३	,,	१
लेवण वीजल वट्ट	,, ,,	,,	२
पूरां ही बल हट्ट	दूहा १६४	,,	१
ईसां पिलंग घरट्ट	,, ,,	,,	२
नवगढ पत्त नरेस	दूहा १६५	,,	१
देउ सषियां साथ ले	नीसाणी ११३	,,	१
वाधावे गोगे कमध	,, ,,	,,	२
वैर पितारो वालियो	,, ,,	,,	३
तिलक कियो इण कारणै	,, ,,	,,	४
कहियो जद गोगे कमध	नीसाणी ११४	,,	१
सिर दूं मारो काटकर	,, ,,	,,	२
हैसु पमंग पड़ाहियो	,, ,,	,,	४
पवरां मेलूं धीरपै	,, ,,	,,	५
भिड वैनूं भाई	,, ,,	,,	६

		पृष्ठ	पंक्ति
बेठां हूत सवाय	दूहा १६६	५६	१
हैसू लियो बचाय	,, ,,	,,	२
तूं जाया दल राजदा	नीसाणी ११५	५७	२
पमंग चढ़ै पड़ाहिये कर घूररो लगाम दे	,, ,,	,,	३
पिठ्ठ न मंडे पलांण	दूहा १६७	,,	१
पुगल जाइये पड़ाइया	,, ,	,,	२
गोगै दल्लो मारीयो	दूहा १६८	,,	१
काहलियो केहरकली	दूहा १७०	,,	१
विडे गांउ जड़ वाट	,, ,,	,,	२
काह कट्टकां श्राह सुण सजियां भड़ सारा	नीसाणी ११६	,,	१
ऊडै रज असमान मैं	,, ,,	,,	३
वेढंगी षडिया विडंग पथ	,, ,,	,,	५
हेक मना हुय हालिया	नीसाणी ११७	,,	१
असी कोस अफालिया क्या लग्गै कारी	,, ,,	,,	२
वणिया दुलहा वाहरू वप वैर विचारी	,, ,,	,,	३
गोग लछु सिर ऊतरै	,, ,,	५८	५
धीर सुणै अरि धूधड़ै लंग सषड़ै लारी	,, ,,	,,	६
चढ़िया उदल धीर दे धरती धूजांणी	नीसाणी ११८	,,	२
हीरालो न पड़ाहियो	,, ,,	,,	३
आय लछूसर उतरा गहमें भरियोड़ा	नीसाणी ११६	,,	१
दूर अचाणक देषिया	,, ,,	,,	३
रिण बज्जे रोड़ा	,, ,,	,,	४
भूषा तिरसा आपरा	,, ,,	,,	५
दलिया हाथ न आवसी	,, ,,	,,	६
थहिया दल पाला	नीसाणी १२०	,,	१
रोसैल रढ़ाला	,, ,,	,,	३

		पृष्ठ	पंक्ति
मृग सिंचाण येह ज्यूं	नीसांणी १२०	५८	५
कुहा पांण कमुंस कर	,, १२१	,,	३
अभंग लुणाणी ऊठिया	,, ,,	,,	४
पोह धर मुक्यों पांण	दूहा १७१	,,	१
हिय गांणाई मलकिया	,, ,,	,,	२
जुड़ा पल बक्के	नीसांणी १२२	५९	१
सेल सचक्का यूं सहै किरमाल कलक्के	,, ,,	,,	२
फेमर खलक्के	,, ,,	,,	३
मुप मारस वक्के	,, ,,	,,	४
तेग धसी मह भीखूंहे पड़ लोथ दहक्के	,, ,,	,,	५
सल जमरांण जलक्के	,, ,,	,,	६
रथ भाण ठहक्के	,, ,,	,,	७
आंण चढ़िया चक्के	,, ,,	,,	८
जुगिण जमा खाटे सीढल जस चक्के	,, ,,	,,	९
धरणा छुरी अन्छरा येहूं हकबक्के	,, ,,	,,	१०
होनूं आंदां पेंग दे गोढी धकधक्के	,, ,,	,,	११
जांगाक खरिय पयालदा मुप पालया तिरक्के	,, ,,	,,	१२
भगनी पढ़िया वीरदे धायक सुप धक्के	,, ,,	,,	१३
नर गोगा नक्के	,, ,,	,,	१४
जदन दियं आहड़ै	नीसांणी १२३	,,	२
कंवर भीड़या कारणों	,, ,,	,,	३
ओध वेहू तिण तुड़िया	,, ,,	,,	४
पड़िया अस साड़ पांवड़ी	,, ,,	,,	५
सिड़ियाल सदा सड़	,, ,,	,,	६
पंचमियां पर पड़िया तिण तेगा सड़	,, ,,	,,	७

सम्पादकीय टिप्पणी

वीरवांण का कर्त्ता ढाढी बादर विशेष शिक्षित नहीं ज्ञात होता। साथ ही एक ढाढी की कृति होने से इसको काव्य शास्त्र की दृष्टि से शुद्ध करने और प्रतियां लिखने के प्रयत्न भी बहुत कम हुए। मूल पाठ में किसी तरह का परिवर्तन करना हमने वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नहीं समझा है। परिशिष्ट ३ के अन्तर्गत हमने देवगढ़ प्रति के पाठान्तर दिये हैं जिनसे अर्थ समझने में सुविधा रहती है।

वीरवांण में काव्य-शास्त्र की दृष्टि से अनेक भूलें दिखाई देती हैं किन्तु इस काव्य की पूरी शुद्ध प्रतियाँ नहीं उपलब्ध हो जाती तब तक मूल पाठ में फेर-बदल करना उचित नहीं ज्ञात होता।

परिशिष्ट ४

मुहणोत नैणसी का वक्तव्य

"बीरम महेवे के पास गुढ़ा बांधकर रहता था। महेवे में खून कर कोई अपराधी बीरमदेव के गूढ़े में आ शरण ले लेता तो वह उसे रख लेता और कोई उसको पकड़ने न पाता। एक समय जोइया दल्ला भाईयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया; बहुत दिनों तक वहां रहा और विवाह भी कर लिया। अब उसकी इच्छा हुई कि स्वदेश में जाना चाहिये, अपनी स्त्री को लेकर चला, मार्ग में महेवे पहुँचकर एक कुम्हारी के घर डेरा किया। कुम्हारी से कहा कि बाल बनाने के वास्ते किसी नाई को बुला दे। वह नाई को ले आई, बाल बनवाये। नाई की जात चकोर होती है, चारों ओर निगाह फैलाई, अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री देखी और यह भी भांप लिया कि द्रव्य भी बहुत है, तुरन्त जाकर राव जगमाल से कहा कि आज कोई एक धाड़ेती यहां आकर अमुक कुम्हार के घर उतरा है, उसके पास एक अच्छी घोड़ी है और स्त्री भी उसकी निपट सुन्दर मानों पद्मनी ही है। जगमाल ने अपने आदमी भेजे कि जाकर खबर लावो कि वह कौन है। गुप्तचर कुम्हार के घर आकर सब देख-भाल कर गये। तब कुम्हारी ने दल्ला को कहा कि ठाकुर! तुम्हारे पर चूक होगा। दल्ला उसका अभिप्राय न समझा, पूछा क्या होगा? बोली, बाबा तुम्हें मारकर तुम्हारी घोड़ी और गृहिणी को छीन लेंगे।

दल्ला—कौन?

कुम्हारी—इस गांव का ठाकुर।

दल्ला—किसी तरह बचाव भी हो सकता है?

कुम्हारी—यदि बीरमजी के पास चले जाओ, तो बच जाओ।

उसने चट घोड़ी पर पलाण रखा और स्त्री को लेकर चल दिया, बीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। जगमाल के आदमी आये, परन्तु उसको वहां न पाकर लौट गये और कह दिया

कि वह तो गुढ़े को चला गया। पांच-सात दिन तक वीरम ने दल्ला को रक्खा, उसकी भले प्रकार पहुनई की, विदा होते वक्त उसने कहा कि वीरम! आज का शुभ दिवस मुझे आपके प्रताप से मिला है, जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी पहुँचूंगा मैं तुम्हारा रजपूत हूं। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे अपने घर पहुँचा दिया।

मालाजी के पौत्रों और वीरमदेव से सदा खटाखट होती रहती थी, इसलिए महेवे का वास छोड़कर वीरम जैसलमेर गया; वहां भी ठहर न सका और पीछा नागोर आया, जहां यह लगा गांवों को लूटने और धरती में बिगाड़ करने, परन्तु जब देखा कि अब यहां रहना कठिन है तो जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुँचा। ऊदा ने कहा कि वीरमजी! मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं तुमको रख सकूं, तुम आगे जाओ, तुमने नागोर में उजाड़ किया है सो यदि वहां का खान बाहर लेकर आवेगा तो उसको मैं रोक दूंगा। तब वीरम जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागोर का खान चढ़कर आया, जांगलू के घेरा लगाया, ऊदा गढ़ के कपाट मूंद भीतर बैठ रहा। खान ने उसे कहलाया कि मालव और वीरम को हाजिर कर। तब ऊदा खान से मिलने के वास्ते गया और वहां कैद में पड़ा। उससे वीरम को मांगा तो कहा कि "वीरम मेरे पेट में है, निकाल लो।" खान ने ऊदा की मां को बुलवाया और उससे कहा कि या तो वीरम को बता नहीं तो ऊदा की खाल खिंचवाकर उसमें भुसा भरवाऊंगा। ऊदा की माता ने भी वही उत्तर दिया कि "वीरम ऊदा की खाल में नहीं है, उसके पेट में है सो पेट चीर कर निकाल लो।" उसके ऐसे उत्तर से खान खुश हो गया, अपने साथ वालों से कहने लगा—"यारो! देखा राजपूतानियों का बल, कैसी निधड़क होती हैं।" ऊदा को कैद से छोड़ा और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया। वीरम जोहियों के पास जा रहा। जोहियों ने उसका बहुत आदर किया, जाना कि यह आफत का मारा यहां आया है। पास खर्च न होगा सो दाण में उसका विस्वा (भाग) कर दिया और बड़ा स्नेह दरसाया। वीरम के कामदार दाण ऊगाहें तब कभी कभी तो सारा का सारा ले आवे और जोहियों को कह दे कि कल सब तुम ले लेना। यदि कोई नाहर वीरम की बकरी मार डाले तो एक के बदले ११ बकरियाँ ले लेवें और कहे कि नाहर जोहियों का है। एक बार ऐसा हुआ कि आभोरिया भाटी बुकण को जो जोहियों का मामा व बादशाह का शाला था और अपने भाई सहित दिल्ली सेना में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा, वह भाग कर जोहियों के पास आ रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत माल, तरह तरह के गदेले गलीचे और बढ़िया बढ़िया वस्त्राभूषण थे। वे वीरम ने देखे और उनको लेने का विचार किया। अपने आदमियों को कहा कि अपन बुकण को गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर मार डालें और माल ले लेवें। राजपूत भी सहमत हो गये। तब वीरम ने बुकण को कहा कि कभी हमें गोठ तो जिमाओ। बुकण ने स्वीकारा, तैयारी की और वीरम को बुलाया। वहां पहुँचते ही वह बुकण को मार उसका माल असबाब और घोड़े अपने डेरे पर ले आया। तब तो जोहियों के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह जोरावर आदमी घर में आ घुसा सो अच्छा नहीं है। पांच सात दिन पीछे वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड़ कटवा

डाला। उसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुँची, परन्तु वे चुप्पी साध गये। कहा हम वीरम से झगड़ा करना नहीं चाहते हैं। एक दिन वीरम ने दल्ला जोहियों ही को मारने का विचार कर उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक छोटी हलकी गाड़ी) पर बैठकर आया जिसके एक तरफ घोड़ा और दूसरी तरफ बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। उसने जान लिया कि चूक है, सो जल के लोटे में दातन डाल कर वह लोटा दल्ला के पास भेजा। वह समझ गया कि दगा है। चाकर से कहा कि मेरा पेट कसकता है सो जंगल जाऊंगा, फिर खरसल पर बैठ घर की तरफ चला। थोड़ी दूर पहुँच बैल व खरसल को तो वहां छोड़ा और आप घोड़े सवार हो घर पहुंच गया। घोड़े के स्थान पर एक राठी जुतकर खरसल खींचने लगा, वीरम अपने राजपूतों को इकट्ठे कर रहा था। जब वे सलाह कर आये और दल्ला को वहां न देखा तब पूछा वह कहां गया है? चाकर ने कहा जी! उसका पेट कसकता था सो जंगल गया है तब तो दलिया गहलोत बोल उठा कि दल्ला गया। वीरम ने कहा कि खरसल चढ़ा कितनी दूर गया होगा, चलो अभी पकड़ लेते हैं। राजपूत ने कहा खरसल छोड़ घोड़े पर चढ़ गया। इन्होंने एक सवार खबर के लिए भेजा। उसने पहुंचकर देखा तो सचमुच एक तरफ बैल और दूसरी तरफ आदमी जुता खरसल खींच लिये जाते हैं। उसने लौटकर खबर दी कि दल्ला तो गया। सब कहने लगे कि भेद खुल गया, अब जोहिये जरूर चढ़कर आवेंगे। दूसरे ही दिन जोहियों ने इकट्ठे होकर वीरम की गायों को घेरा। ग्वाल आकर पुकारा, वीरम चढ़ आया। परस्पर युद्ध ठना, वीरम और दयाल जोइया भिड़े वीरम ने उसे मार तो लिया परन्तु जीता वह भी न बचा और वहीं खेत रहा।

वीरम के साथी राजपूत गांव बड़ेरण से वीरम की ठकुराणी को लेकर निकले। मार्ग में जहां ठहरे वहां धाय ने एक आक के झाड़ के नीचे वीरम के एक वर्ष के बालक पुत्र चूंडा को सुलाया, परन्तु चलते वक्त उसको उठाना भूल गयी। जब एक कोस निकले गये, तब बालक याद आया, तुरन्त एक सवार हरीदास दल्लावत पीछा दौड़ा। इस स्थान पर पहुंचकर क्या देखता है कि एक सर्प चूण्डा पर छत्र की भांति फण फैलाये पास बैठा है। यह देख पहले तो हरिदास को भय हुआ कि कहीं बालक पर आपत्ति तो नहीं आ गई है। जब थोड़ा निकट पहुंचा तो सर्प वहां से हटकर बांबी में घुस गया और सवार चूण्डा को उठाकर ले आया, माता की गोद में दिया और सारी रचना कह सुनाई। आगे जाते हुए मार्ग में एक राठी मिला। उसको सब हकीकत कह इसका फल पूछा। राठी ने कहा यह बालक छत्रधारी राजा होगा। वे लोग पड़ोलियां में आये। वहां राजा लोग इकटठे हुए। चूण्डा की माता ने कहा कि मेरे पति से दूरी पड़ती है, मुझे तो उसी से काम है, इसलिए मैं सती होऊंगी। फिर चूण्डा को धाय के सुपुर्द कर कहा कि "पृथ्वी माता और सूर्यदेव इसकी रक्षा करें। तू इसे लेकर आल्हा चारण के पास चली जाना।" फिर चूण्डा की माता और मांगलियाणी दोनों सती हुई और साथ सब बिखर गया। चूण्डाजी के दूसरे तीन भाई गोगादेव, देवराज, और जैसिंह को उनके मामा उनकी ननिहाल को ले गये और

चूण्डा को आल्हा चारण के पास भेज दिया ! जहां धाय चूण्डा को सदा गुप्त रखती और भलीभांति उसका पालन पोषण करती थी।

राव वीरमदेव के चार राणियां थी ? भटियाणी जसहड़ राणा दे, जिसका पुत्र राव चूण्डा; २–लालां मांगलियाणी कान्ह केलणोत की बेटी, जिसका पुत्र सत्ता; ३–चन्दन आसराव रिणमलोत की बेटी, जिसका पुत्र गोगादेव; ४–इंदी लाछां, अगमसी सिखरावत की बेटी, जिसके पुत्र देवराज और विजपराज।

राव चूण्डा–जब धाय चूण्डा को लेकर कालाऊ गांव में आल्हा चारण के पास पहुँची, तो उससे कहा कि बाई जसहड़ ने सती होने के समय तुमको आशीष के साथ यह कहलाया है कि इस बालक को अच्छी तरह रखना, इसका भेद किसी पर प्रकट मत करना मैंने इसको तुम्हारी गोद में दिया है। चूण्डा वहां धाय के पास रहने लगा। कोई पूछता तो चारण कहता कि यह इस रजपूतानी का बालक है। इस प्रकार चूण्डा आठ नव वर्ष का हो गया। एक दिन बर्सात के दिनों में ग्वाल गांव के बछड़ों को लेकर जल्दी ही जंगल में चराने को चला गया था और चारण के बछड़े घर पर रह गये, तब आल्हा की माता ने कहा "बेटा चूण्डा ! जा इन बछड़ों को जंगल में दूसरे बछड़ों के शामिल तो कर आ।" चूण्डा उनको लेकर वन में गया, परन्तु दूसरे बछड़े उसको कहीं नजर न आये, तब तो रोने लगा। पीछे से चारण घर में आया चूण्डा को न देखकर माता को पूछा कि चूण्डा कहां है ? कहा बछड़े छोड़ने वन में गया है। चारण कहने लगा, माता तूने अच्छा नहीं किया, चूण्डा को नहीं भेजना चाहिए था। जब दूसरे बछड़े न मिले तो अपने बछड़ों को वहीं खड़े कर चूण्डा एक वृक्ष की छाया में सो गया। पीछे से आल्हा भी ढूंढता ढूंढता वहां पहुँचा तो देखा कि बछड़े खड़े हैं, चूण्डा सोता है और एक सर्प उस पर छत्र किये बैठा है। मनुष्य के पांव की आहट पा नाग बिल में भाग गया, चारण ने जा चूण्डा को जगाया, कहा बाबा तू जंगल में क्यों आया, घर पर चल। घर आकर मां को कहा कि अब कभी इसको बाहर मत भेजना। फिर चारण ने एक अच्छा घोड़ा लिया, कपड़े का उत्तम जोड़ा बनवाया, शस्त्र लाया और चूण्डा को सजा सजू कर महवे रावल मल्लिनाथ के पास ले गया। मालाजी का प्रधान और कृपापात्र एक नाई था। आल्हा उससे जाकर मिला, बहुत कुछ कहा सुनी की, तो नाई बोला, रावलजी के पावों लगाओ। शुभ दिवस देख चारण चूण्डा को राव मालाजी के पास ले गया और उसने बहुत कुछ धैर्य बंधाकर अपने पास रक्खा। चूण्डा भी खूब चाकरी करता था। एक दिन रावल के पंलग के नीचे सो रहा और नींद आ गई। जब मालाजी सोने को आये तो पलंग तले एक आदमी सोता पाया। जगाया, चूण्डा को देख रावलजी राजी हुए। अवसर पाकर नाई ने भी विनती की कि चूण्डा अच्छा रजपूत है इसको कुछ सेवा सौंपिये। माला ने चूण्डा को गुजरात की तरफ अपनी सीमा की चौकसी के वास्ते नियत किया और अपने भले राजपूतों को साथ में दिया। तब सिखरा ने कहा कि रावलजी मुझको समझकर साथ देना। रावलजी ने कहा कि जो हमारी आज्ञा है। घोड़ा सिरोपाव देकर चूण्डा को ईंदे राजपूतों के साथ बिदा किया। वह काछे के थाने पर जा

बैठा और अच्छा प्रबन्ध किया। एक बार सौदागर घोड़े लेकर उधर से निकले। चूण्डा ने उनके सब घोड़े छीन लिये और अपने राजपूतों को बांट दिये, एक घोड़ा अपनी सवारी को रक्खा। सौदागरों ने दिल्ली जाकर पुकार मचाई, तब वहां से बादशाह ने अपने अहदीं को भेजा कि घोड़े वापस दिलवादो। उसने ताकीद की, माला पर दबाव डाला, तब उसने चूण्डा के पास दूत भेजा घोड़े मंगवाये। चूण्डा बोला कि घोड़े तो मैंने बांट दिये, केवल यह एक घोड़ा अपनी सवारी के लिये रक्खा है सो ले जाओ। लाचार माला को उन घोड़ों का मोल देना पड़ा और साथ ही चूण्डा को भी अपने राज्य में से निकाल दिया। वह ईंदावाटी में ईंदों के पास आकर ठहरा और वहां साथी इकट्ठे करने लगा। कुछ दिनों पीछे डीडणा गांव लूट लाया। तुर्कों के पडिहारों से मंडोवर छीन ली थी और वहां के सरदार ने सब गांवों से घास की दो दो गाँडियां मंगवाने का हुक्म दिया था। ईंदों को भी घास भिजवाने की ताकीद आई तब उन्होंने चूण्डा से मंडावर लेने की सलाह की। घास की गांडियाँ भरवाई और हरेक गाड़ी में चार चार हथियार बंद राजपूतों को छिपाया। एक हांकने वाले और एक पीछे पीछे चलने वाला रक्खा। पिछले पहर को इनकी गांडियां मंडोवर के गढ़ के बाहर पहुंची। गढ़ के दरवाजे पर एक मुसलमान द्वारपाल भाला पकड़े खड़ा था। जब ये गांड़ियां भीतर घुसने लगी तो द्वारपाल ने एक गांड़ी में बर्छा यह देखने को डाला कि वास के नीचे कुछ और कपट तो नहीं है। बर्छे की नोक एक राजपूत के जा लगी, परन्तु उसने तुरन्त कपड़े से उसे पोंछ डाला, क्योंकि यदि उस पर लोहू का चिन्ह रह जावे तो सारा भेद खुल पड़े, दर्बान ने पूछा—क्यों ठाकुरों! सब में ऐसा ही घास है? कहा हां जी, और गाड़ियां डगडगाती हुई भीतर चली गईं। इतने में संध्या हो गयी, अंधेरा पड़ा। जो रजपूत छिपे बैठे थे, बाहर निकले, दरवाजा बंद कर दिया और तुर्कों पर टूट पड़े। सबको काट कर चूण्डा की दोहाई फेर दी, मंडोवर लिया और इलाके से भी तुर्कों को खदेड़ खदेड़कर निकाल दिया।

जब रावल माला ने सुना कि चूण्डा ने मंडोवर पर अधिकार कर लिया है तब वह भी वहाँ आया। चूण्डा से मिलकर कहा—शाबाश राजपुत्र! चूण्डा ने गोठ दी, काका भतीजे शामिल जीमे। उसी दिन ज्योतिषियों ने चूण्डा का पट्टाभिषेक कर दिया और वह मंडोवर का राव कहलाने लगा। चूण्डा ने दस विवाह किये थे, जिनसे उसके १४ पुत्र उत्पन्न हुए-रणमल, सत्ता, अरड़कमल, रणधीर, सहसमल, अजमल, भीम, पूना, कान्हा, राम, लूंभा, लाला सुरताण और वाघा। (कहीं लाला और सुरताण के स्थान में बीजा और शिवराज नाम दिये हैं।)

एक पुत्री हंसबाई हुई, जिसका विवाह चितौड़ के राणा लाखा के साथ हुआ जिससे मोकल उत्पन्न हुआ था। पांच राणियों और उनके पुत्रों के नाम निचे दिये हैं—

राणी साखलों सूरमदे, बीसल की बेटी, पुत्र रणमल।
तारादे गहलोताणी, सोहड़ सांक सूदावत की बेटी, पुत्र सत्ता।

भटियाणी लाडां कुंतज केलणोत की बेटी, पुत्र अरड़कमल।
सोनां, मोहिल ईसरदास की बेटी, पुत्र कान्हा।

ईंदों केसर गोगादे उगाणोतरी बेटी, पुत्र—भीम, सहसमल वरजांग, रूदा, चांदा, ऊजु।

मंडोवर हाथ आने पर राव चूण्डा ने और बहुत सी धरती ली और उसका प्रताप दिन ब दिन बढ़ता गया। उस वक्त नागोर में खोखर राज करता था और उसके घर में राव चूण्डा की साली थी। उसने राव को गोठ देने के लिए नागोर के गढ़ में बुलाया। वह चार–पांच दिन तक वहां रहा और वहां की व्यवस्था देखकर अपने राजपूतों से कहा कि चलो नागोर लेवें, राजपूत भी इससे सहमत हो गये। एक दिन वह राजपूतों को साथ ले नागोर में जा घुसा, खोखर को मारा, दूसरे सब लोग भाग गये और नागोर में राव की दुहाई फिरी। वह वहां रहने लगा और अपने पुत्र सत्ता को मंडोवर रक्खा। नागोर नगर सं० १५१२ (सं० १२१५ होंगे।) कैमास दाहिमे ने बसाया था।

एक दिन राव चूण्डा दरबार में बैठा था कि एक किसान ने आकर कहा कि महाराज मैं चने बोने को खेत में हल चला रहा था कि कूऐं के पास एक खड्डा दीख पड़ा। सम्भव है, उसमें कुछ द्रव्य हो। यह विचार कर कि वह धन धरती के धनियों का है मैं आपको इत्तला करने आया हूँ। राव ने अपने आदमी उसके साथ द्रव्य निकालने को भेजे। उन्होंने जाकर वह भूमि खोदी, परन्तु माल बहुत गहराई पर था, सो हाथ न आया। उन्होंने आकर राव चूण्डा से कहा तो राव स्वयं वहां गया और बहुत से बेलदार लगाकर पृथ्वी को बहुत गहरी खुदवाई, तो उसमें से रसोई के बर्तन निकले अर्थात्–चरवे, देंगे, कूंडियां, थालियां आदि। राव ने उनको देख, ऊपर गछावड़े का नाम था और ऐसा लेख भी था कि जो इस भांति रसोई कर सके वह इन बर्तनों को निकाले। राव ने कहा कि इनको यहीं डालदो। तब सरदारों ने कहा कि इनमें से एक आध चीज तो लेनी चाहिये, तब एक पली (तेल या घी निकालने की) ली। नागोर आकर उसको तुलवाई तो १५ पैसे भर की उतरी। राव चूण्डा ने आज्ञा दी कि आगे को मेरे रसोवड़े में इस पली से घी परोसा जावे, सबको एक एक पूरी पली मिले, यदि आधी देवे तो रसोड़दार को दंड दिया जावेगा।

एक दिन अरड़कमल चूण्डावत ने भैंसे पर लोह किया। एक ही हाथ में भैंसे के दो टूक हो गये, तब स। सरदारों ने प्रशंसा कर कहा कि वाह वाह! अच्छा लोह हुआ। राव चूण्डा बोला कि क्या अच्छा हुआ, अच्छा तो जब कहा जावे कि ऐसा घाव राव राणगदे अथवा कुंवर सादा (सादूल) पर करे। मुझको भाटी (राणगदे) खटकता है उसने गोगादेव को जो विष्टाकारी (बेइज्जती) दी वह निरन्तर मेरे हृदय का साल हो रही है। अरड़कमल ने पिता के इस कथन को मन में धर लिया, उस वक्त तो कुछ न बोला, परन्तु कुछ काल बीतने पर सादे कुंवर को अवसर पाकर मारा। इसके बदले राव राणगदेव ने

सांखला महाराज को मार डाला। महाराज के भांजे राखसिया सोमा ने राव चूण्डा के पास जाकर पुकार की और कहा जो आप भाटी से मेरे मामा का वैर लेवे तो आपको कन्या व्याह कर एक सौ घोड़े दहेज में दूंगा। रात चूण्डा चढ़ चला और पूंगल के पास जाकर राणगदे को मारा और उसका माल लूटकर नागोर लाया, राव चूण्डा के प्रधान सवदू भाटी और ऊना राठौर थे।

राव चूण्डा की एक राणी मोहील के पुत्र जन्मा, नाम कान्हा रक्खा। मोहिलाणी ने बालक को घूंटी न दी, यह खबर राव को हुई। उसने जाकर रानी से पूछा कि कुंवर को घूंटी न देने का क्या कारण है। वह बोली कि जो रणमल को राज से निकालो तो घूंटी दूं। राव ने रणमल को बुलाकर कहा बेटा तू तो सपूत है, पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है। रणमल बोला–पिताजी, यह राज कान्हा को दीजिए। मुझे इससे कुछ काम नहीं। ऐसा कह पिता के चरण छूकर वहां से चल निकला और सोजत जा रहा। (रणमल को निकालने का दूसरा कारण वहीं पर ऐसा लिखा है) भाटी राव राणगदे को जब राव चूण्डा ने मारा तो राणगदे के पुत्र ने भाटियों को इकट्ठा किया और फिर मुलतान के बादशाही सूबेदार के पास गया, अपने बाप का वैर लेने के वास्ते वह मुसलमान हो गया, और अपनी सहायता पर मुलतान तुर्क सेना ले नागोर आया। उस वक्त राव चूण्डा ने अपने बेटे रणमल को कहा कि तू बाहर कहीं चला जा, क्योंकि तू तेजस्वी है सो मेरा वैर लेने में समर्थ होगा। जो राजपूत तेरे साथ जाते हैं उनको सदा प्रसन्न रखना, उनका दिल कभी मत दुःखना। जेठी घोड़ा सिरवरा उगमणोत को देना। मैंने कान्हा को टीका देना कहा है जो इसको (काहूगांव) खेजड़े ले जाकर तिलक दिया जावेगा।

राव की राणी मोहिलाणी ने एक दिन घृत की भरी हुई एक गाड़ी आती देखी, अपनी दासी भेज खबर मंगवाई कि क्या रावजी के कोई विवाह है जो रोज इतना घृत आता है। दासी ने आकर कहा बाईजी विवाह तो कोई नहीं यह घृत तो रावजी के रसोड़े के खर्च के लिए है जहां बारह मण रोज खर्च होता है। मोहिलाणी बोली यह घृत लूटता है। रावजी से कहा कि रसोड़े का प्रबन्ध मुझको सौंपिए। राव ने स्वीकारा, राणी पांच सेर घृत में रोज काम चलाने लगी और रावजी को कहा कि मैंने आपका बहुत फायदा किया है, परन्तु इस कार्यवाही से सब राजपूत अप्रसन्न हो गये थे इसलिए बहुत से रणमल के साथ चल दिये।

जब नागोर पर भाटी व तुर्क चढ़ आये तो राव चूण्डा भी सजकर मुकाबले के वास्ते गढ़ के बाहर निकला, युद्ध हुआ और सात आदमियों सहित राव चूण्डा खेत रहा। भाटियों ने राव का सिर काटकर बर्छे की नोक पर धरा और उस बर्छे को भूमि में गाड़कर राव के मस्तक को ऊपर रक्खा और मसखरी के तौर पर भाटी आ आकर उसके सामने यह कहते हुए सिर झुकाने लगे कि "राव चूण्डाजी जुहार।" तब राव कैलण वहां आया। वह बड़ा शकुनी था, कहने लगा—ठाकुरो, सुनो आगे को भाटी राठौड़ों के चाकर होंगे और उन्हें तसलीम करेंगे।

राव चूण्डा के सरदार रणमल को ढूंढाण की तरफ ले गये। रणमल ने पिता के आज्ञानुसार साथ के सब राजपूतों को राजी कर लिया। केलण भाटी रणमल के पीछे लगा। रणमल एक गांव में पहुँचा, एक पनघट के कूऐ के पास ठहरा। वहां पनिहारियां जल भरने आईं। उनमें से एक बोली "बाई! आज कोई ऐसा यहां आया है कि जिसने अपने बाप को मरवाया, धरती खोई, उसके पीछे कटक आता है सो ऐसा न हो कि अपने को भी मरवावे।" पनिहारी के ये वचन रणमल के कान में पड़े। वह बोला आगे नहीं जाऊंगा, पीछा करने वाली सेना से लड़ूंगा सब पीछे फिरे, शस्त्र संभाले, युद्ध हुआ, सिखरा ने बादशाही निशान छीन लिया। मुगल और भाटी भागे और रणमल नागोर में आकर पाट बैठा।

गोगादेव थलवट में रहता था। वहां जब दुष्काल पड़ा तो मऊ (लोग या प्रजा) चली, केवल थोड़े मनुष्य वहां रह गये। आषाढ़ आया तब लोग गांवों में आकर बसे। उनमें बानर तेजा नाम का एक राजपूत गोगादेव का चाकर था, वह भी मऊ के साथ गया था। पीछे लौटता हुआ वह अपने पुत्र पुत्री और एक बैल सहित गांव मीतासर में रात्रि को ठहरा। प्रभात के समय जब वह स्नान को गया और पानी में बैठकर नहाने लगा तब उस गाँव के स्वामी मोहिल ने उसको बेटी की गाली दी और कहा "अरे पापी, लोग तो यहां जल पीते हैं और तू उसमें बैठकर नहाता है।" इतना कहकर उसके पराणी (वह लकड़ी जिसके एक सिरे पर लोहे की तीक्ष्ण कील लगी रहती है) मारी; जिससे उसकी पीठ चीर गई। लोगों ने कहा कि यह गोगादेव का राजपूत है तो मोहिल बोला कि "गोगादेव जो करेगा सो मैं देख लूंगा।" तेजा वहां से अपने गांव आया। उसके घरमें प्रकाश देखकर गोगादेव ने अपने आदमी को खबर के लिए भेजा और फिर उसको बुलाया। दूसरे दिन जब गोगादेव तालाब पर स्नान करने गया तो तेजा भी उसके साथ गया था। जब नहाने लगे तो गोगादेव ने तेजा की पीठ में घाव देखकर पूछा कि यह कैसे हुआ? उसने उत्तर दिया कि मीतासर के राणा माणकराव मोहिल ने मेरी पीठ में आर लगाई और ऐसा कहा है। इस पर गोगादेव साथ इकट्ठा करके मोहिली पर चढ़ा। उस दिन वहां बहुत सी बरातें आई थीं। लोगों ने समझा कि यह भी कोई बरात है। द्वादसी के दिन प्रातःकाल ही गोगादेव चढ़ दौड़ा, लड़ाई हुई, राणा भाग गया, दूसरे कई मोहिल मारे गये, गांव लूटा, और २७ बरातों को भी लूटकर अपने राजपूतों का बैर लिया।

गोगादेव जब जवान हुआ, तब अपने पिता का बैर लेने के लिए उसने साथ इकट्ठा किया और जोहियों पर चढ़ चला। इस बात की सूचना जोहियों को होते ही वे भी युद्ध के लिए उपस्थित हो गये। (शत्रु को धोखा देने के लिए) गोगादेव उस वक्त पीछा मुड़ गया और २० कोस आकर ठहरा। अपने गुप्तचर को वैरी की खबर देने के लिए छोड़ आप उसकी घात में बैठा अवसर देखने लगा। जोहियों ने जाना कि गोगादेव चला गया है तो फिर अपने स्थान को लौट आये। गुप्तचर ने आकर खबर दी कि मैंने दल्ला जोहिया और उसके पुत्र धीरदेव का पता लगा लिया है और जहां वे सोते हैं वह ठौर

निकला। धीरदेव इस अर्थ में पूंगल के राव राणगदे भाटी के यहां विवाह करने गया था और उसके बिछौने पर उसकी बेटी सोती थी, धीरदेव के भरोसे तलवार झाड़ी। उसकी कृपाण उस बाला को काट, बिछौने को चीर, पलंग को काटती हुई घट्टी से जा खटकी। इसी से वह तलवार 'रलतली' प्रसिद्ध हुई। जब दल्ला मारा गया तो उसका भतीजा हांसू पडाइये नाम के घोड़े पर चढ़ धीरदेव को यह समाचार पहुंचाने के लिए पूंगल को दौड़ा। धीरदेव विवाहोत्तर अपनी पत्नी के पास सोया हुआ था, कंकन डोरडे अब तक न थे। पहर भर रात्रि शेष रही होगी कि घोड़ा पड़ाइया हिन हिनाया। धीरदेव की आंख खुल गई, कहने लगा कि पड़ाइया हिन हिनाया। साथ के नौकर चाकर बोले, जी! इस वक्त यहां पड़ाइया कहां? इतना कहते तो देर लगी कि हांसू सन्मुख आ खड़ा हुआ। धीरदेव ने पूछा कुशल तो है? उत्तर दिया कि कुशल कैसी, गोगादेव वीरमोत ने आकर तुम्हारे पिता दल्ला को मारा, अब वह वापस जाता है। धीरदेव तत्काल उठा, वस्त्र पहने, हथियार बांधे, घोड़े जीन कराया, सवार होने ही को था कि राव राणगदेव भी वहां आगया, कहने लगा कि कंकनडोरे खोलकर सवार होओ। धीरदेव ने उत्तर दिया कि अब पीछे आकर खोलेंगे। तब तो राव राणगदेव भी साथ हो लिया और दोनों चढ़ धाये। आगे गोगादेव पदरोला के पास ठहरा हुआ था, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया था, साथ सब जल के किनारे टिका हुआ था। भाटी और जोइये निकट पहुंचे। घोड़े चरते हुए देखे तो जान लिया कि यह घोड़े गोगादेव के हैं, तब उनको लेकर पीछे फिरे और पदरोला आये। कटक प्यासा हुआ तब कहने लगे कि जल पीकर चलें। जलपान किया, घोड़ों को भी पिलाकर ताजा कर लिया और फिर दो टुकड़ी हो दोनों तरफ से बढ़े। इन्हें देखकर गोगादेव ने पुकारा—अरे घोड़े लाओ! तब ढीढी (कोई नाम) बोला—"अरे! गोगादेव के घोड़े नहीं मिलते हैं, जोहिये ले गये, छुडाओ।" युद्ध शुरू हुआ। भाटी जोहिया राठौडों से भिड़े। गोगादेव घावों से पूर होकर पड़ा, उसकी दोनों जंघा कट गई, उसका पुत्र ऊदा भी पास ही गिरा। घायल गोगादेव अपनी माण की तलवार को टेके बैठा घूम रहा था कि राव राणगदे घोड़े चढ़ा हुआ उसके पास से निकला तो गोगादेव कहने लगा "राव राणगदे का बड़ा सांका (साथ) है। हमारा पारवाडा (जुहार ?) ले लेवे।" राणगदे ने उत्तर दिया कि "तेरे जैसी विष्ठा का पारवाडा हम लेते फिरें" इतना कहकर वह तो चला गया और धीरदेव आया। तब फिर गोगादेव ने कहा "धीरदेव तू वीर जोहिया है, तेरा काका मेरे पेट में तड़प रहा है, तू मेरा पारवाडा ले।" यह सुन धीरदेव फिरा, गोगा के निकट आ घोड़े से उतरा। तब गोगा ने तलवार चलाई और वह पास आ पड़ा। गोगा ताली देकर हंसा, तब धीरदेव ने कहा— 'अपना वैर टूटा, हमने तुझे मारा और तूने धीरदेव को, इससे महेवे की हानि मिट गई।" धीरदेव के प्राण मुक्त हुए तब गोगादेव बोला "कोई हो तो सुन लेना। गोगादेव कहता है कि राठोडों और जोहियों का वैर तो बराबर हो गया, परन्तु जो कोई जीता जागता हो तो महेवे जाकर कहे कि राव राणगदे ने गोगादेव को "विष्टागाली" दी है सो वैर भाटियों से है।" यह बात झीपां ने सुनी और महेवे जाकर सारा हाल कहा।

इधर रणखेत में जोगी गोरखनाथजी आ निकले । गोगादेव को इस तरह बैठा देखा, उन्होंने उसकी जंघा जोड़ दी और अपना शिष्य बना कर ले गये, सो गोगादेव अब तक चिरंजीव है ।

अडकमल या अरडकमल चूण्डावत (राठौड़ राव चूण्डा का पुत्र)–जैसा कि ऊपर लिख आये हैं कि अडकमल को भैंस का लोह करने पर उसके पिता ने बोल मारा (कि भैंस का लोह किया तो क्या, मैं तो प्रशंसा जब करु , कि ऐसा ही लोह राव राणगेद या उसके बेटे सादा पर किया जावे ।) पिता का वह बोल पुत्र के दिल में खटकता था । उसने स्थल स्थल पर अपने भेदिये यह जानने को बिठा रक्खे थे कि कहीं राणगदे या सादूल कुंवर हाथ आवे तो उनको मारू । तभी मेरा जीवन सफल हो और पिता के बोल को सत्य कर बताऊं । छापर द्रोणपुर में मोहिल (चौहान) राज करते थे वहां के राव ने अपनी कन्या के सम्बन्ध के नारियल पूंगल में कुंवर सादूल राणगदे बोत के पास भेजे । ब्राह्मण पूंगल आया और भाटी राव से कहा कि मोहिला ने कुँवर सादूल के लिए यह नारियल भेजे हैं । राव राणगदे ने उत्तर दिया कि हमारा राठौडों से बैर है, अतएव कुंवर ब्याह करने को नहीं आ सकता और ब्राह्मण को रुकसत कर दिया । यह समाचार सादूल को मिले कि रावजी ने मोहिलों के नारियल लौटा दिये हैं तो अपना आदमी भेजकर ब्राह्मण को वापस बुलाया, नारियल लिये और उसे द्रव्य देकर विदा किया । प्रतिष्ठित सरदारों के हाथ पिता को कहलाया कि नारियल फेर देने में हम अपयश और लोकनिंदा के भागी होते हैं, राठोडों से डरकर कब तक घर में घुसे बैठे रहेंगे, मैं तो मोहिलाणी को ब्याह कर लाऊंगा । वह टीकावत पुत्र और जवान था । राव ने भी विशेष कहना उचित न समझा । इसने अपने राजपूत इकट्ठे कर चलने की तैयारी करली और पिता के पास मोर नामी अश्व सवारी के लिए मांगा । राव ने कहा कि तू इस घोड़े को रखना नहीं जानता; या तो हाथ से खो देगा या किसी को दे आवेगा । बेटा कहता है पिताजी ! मैं इस घोड़े को अपने प्राण के समान रक्खूंगा । अब पिता क्या कहे, घोड़ा दिया, कुंवर केसरिये कर ब्याहने चढ़ा, छापर पहुंचा और माणकदेवी के साथ विवाह किया । राव कलण की पुत्री माणक भाटियाणी जबर्दस्त थी । उसने गढ़ द्रोणपुर में विवाह न करने दिया, तब राव माणक सेवा ने अपनी कन्या और राणा खेता की दोहिती को ओरींठ गांव में ले जाकर सादूल के साथ ब्याही थी । मोहिलों ने सदूल को सलाह दी कि तुम अपने किसी बड़े भरोसे वाले सरदार को छोड़ जाओ । वह दुलहन का रथ लेकर पूंगल पहुंचा जावेगा, तुम तुरन्त चढ़ चलो, क्योंकि दुश्मन कहीं पास ही घात में लगा हुआ है । सादूल ने कहा कि मैं त्याग बांटकर पीछे चढूंगा । राठोडों के भेदिये ने जाकर अरडकमल को खबर दी कि सादूल मोहिलों के यहां ब्याहने आया है, वह तुरन्त नागौर से चढ़ा । इस वक्त एक अशुभ शकुन हुआ । महाराज साथ था, उसको शकुन का फल पूछा तो उसने कहा कि अपन कालू गोहिल के यहां चलेंगे, जब वह आपकी जीमने की मनुहार करे तो उसको अपने शामिल भोजन के लिए बैठा लेना । पहला ग्रास आप मत लेना, गोहिल को लेनें

देना। जब वह ग्रास भरे तब उससे पूछना कि हमने ऐसा शकुन देखा है उसका फल कहो। वह विचार कर कह देगा। ये गोहिल के घर जाकर उतरे, उसने गोठ तैयार कराई, जीमने बैठे, पहला ग्रास कालू ने लिया तब अरडकमल कहने लगा—कालूजी हम सादूल भाटी पर चढ़े हैं, हमको ऐसा शकुन हुआ उसका फल कहो। कालू कुछ विचार कर बोला "तुम जिस काम को जाते हो वह सिद्ध होगा, तुम्हारी जय होगी और कल प्रभात को शत्रु मारा जायेगा।" जीम चूठकर चढ़े, महाराज सांखल के बेटे आल्हणसी को राव राणगदे ने मारा था इसलिए अपने बेटे का वैर लेने को महाराज आगे होकर राठोडों के कटक को सादूल पर ले चला। सादूल भाटी त्याग बांट, ढोल बजवाकर अपनी ठकुराणी का रथ साथ ले रवाना हुआ था कि लायां के मगरे (पहाडी) के पास अरडकमल ने उन्हें जा लिया और ललकार कर कहा—"बड़े सरदार जावे मत। मैं बड़ी दूर से तेरे वास्ते आया हूं।" तब ढाढ़ी बाला—"उडै मौर करे पलाई मोरे जाई पर सादो न जाई," । मोर (घोड़ा) उड़कर भाग जावे परन्तु सादा नहीं जावेगा। राजपूतों ने अपने अपने शस्त्र संभाले, युद्ध हुआ, कई आदमी मारे गये, अरडकमल ने घोड़े से उतर मोर पर एक हाथ ऐसा मारा कि उसके चारों पांव कट गये और साथ ही सादूल का काम भी तमाम किया। उसके साथ राजपूत मर मिटे तब मोहिलाणी ने अपना एक हाथ काटकर सादूल के साथ जलाया और आप पूंगल पहुंची, सासू ससूर के पग पकड़े और कहा "मैं आप ही के दर्शन के लिए यहां आई थी, अब पति के साथ जाती हूं।" ऐसा कहकर वह सती हो गयी। अरडकमल ने भी नागौर आकर पिता के चरणों में सिर नवाया, राव चूण्डा हुआ और उसे पट्टे में दिया।

(ऊपर कह आये हैं कि राव चूण्डा ने अपनी राणी मोहिल के कहने से अपने पुत्र रणमल को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर उसे निर्वासित किया और मोहिल के पुत्र कान्हा को मंडोवर का राज दिया था।) जब रणमल विदा हुआ तो अच्छे अच्छे राजपूत अर्थात् सिखरा उगमणोत, ईदा, ऊदा त्रिभुवन सिंहोत, राठोड़ कालो टिवाणो उसके साथ हो लिये। आगे जाकर एक रहट चलता देखा, वहां घोड़ों को पानी पिलाया। उनके मुंह छांटे, हाथ मुंह धोकर अमल पानी किया। वहां सिखरे ने एक दोहा कहा—"कालो काले हिरण जिम, गयो टिवाणों कूद। आयो परवत साथियों त्रिभुवन बाले ऊद।" तब ऊदा और काला ने कहा कि हम सिखरा के साथ नहीं जावेंगे, यह निंदा करता है अतः पीछे लौट जायेंगे। इतने में दल्ला गोहिलोत का पुत्र पूना उठकर आया, जिसको सिखरे ने कहा कि पीछे फिरो। वह बोला "मैं नहीं लौटूंगा, ऐसा अवसर मुझे कब मिले।" तब कला और ऊदा ने कहा कि हम पूना के साथ पीछे जावेंगे। सिखरा ने कहा तुम जाओ, मैं नहीं आऊंगा। एक दोहा मुझे भी कहो—

घुमडलेह सिरावणी, कहियो उगह विहाण।
ऊगमणावत कूदियो, वट वंगे केकाण ॥

फिर पूना राव (चूण्डा) के पास चला गया। ५०० सवारों सहित नाडोल के गांव घणले में आकर ठहरा। नाडोल में उस वक्त सोनगिरे (चहुवाण) राज करते थे।

राव रणमल के यहां तीन बार रसोई चढ़ती और वह अपने दिन सैर शिकार में बिताता था। जब सोनगिरों ने उसका वहां आ उतरना सुना और उसके ठाट ठस्से के समाचार उनके कानों में पहुंचे तब उन्होंने अपने एक चारण को भेजा कि जाकर खबर लावे कि रणमल के साथ कितनेक आदमी है। चारण ने राव के पास आकर आशीष पढ़ी, राव ने उसको पास बिठाकर सोनगिरों का हाल पूछा। इतने में नौकर ने आकर अर्ज की कि जीमण तैयार है। चारण को साथ लिये नाना प्रकार की तैयारी का स्वाद लिया, फिर चारण को कहा कि तुझे कल विदा मिलेगी। दूसरे दिन प्रभात ही शिकारियों ने आकर खबर दी कि अमुक पर्वत में ५ वराहों को रोके हैं। रणमल तुरन्त सवार हुआ और उन पांचों शूकरों का शिकार कर लाया। रसोई तैयार थी, जीमने बैठे, भोजन परोसा गया, साथ के लोग जीमने लगे कि एक शिकारी ने आकर कहा कि पनोते के बादले (बहने वाली बर्साती जलधारा या छोटी नदी) पर एक बड़ा वराह आया है। सुनते ही रणमल उठ खड़ा हुआ और घोड़ा कसवाकर सवार हो चला। चारण भी साथ हो लिया। सवार होते समय जोहियों को आज्ञा दी कि पनोते के बाहले पर जीमण तैयार रहे। जब वराह को मारकर पीछे फिरे तो रसोई तैयार थी। जीमने बैठे, आधाक भोजन किया होगा कि खबर आई कि कोलर के तालाब पर एक नाहर और नाहरी आये हैं। उसी तरह भोजन छोड़कर वह उठ खड़ा हुआ और वहां पहुंचा जहां बाघ था। जाते वक्त हुक्म दिया कि जीमण तालाब पर तैयार रहे। चारण भी साथ ही गया। जब सिंहों का शिकार कर लौटे तो रसोई तैयार थी-सब ने सीरा पूरी आदि भोजन किया। उस चारण को मार्ग में से ही विदा कर दिया और कहा कि नाडोल यहां से पास है। चारण ने घोड़ा हटाया, नाडोल वहां से एक कोस ही रह गया था। चारण ने पुकार मचाई "दौड़ो दौड़ो"। बाहर आई है गांव में राजपूत सवार हो होकर आये। चारण को पूछा कि तुझे किसने खोसा ? कहा-मुझे तो किसी ने नहीं खोसा है परन्तु तुम्हारी धरती लुट गई। पूछा कैसे ? बोला-यह रणमल पास आ रहा है और इतना खर्च करता है, बाप ने तो निकाल दिया, फिर इसके पास इतना द्रव्य आवे कहां से ? यह कहीं न कहीं छापा मारेगा या तो सोनगिरों से नाडोल लेगा, हूलों से सोजत लेगा। इस कान से सुनो या उस कान से, मैंने तो पुकार कर कह दिया है।

कितनेक दिन वहां ठहरकर रणमल चित्तौड़ के राणा लाखा के पास गया जहां छत्तीस ही राजकुल चाकरी करते थे। बड़ा राजस्थान, रणमल भी वहां जाकर चाकर हुआ। (आगे राणा लाखा और चूण्डा की बात, राणा का रणमल की बहन से विवाह करना और मोकल के जन्म आदि का हाल पहले सिसोदियों के वर्णन में राणा लाखा के हाल में लिख दिया है-देखो भाग प्रथम पृष्ठ २४)।

एक बार रणमल थोड़े से साथ से यात्रा के वास्ते गया था, पीछा लौटते ढूंढाड में आया। वहां पूरणमल कछवाह राज करता था (यह राजा पृथ्वीराज का पुत्र और सांभर का राजा था)। उसने रणमल को पूछा कि हमारे यहां नौकर रहोगे। उत्तर दिया-रहेंगे।

एक दिन जोधा कांधल और पूरणमल चौगान खेल रहे थे। जोधा (रणमल का पुत्र) जेठी घोड़े पर सवार था। पूरणमल ने वह घोड़ा देखा, कहा हमें दे दो। कांधल बोला कि रणमलजी को पूछे बिना मैं नहीं दे सकता। पूरणमल ने कहा, मैं छीन लूंगा। फिर जोधा कांधल ने डेरे पर आकर घोड़े की कथा रणमल को सुनाई। रणमल अपने भाई बेटे व राजपूतों सहित दरबार में आया। पूरणमल जहां बैठा था वहां उसका घोड़ा दबाकर बैठ गया। उसकी कमर में हाथ डाल पकड़कर खड़ा कर दिया और अपने साथ बाहर ले आया, घोड़े पर सवार कराया और उसके घोड़े के बराबर अपना घोड़ा रख कर ले चले। पूरणमल के राजपूत इन्हें मारने को आये तो रणमल कटार खींचकर पूरणमल को मारने को तैयार हो गया। तब तो वह अपने आदमियों को झगड़ा करने से रोककर उनके साथ साथ हो लिया। बहुत दूर ले जाकर रणमल ने उसे आदरपूर्वक वह घोड़ा दे इतना कह लौटा दिया कि "हमारे पास से घोड़ा यूं लिया जाता है, जिस तरह तुम लेना चाहते थे वैसे नहीं।"

अपने पिता के मारे जाने पर रणमल नागौर आया और अपने पिता के आज्ञानुसार कान्हा को राजगद्दी पर बिठाकर आप सोजत में रहने लगा। भाटियों से बैर था सो दौड़-दौड़कर उनका इलाका लूटने लगा। तब उन्होंने चारण भुज्जा संढायच को उसके पास भेजा। चारण ने यश पढ़ा, जिससे प्रसन्न होकर रणमल ने कहा कि अब मैं भाटियों का बिगाड़ न करूंगा। उन्होंने अपनी कन्या उसे ब्याह दी जिसके पेट से राव जोधा उत्पन्न हुआ था।

अपने पुत्र सत्ता को पहेर की जागीर राव चूण्डा ने पहले ही से दे दी थी, (दूसरी ख्यातें से) सं० १४६५ में कान्हा का मंडोवर गद्दी बैठना पाया जाता है परन्तु वह अधिक राज न कर सका। उसके भाई सत्ता ने राज छीन लिया, और राज प्रबन्ध अपने भाई रणधीर को सौंपा। सत्ता के पुत्र नर्बद और रणधीर के परस्पर अनबन हो जाने से रणधीर चित्तौड़ गया और रणमल को लाया। राणा मोकल ने रणमल की सहायता कर सं० १४७४ के लगभग उसे मंडोवर की गद्दी पर बिठाया। रणमल और उसके पुत्र जोधा ने नर्बद से युद्ध किया, वह घायल होकर गिरा, तीर लगने से उसकी एक आंख फूट गई और उसके बहुत से राजपूत मारे गये। राव रणमल ने मंडोवर ली। राव सत्ता को आंखों से दिखता नहीं था इसलिए राव रणमल ने उसको गढ़ में रहने दिया और जब वह उससे मिलने गया, अपने पुत्रों को उसके पांवों लगाया। जब जोधा जिरह बक्तर पहने शस्त्र सजे उसके चरण छूने को गया। सत्ता ने पूछा कि "रणमल यह कौन है ?" कहा "आपका दास जोधा है।" सत्ता बोला कि टीका इसे देना, यह धरती रक्खेगा। रणमल ने भी उसी को अपना टीकायत बनाया और मंडोवर में उसे रक्खा और आप नागौर चला गया।

एक दिन राव रणमल सभा में बैठा अपने सरदारों से यह कह रहा था कि बहुत दिन से चित्तौड़ की तरफ से कोई खबर नहीं आई है। उसका क्या कारण ? थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी चित्तौड़ से पत्र लेकर आया और कहा कि मोकल मारा गया। राव

विस्मित और शोकातुर हो बोला हैं ! मोकल को मार डाला ?" पत्र बंचवाया, मोकल को जलांजलि दी और चित्तौड़ जाना विचारा । पहले २१ पांवड़े (कदम) भरे और फिर खड़े होकर कहा कि "मोकल का बैर लेकर पीछे और काम करूंगा ।" "सिसोदियों की बेटियां बैर में राव चूण्डा की संतान को परणाऊं तो मेरा नाम रणमल ।" कटक सज चित्रकूट पहुंचे । सीसोदिये (मोकल के घातक) भागकर पई के पहाड़ों में जा चढ़े और वहां घाटा बांध रहने लगे । रणमल ने वह पहाड़ घेरा और छः महीने तक वहां रहकर उसे सर करने के कई उपाय किये, परन्तु पहाड़ हाथ न आया । वहां मेर लोग रहते थे । सिसोदियों ने उनको वहां से निकाल दिया था उनमें से एक मेर राव रणमल से आकर मिला और कहा कि जो दीवाण की खातरी का पर्वाना मिल जावे तो यह पहाड़ मैं सर करा दूं । राव रणमल ने पर्वाना करा दिया और उसे साथ ले ५०० हथियार बन्द राजपूतों को लिये पहाड़ पर चढ़ने को तैयार हो गया । मेर बोला, आप एक मास तक और धैर्य्य रक्खें । पूछा–किसलिए ? निवेदन किया कि मार्ग में एक सिंहनी ने बच्चे दिये हैं । रणमल बोला कि सिंहनी से तो हम समझ लेंगे तू तो चल । मेर को लिए आगे बढ़े । जिस स्थान पर सिंहनी थी वहां पहुंचकर मेर खड़ा रह गया और कहने लगा कि आगे नाहरी बैठी है । रणमल ने अपने पुत्र अरडकमल से कहा कि बेटा, नाहरी को ललकार । उसने वैसा ही किया । शेरनी झपटकर उस पर आई । इसका कटार पहले ही उसके लिए तैयार था, घूंस घूंसकर उसका पेट चीर डाला । जब अगुवे ने उनको पहाड़ों में ले जाकर चाचा मेरा के घरों पर खड़ा कर दिया । रणमल के कई साथी तो चाचा के घर पर चढ़े और राव आप महपा पर चढ़कर गया । उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि जहां स्त्री पुरुष दोनों घर में हों उस घर के भीतर न जाना, इसलिए बाहर ही से पुकारा कि "महपा बाहर निकल व तो यह शब्द सुनते ही ऐसा भयभीत हुआ कि स्त्री के कपड़े पहन झट से निकलकर सटक गया; रणमल ने थोड़ी देर पीछे फिर पुकारा तो उस स्त्री ने उत्तर दिया कि राज ! ठाकर तो मेरे कपड़े पहनकर निकल गये हैं, और मैं यहां नंगे बदन बैठी हूं । रणमल वहां से लौट गया, चाचा मेरा को मारा और दूसरे भी कई सीसोदियों को खेत रक्खा । प्रभात होते उन सबके मस्तक काट कर उनकी चबूतरी (चंवरी) चुनी, बछों की बट्टे बनाई और वहां सीसोदियों की बेटियों को राठौड़ों के साथ परणाई । सारे दिन विवाह कराये, मेवासा तोड़ा और वह स्थान मेरों को देकर राव रणमल पीछा चित्तौड़ आया, राणा कुंभा को पाट बैठाया । दूसरे भी कई बागी सरदारों को मेवाड़ से निकाला और देश में सुख शांति स्थापित की ।

(चित्तौड़ में राणा कुंभा के शुरू जमाने में राव रणमल पर ही राजप्रबन्ध का दारमदार हो गया था और उसने राणा के काका राव चूण्डा लाखावत को भी वहां से विदा करवा दिया जो मांडू के सुल्तान के पास जा रहा था ।) एक दिन राणा कुंभा सोया हुआ था और एका चाचावत पगचंपी कर रहा था कि उसकी आंखों में से आंसू निकलकर राणा के पग पर बूंदें गिरी । राणा की आंख खुली, एका को रोता हुआ देख कारण पूछा तो उसने अर्ज की कि मैं रोता इसलिए हूं कि अब देश सीसोदियों के अधिकार में से निकल

जायगा और उसे राठोड़ लेंगे। राणा ने पूछा, क्या तुम रणमल को मार सकते हो? अर्ज की कि जो दीवाण के हाथ हमारे सिर पर रहें तो मार सकते हैं। राणा ने आज्ञा दी। राणा, एका चाचावत और महपा पंवार ने यह मत दृढ़ किया तथा रात्रि के समय सोते हुए राव रणमल पर चूक कर उसे मारा। इसका सविस्तार हाल मेवाड़ की ख्यात में राणा के वर्णन में लिख दिया है। राव रणमल ने भी मरते मरते राजपूतों के प्राण लिये। एक को कटार से मारा, दूसरे का सिर लोटे से तोड़ दिया और तीसरे का प्राण लातों से लिया। राणा की एक छोकरी महल चढ़ पुकारी "राठोड़ों! तुम्हारा रणमल मारा गया।" तब रणमल के पुत्र जोधा कांधल आदि वहां से घोड़ों पर चढ़कर भागे। राणा ने उनके पकड़ने को फौज भेजी, लड़ाई हुई और उसमें कई सरदार मारे गये। चरड़ा चन्द्रावत शिवराज, पूना, ईंदा आदि। चरड़ा ने पुकारा "बड़ा बीजा!" तो एक दूसरा बीजा बोल उठा कि गला फाड़कर आप मरता हुआ दूसरों को भी ले मरता है। चरड़ा ने कहा कि मैं तुझको नहीं पुकारता हूं। भीमा बीरसल, बरजांग भीमावत मारे गये और भीम चूण्डावत पकड़ा गया।

मांडल ने तालाब में अपने अपने घोड़ों को पानी पिलाया। उस वक्त एक ओर तो जोधा और सत्ता दोनों सवार अपने घोड़ों को पिलाते थे, और दूसरी तरफ कांधल अपने अश्व को जलपान कराता था। कांधल ने उन दोनों सवारों से पूछा (तुम कौन हो आदि)। जोधा ने कांधल की आवाज पहचानी, उससे बात की, दोनों मिले और वहीं जोधा ने उसे रावताई का टीका दिया। दोनों भाई मारवाड़ में आये।

दोहा—आगे सूरन काढ़िया तुंगम काढ़ी आय।
जे मिसराणो सेजडी, लड रिणमल राय॥

राव रिणमल नींदा भरे आवय लौह घणे उबारै, कटारी काढ़ मरदघणी तिय आगै सुरन तुंगकिणी। तो दिन मेवाड़े तो विपख्य की पापं सांसन्नी तरपण वही जै वैसा सकं भकरणां कृतघं (छंद अशुद्ध से हैं अर्थ ठीक नहीं लगता)। जै रिणमल होवंत दल अंतार कुंभ करण बहन्त किसी पर। माथा सूल सही सुरताणां, ओस मुद्रावत आणां। जै वरती वी आणां। वे हूं सिवावी चीलो हिन्दू अनैं हमीर मीर जै लुलिया भाजै। जै भग्गो पीरोज, खेत्रा जाह लड़ै जै मारै। महमद गजगमारै संमेडो रिणमल राव विसरांभिये। कुंभा की मन वीकसै छलायो छदम तैं कूड़ कडकर, जेम सीह आगै ससै।

(इसमें राव रणमल के वीरकृत्यों का वर्णन है जो उसने राणा के हित किये, और अंत में कहा है कि राणा ने छल छद्मकर रणमल को ऐसा मारा जैसे सिंह को ससा ने मारा था। (छंद शुद्ध न होने से सही अर्थ नहीं किया जा सकता है।)

महपा परमारे पई के पहाड़ों से भागकर मांडू के बादशाह महमूद के पास जा रहा था। जब राणा कुंभा ने बादशाह पर चढ़ाई की तब राव रणमल राणा के साथ था।

सीमा पर युद्ध हुआ उस वक्त महमूद हाथी पर लोहे के कोठे में बैठा हुआ था, राव रणमल ने चाहा कि अपने घोड़े को उड़ाकर बादशाह को बर्छी मारे, परन्तु किसी प्रकार बादशाह को राव का यह विचार मालूम हो गया। उसने तुरन्त अपने खवास को जो पीछे बैठा हुआ था, अपनी जगह बिठा दिया और आप उसकी जगह जा बैठा। इतने में रणमल ने घोड़ा उड़ाकर बर्छी चलाई, वह कोठा तोड़कर खवास की छाती के पार निकल गई। उसने चिल्ला कर कहा "हजरत मैं तो मरा।" यह शब्द रणमल के कान पर पड़े और उसने जाना कि बादशाह बच गया है। बादशाह हाथी की पीठ पर पीछे की ओर बैठा था और राव की यह प्रतिज्ञा थी कि वह पीठ पर तलवार कभी न चलाता था। उसने फिर घोड़ा उड़ाया, बादशाह के बराबर आकर उसको उठाया और एक शीला पर दे पटका जिससे उसके प्राण निकल गये। महपा को बादशाह मांडू के गढ़ में छोड़ आया था। जब राणा मांडू पहुंचा तो गढ़वालों ने महपा को कहा कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। राव रणमल ने उसे मांगा तब वह घोड़े पर चढ़कर गढ़ के दरवाजे आया और वहां से नीचे कूद पड़ा। जिस ठौर से महपा कूदा उसको पाखंड कहते हैं। पीछे महपा को सिकोतरी का वरदान हुआ।

(दूसरी बात इस तरह पर लिखी है)–राव चूण्डा काम आया तब टीका राव रणमल को देते थे कि रणधीर चूण्डावत दरबार में आया। सत्ता वहां बैठा हुआ था। रणधीर ने उसको कहा कि "सत्ता कुछ देवे तो टीका तुम्हें देवे।" सत्ता ने कहा कि "टीका रणमल का है, जो मुझे दिलाओ तो भूमि का आधा भाग तुझे देऊं।" तब रणधीर ने घोड़े से उतर दरबार में जाकर सत्ता को गद्दी पर बिठा दिया और रणमल को कहा कि तुम पट्टा लो। उसने मंजूर न किया और वहां से चल दिया, राणा मोकल के पास जा रहा। राणा ने उसकी सहायता की और मंडोर पर चढ़ आया। सत्ता भी संमुख लड़ने को आया। रणधीर नागौर जाकर वहां के खान को सहायतार्थ लाया। (उस वक्त नागोर में शम्सखां गुजरात के बादशाह अहमदशाह की तरफ से था।) सीमा पर युद्ध हुआ, रणमल तो खान से भिड़ा और सत्ता व रणधीर राणा के संमुख हुए। राणा भागा और नागौरी खान को रणमल ने पराजित कर भगाया। सत्ता और रणमल दोनों की फौजवालों ने कहा कि विजय रणमल की हुई है, दोनों भाई मिले, परस्पर राम राम हुआ, बात–चीतें की, रणमल पीछा राणा के पास गया और सत्ता मंडोवर गया।

सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था। (सत्ता आंखों से बेकार हो गया था इसलिए) राज–काज उसका पुत्र नर्बद करता था। एकबार नर्बद ने मन में विचारा कि रणधीर धरती में आधा भाग क्यों लेता है, मैं उसको निकाल दूंगा। थोड़े ही दिनों पीछे ४००) रुपये कहीं सेआये, उनका आधा भाग नर्बद ने दिया नहीं, दूसरी बार नापा ने एक कमान निकलवाकर खींचकर चढ़ाई और तोड़ डाली। नर्बद ने कहा भाई तोड़ी क्यों?

नापा बोला धरती का हासल आवे उसमें से आधा मांगू, कल थैली आई थी उसमें से मुझे क्यों न दिया ? नर्बद ने आधे रुपये दे दिये । वह पाली के सोनगिरों का भांजा और नापा सोनगिरों का जमाई था । एक दिन नर्बद ने अपने मामा से पूछा "मामाजी, तुमको मैं प्यारा या नापा ?" "कहा-मेरे तो तुम दोनों ही बराबर हो, परन्तु विशेष प्यारा तू है, क्योंकि तेरे पास रहते हैं । नर्बद ने कहा कि जो ऐसा है तो नापा को विष दे दो । मामा ने कहा "भाई मुझ से ऐसा नहीं हो सकता" । नर्बद ने एक दासी को लोभ देकर मिलाया और नापा को विष दिलवाया जिससे वह मर गया । अब रणधीर ने अपने आदमी भेज कामदार मुतसद्दियों से पूछवाया कि यह सेना किस कार्य के लिए इकट्ठी की जाती है परन्तु उन्होंने यही उत्तर दिया कि "हम नहीं जानते ।" वे आदमी आकर दयाल मोदी की दूकान पर बैठ गये । नर्बद इस दयाल से सलाह किया करता था, जब बालक था तब से रणधीर ने उसकी पालना की थी । रणधीर के मनुष्यों ने मोदी से सामान लिया । उसने और तो सब चीजें दे दीं, परन्तु घृत न दिया । जब उन्होंने घी मांगा तो उत्तर दिया कि "काले के पीला है ।" और फिर घृत दिया । रणधीर के मनुष्यों ने पीछे आकर कहा-राजा, यह पता नहीं लगता कि कटक किस पर तैयार हो रहा है । उसने पूछा-दयाल मोदी ने तुमको कुछ कहा ? उत्तर-और तो कुछ भी नहीं कहा, परन्तु घृत देते समय यह शब्द कहे थे कि "काले के पील बहुत है ।" रणधीर बोला-दयालिया और क्या कहता, काला मैं और पीला मेरा सुवर्ण सो वह कटक मेरे ही पर है । तब उसने भी सेना सजी, फिर आप राणा के पास गया । राणा ने पूछा-"मामाजी, कैसे आये ?" रणमल ने भी उत्तर दिया कि तुझे मंडोव देने के लिए आए हैं राणा ने सहायता देनी कही । ये राणा को लेकर सत्ता पर चढ़े । सत्ता ने अपने पुत्र नर्बद से कहा कि तू भी नागोरी खान को ले आ । नर्बद कोस तीनेक तो गया, परन्तु जब ताप पड़ी तो पीछा फिर आया और छिपकर माता-पिता की बातचीत सुनने लगा । सत्ता (अपनी स्त्री सोनगिरी से कहता है-"सोनगिरी ! नर्बद जानता है कि मेरा पिता कपूत है जो रणधीर को आधा भाग देता है, परन्तु रणधीर के बिना मंडोवर रह नहीं सकता । अब नर्बद नागोरी खान को लेने गया है सो खान आने का नहीं, क्यों कि वह रणमल के हाथ देख चुका है । यह भी अच्छा हुआ, मैं लड़ मरूंगा ।" (पिता के ऐसे वचन सुनकर) नर्बद बोल उठा-"मुझे नागोरी खान के पास किसलिए भेजा, मैं भी युद्ध करूंगा और काम आऊंगा ।" सत्ता बोला-"मैं भी यही कहता था ।" नर्बद ने नक्कारा बनवाया, युद्ध किया और खेत पड़ा । इतने रजपूत उसके साथ मारे गये-ईंदा चोहथ, ईंदा जीवा आदि ।

नर्बद निपट घायल हुआ था और उसकी एक आंख फूट गई थी । राणाजी उसको उठवाकर अपने साथ ले गये और रणमल को राणा ने मंडोवर की गद्दी पर बिठाकर टीका दिया । सत्ता भी राणा के पास जा रहा और वहीं उसका देहांत हुआ ।

(दूसरे स्थान में ऐसा भी लिखा है)-"जब राव चूण्डा मारा गया तो राजतिलक रणमल को देते थे, इतने में रणधीर चूण्डावत दर्बार में आया। सत्ता चूण्डावत वहां बैठा हुआ था, उसको रणधीर ने कहा कि सत्ता ! कुछ देवे तो तुझे गद्दी दिला दूं।" सत्ता बोला कि "टीका रणमल का है।" रणधीर ने अपने वचन की सत्यता के लिए शपथ खाई, तब सत्ता ने कहा कि आधा राज तुझे दूंगा। रणधीर तुरन्त घोड़े से उतर पड़ा और सत्ता के ललाट पर तिलक कर दिया। रणमल को कहा कि कुछ पट्टा ले लो, वह उसने मंजूर न किया और राणा मोकल के पास गया। राणा ने सहायता की, सत्ता भी सम्मुख हुआ और रणधीर राण नागोरी खान को लाया। सीमा पर लड़ाई हुई, रणमल तो खान के मुक़ाबले को गया और रणधीर ने वसना के राणाजी से युद्ध किया। राणाजी हार खाकर भागे, परन्तु खान को रणमल ने भगा दिया। सत्ता व रणमल दोनों के साथियों ने जय ध्वनि की, रणमल अपने दोनों भाईयों से मिला, बातचीत की, पीछा मोकल जी के पास चला गया। सत्ता गद्दी बैठा और राज करने लगा। कालांतर में सत्ता व रणधीर के पुत्र हुए, सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था।

रणमल नित गोटें करता था इसलिए सोनगिरों के भले आदमी देखने को आये थे। उन्होंने पीछे नाडौल जाकर कहा कि राठौड़ काम का नहीं है, यह तुम से न चूकेगा, तुमको मारेगा, इसलिए तुमको उचित है कि अपने यहां इसका विवाह करदो। तब लाला सोनगिरा की बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। फिर भी सोनगिरों ने देखा कि यह आदमी अच्छा नहीं है, तब उन्होंने रणमल पर चूक करना विचारा। एक दिन रणमल सोया हुआ था तब लाला सोनगिरे ने आकर अपनी स्त्री से कहा कि "रामी बाई रांड हो जायगी ?" स्त्री बोली "भले ही हो जावे, यदि एक लड़की मर गई तो क्या।" ठकुराणी ने अपने पति को मद्य का प्याला पिलाकर सुलाया और बेटी से कहा कि रणमल से चूक है, उसको निकाल दे ! रामी ने आकर पति को सूचना दी कि भागो ! चूक है। घातक उसे मारने को आये, परन्तु वह पहले ही निकल गया और घर जाकर सोनगिरों से शत्रुता चलाई, परन्तु वे वार पर न चढ़ते थे। उनका नियम था कि सोमवार के दिन आशापुरी के देहरे जाकर गोठ करते, अमल वारुणी लेते और मस्त हो जाते थे। एक दिन जब वे खा पीकर मस्त पड़े हुए थे तो अचानक रणमल उन पर चढ़ आया और उसने सबको मार कर अखावे के कुंए में डाल दिया। ऊपर सगे साले को डाला। कहा, मैंने सासूजी से वचन पाया है। उनका बदला लिया, राणा मोकल से मिलने के वास्ते गया और वहीं रहने लगा। तब चाचा सीसोदिया और महपा पंवार ने मोकल को मारा तब रणमल को उस चूक का भेद मालूम हो गया था, परन्तु राणा को कुछ खबर न हुई। एक दिन महपा और चाचा महेशी सोलंखी के घर बैठे थे राणा का प्रणाम था। रणमल ने अपने जासूस साथ लगा दिये थे कि देखें ये क्या बातें करते हैं। चाचा महपा ने महेशी को अपने में मिलाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह न मिला। जासूस ने आकर सारा वृत्तांत रणमल से कहा और उसने राणा को सुनाया, परन्तु मोकल ने इस पर विश्वास न किया। रणमल मंडोवर गया और

पीछे से राणा पर चूक हुआ। उसने अचलदास खींची की मदद के वास्ते गढ़ से नीचे आकर डेरा किया था तब महपा ने चाचा को कहा कि आज अच्छा अवसर है, फिर हाथ आने का नहीं; तब चाचा मेरा और महपा बहुत सा साथ लेकर आये। राणाजी ने कहा कि "ये खातणवाले आते हैं सो अच्छा नहीं है। जो गेहूँ में न आने चाहिये, यह मर्दाना के विरुद्ध है।" उस वक्त मलेसी डोडिया ने अर्ज की कि आपको राव रणमल ने चिताया था कि ये आपसे चूक करना चाहते हैं। राणा बोला कि ये हरामखोर अभी क्यों आये? मलेसी ने अर्ज की कि दीवाण! पहले तो मैंने न कहा, परन्तु अब तो आप देखते ही हैं। (चाचा मेरा आन पहुँचे) घोर संग्राम हुआ, नौ आदमियों को राणा ने मारा और पांच को हाड़ी राणी ने यमलोक में पहुँचाया, पांच का काम मलेसी ने तमाम किया, अन्त में राणा मारा गया। चाचा व महपा के भी हल्के से घाव लगे, कुंवर कुंभा बचकर निकल गया। ये उसके पीछे लगे, कुंभा पटेल के घर पहुँचा। पटेल के दो घोड़ियां थी। उसने कहा कि एक घोड़ी पर चढ़कर चले जाओ और दूसरी को काट डालो, नहीं तो वे लोग ऐसा समझेंगे कि इसने घोड़ी पर चढ़ाकर निकाल दिया है। कुंभा ने वैसा ही किया। जो लोग खोजने आये थे वे पीछे फिर गये। मोकल को मारकर चाचा तो राणा बना और महपा प्रधान हुआ। कुंभा आफत का मारा फिरता रहा। जब यह समाचार रणमल को लगे तो वह सेना साथ लेकर आया, चाचा से युद्ध हुआ और वह भाग कर पई के पहाड़ों पर चढ़ गया। रणमल ने कुंभा को पाट बैठाया और आप उन पहाड़ों में गया, बहुत दौड़ धूप की, परन्तु कुछ दाल न गली, क्योंकि बीच में एक भील रहता था, जिसके बाप को रणमल ने मारा था। वह भील चाचा व महपा का सहायक बना। एक दिन रणमल अकेला घोड़े पर सवार उस भील के घर जा निकला। भील घर में नहीं थे, उनकी मां वहां बैठी थी। उसको बहन कहके पुकारा और बढ़कर उससे बातें करने लगा। भीलनी बोली कि वीर! तैने बहुत बुरा किया, परन्तु तुम मेरे घर आ गये अब क्या कर सकती हूँ। अच्छा अब घर में जाकर सो रहो। राव ने वैसा ही किया। थोड़ी देर पीछे वे पांचों भाई भील आये उनकी मां ने उनसे पूछा कि बेटा! अभी रणमल यहां आवे तो तुम क्या करो? कहा, करें क्या, मारें; परन्तु बड़े बेटे ने कहा—"मां! जो घर पर आवे तो रणमल को न मारें।" मा ने कहा—शाबाश बेटा! घर पर आये हुए तो वैरी को भी मारना उचित नहीं।" रणमल को पुकारा कि वीर बाहर आ जावो। वह आकर भीलों से मिला। उन्होंने उसकी बड़ी सेवा मनुहार की और पूछा कि तुम मरने के लिए यहां कैसे आये? कहा कि भानजो! मैंने प्रतिज्ञा की है कि चचा को मारूं तब अन्न खाऊं परन्तु करू क्या तुम्हारे आगे कुछ बस नहीं चलता है। भीलों ने कहा, अब हम तुमको कुछ भी ईजा न पहुंचावेंगे। फिर रणमल अपने योद्धाओं को लेकर पहाड़ तले आया; भीलों ने कहा कि पहाड़ के मार्ग में एक सिंहनी रहती है सो मनुष्य को देख कर गर्जना करेगी। रणमल तो पगडंडी चढ़ता हुआ सिंहनी के समीप जा पहुंचा, वह गर्ज उठी, तुरन्त अरड़कमल (अड़कमल) ने तलवार खींची उस पर वार किया और वहीं काट कर उसके दो टुकड़े कर दिये। सिंहनी का शब्द सुनकर ऊपर रहने वालों ने कहा कि सावधान! परन्तु वह एक दो बार बोलने पाई थी इसलिए

(दूसरे स्थान में ऐसा भी लिखा है)-"जब राव चूण्डा मारा गया तो राजतिलक रणमल को देते थे, इतने में रणधीर चूण्डावत दर्बार में आया। सत्ता चूण्डावत वहां बैठा हुआ था, उसको रणधीर ने कहा कि सत्ता ! कुछ देवे तो तुझे गद्दी दिला दूं।" सत्ता बोला कि "टीका रणमल का है।" रणधीर ने अपने वचन की सत्यता के लिए शपथ खाई, तब सत्ता ने कहा कि आधा राज तुझे दूंगा। रणधीर तुरन्त घोड़े से उतर पड़ा और सत्ता के ललाट पर तिलक कर दिया। रणमल को कहा कि कुछ पट्टा ले लो, वह उसने मंजूर न किया और राणा मोकल के पास गया। राणा ने सहायता की, सत्ता भी सम्मुख हुआ और रणधीर राण नागोरी खान को लाया। सीमा पर लड़ाई हुई, रणमल तो खान के मुकाबले को गया और रणधीर ने असना के राणाजी से युद्ध किया। राणाजी हार खाकर भागे, परन्तु खान को रणमल ने भगा दिया। सत्ता व रणमल दोनों के साथियों ने जय ध्वनि की, रणमल अपने दोनों भाइयों से मिला, बातचीत की, पीछा मोकल जी के पास चला गया। सत्ता गद्दी बैठा और राज करने लगा। कालांतर में सत्ता व रणधीर के पुत्र हुए, सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था।

रणमल नित गोटें करता था इसलिए सोनगिरों के भले आदमी देखने को आये थे। उन्होंने पीछे नाडौल जाकर कहा कि राठौड काम का नहीं है, यह तुम से न चूकेगा, तुमको मारेगा, इसलिए तुमको उचित है कि अपने यहां इसका विवाह करदो। तब लाला सोनगिरा की बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। फिर भी सोनगिरों ने देखा कि यह आदमी अच्छा नहीं है, तब उन्होंने रणमल पर चूक करना विचारा। एक दिन रणमल सोया हुआ था तब लाला सोनगिरे ने आकर अपनी स्त्री से कहा कि "रामी बाई रांड हो जायगी ?" स्त्री बोली "भले ही हो जावे, यदि एक लड़की मर गई तो क्या।" ठकुराणी ने अपने पति को मद्य का प्याला पिलाकर सुलाया और बेटी से कहा कि रणमल से चूक है, उसको निकाल दे ! रामी ने आकर पति को सूचना दी कि भागो ! चूक है। घातक उसे मारने को आये, परन्तु वह पहले ही निकल गया और घर जाकर सोनगिरों से शत्रुता चलाई, परन्तु वे वार पर न चढ़ते थे। उनका नियम था कि सोमवार के दिन आशापुरी के देहरे जाकर गोठ करते, अमल वारुणी लेते और मस्त हो जाते थे। एक दिन जब वे खा पीकर मस्त पड़े हुए थे तो अचानक रणमल उन पर चढ़ आया और उसने सबको मार कर अखावे के कुंए में डाल दिया। ऊपर सगे साले को डाला। कहा, मैंने सासूजी से वचन धारा है। उनका इलाका लिया, राणा मोकल से मिलने के वास्ते गया और वहीं रहने लगा। तब चाचा सीसोदिया और महपा पंवार ने मोकल को मारा तब रणमल को उस चूक का भेद मालूम हो गया था, परन्तु राणा को कुछ खबर न हुई। एक दिन महपा और चाचा महेशी डोडिये के घर गये जो राणा का खवास था। रणमल ने अपने जासूस साथ लगा दिये थे कि देखें ये क्या बातें करते हैं। चाचा महपा ने महेशी को अपने में मिलाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह न मिला। जासूस ने जाकर सारा वृतांत रणमल से कहा और उसने राणा को सुनाया, परन्तु मोकल ने इस पर विश्वास न किया। रणमल मंडोवर गया और

पीछे से राणा पर चूक हुआ। उसने अचलदास खींची की मदद के वास्ते गढ़ से नीचे आकर डेरा किया था तब महपा ने चाचा को कहा कि आज अच्छा अवसर है, फिर हाथ आने का नहीं; तब चाचा मेरा और महपा बहुत सा साथ लेकर आये। राणाजी ने कहा कि "ये खातणवाले आते हैं सो अच्छा नहीं है। जौ गेहूँ में न आने चाहिये, यह मर्दाना के विरुद्ध है।" उस वक्त मलेसी डोडिया ने अर्ज की कि आपको राव रणमल ने चिताया था कि ये आपसे चूक करना चाहते हैं। राणा बोला कि ये हरामखोर अभी क्यों आये? मलेसी ने अर्ज की कि दीवाण! पहले तो मैंने न कहा, परन्तु अब तो आप देखते ही हैं। (चाचा मेरा आन पहुँचे) घोर संग्राम हुआ, नौ आदमियों को राणा ने मारा और पांच को हाड़ी राणी ने यमलोक में पहुँचाया, पांच का काम मलेसी ने तमाम किया, अन्त में राणा मारा गया। चाचा व महपा के भी इनके से घाव लगे, कुंवर कुंभा बचकर निकल गया। ये उसके पीछे लगे, कुंभा पटेल के घर पहुँचा। पटेल के दो घोड़ियां थी। उसने कहा कि एक घोड़ी पर चढ़कर चले जाओ और दूसरी को काट डालो, नहीं तो वे लोग ऐसा समझेंगे कि इसने घोड़ी पर चढ़ाकर निकाल दिया है। कुंभा ने वैसा ही किया। जो लोग खोजने आये थे वे पीछे फिर गये। मोकल को मारकर चाचा तो राणा बना और महपा प्रधान हुआ। कुंभा आफत का मारा फिरता रहा। जब यह समाचार रणमल को लगे तो वह सेना साथ लेकर आया, चाचा से युद्ध हुआ और वह भाग कर पई के पहाड़ों पर चढ़ गया। रणमल ने कुंभा को पाट बैठाया और आप उन पहाड़ों में गया, बहुत दौड़ धूप की, परन्तु कुछ दाल न गली, क्योंकि बीच में एक भील रहता था, जिसके बाप को रणमल ने मारा था। वह भील चाचा व महपा का सहायक बना। एक दिन रणमल अकेला घोड़े पर सवार उस भील के घर जा निकला। भील घर में नहीं थे, उनकी मां वहां बैठी थी। उसको बहन कहके पुकारा और बढ़कर उससे बातें करने लगा। भीलनी बोली कि वीर! तैंने बहुत बुरा किया, परन्तु तुम मेरे घर आ गये अब क्या कर सकती हूँ। अच्छा अब घर में जाकर सो रहो। राव ने वैसा ही किया। थोड़ी देर पीछे वे पांचों भाई भील आये उनकी मां ने उनसे पूछा कि बेटा! अभी रणमल यहां आवे तो तुम क्या करो? कहा, करें क्या, मारें; परन्तु बड़े बेटे ने कहा—" मां! जो घर पर आवे तो रणमल को न मारें।" मा ने कहा—शाबाश बेटा! घर पर आये हुए तो वैरी को भी मारना उचित नहीं।" रणमल को पुकारा कि वीर बाहर आ जावो। वह आकर भीलों से मिला। उन्होंने उसकी बड़ी सेवा मनुहार की और पूछा कि तुम मरने के लिए यहां कैसे आये? कहा कि भानजो! मैंने प्रतिज्ञा की है कि चचा को मारूं तब अन्न खाऊं परन्तु करू क्या तुम्हारे आगे कुछ बस नहीं चलता है। भीलों ने कहा, अब हम तुमको कुछ भी ईजा न पहुंचावेंगे। फिर रणमल अपने योद्धाओं को लेकर पहाड़ तले आया; भीलों ने कहा कि पहाड़ के मार्ग में एक सिंहनी रहती है सो मनुष्य को देख कर गर्जना करेगी। रणमल तो पगडंडी चढ़ता हुआ सिंहनी के समीप जा पहुंचा, वह गर्ज उठी, तुरन्त अड़वाल (अड़कमल) ने तलवार खींची उस पर वार किया और वहीं काट कर उसके दो टुकड़े कर दिये। सिंहनी का शब्द सुनकर ऊपर रहने वालों ने कहा कि सावधान! परन्तु वह एक ही बार बोलने पाई थी इसलिए

उन्होंने सोचा कि किसी पशु को देखकर बोली होगी। इतने में तो रणमल घोड़े को नीचे छोड़ कर पहाड़ पर चढ़ गया और दर्वाजे पर जाकर बर्छा मारा। भीतर जो मनुष्य थे, चौंक पड़े और कहा, रणमल आया। चाचा मेरा से लड़ाई हुई, सीसोदियों को मार कर पांवों तले पटका चाचा मारा गया और महपा स्त्री के कपड़े पहन कर पहाड़ के नीचे कूद भाग गया। रणमल ने चाचा की वेटी के साथ विवाह किया, मनुष्यों के घरों के बाजोट और बर्छियों की चंवरी बना कर वहां सीसोदियों की कई कन्याएं रणमल ने अपने भाइयों को विवाह दी और पीछा लौटा।

महपा भाग कर मांडू के बादशाही की शरण गया। जब यह खबर राणाजी को हुई तब उन्होंने बादशाह पर दबाव डाल कर कहलाया कि हमारे चोर को भेज दो। बादशाह ने महपा को कह दिया कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। महपा ने उत्तर दिया कि मुझको कैद करके शत्रु को मत सौंपिए और आप घोड़े सवार हो गढ़ के द्वार पर आ घोड़े समेत नीचे कूद पड़ा। घोड़ा तो पृथ्वी पर पड़ते ही मर गया और महपा भाग कर गुजरात के बादशाह के पास पहुँचा। जब उसने वहां भी बचाव की कोई सूरत न देखी तो चित्तौड़ ही की तरफ चला। वहां राज्य तो राणाजी करते थे, परन्तु राज का सब काम रणमल के हाथ में था। महपा रात्रि के समय लकड़ियों का भार सिर पर धर कर नगर में पैठा। उसकी एक स्त्री अपने पुत्र सहित वहां रहती थी, जिसको उसने सुहागन कर रक्खा था। उसके घर आया, पत्नी ने अपने पति को पहचान कर भीतर लिया। अब वह घर में बैठा रहे और सूत के मोहरे व रस्से बनावे। एक दिन एक मोहरी अपने पुत्र को देकर कहा कि जाकर दीवाण के नजर करदे और जो दीवाण कुछ प्रश्न करे तो अर्ज करना कि महपा हाजिर है। वेटे ने हजूर में जाकर मोहरी नजर की और दीवाण ने पूछा तो अर्ज कर दी कि महपा हाजिर है। राणा ने उसे बुलाया। उसने अर्ज की कि मेवाड़ की धरती राठोड़ों ने ली। यह बात सुनते ही दीवाण के मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि ऐसा न हो कि रणमल मुझे मार कर राज लेले। राणा ने सेना एकत्रित की और वे रणमल को चूक से मार डालने का विचार करने लगे। रणमल के डोम ने किसी प्रकार वह भेद पा लिया और राव से कहा कि दीवाण आप पर चूक करना चाहते हैं, परन्तु राव को उसकी बात का विश्वास न आया तो भी अपने सब पुत्रों को वह तलहटी ही में रखने लगा। (अवसर पाकर) एक दिक चूक हुआ। २५ गज पछेवड़ी राव के पलंग से लपेट दी, जिसपर राव सोया हुआ था। सत्रह मनुष्य राव को मारने के लिये आये, जिनमें से १६ को तो राव ने मार डाला। और महपा भाग कर बच गया। रणमल भी मारा गया। यहां रणधीर चूण्डावत, सत्ता भाटी लूणकरणोत, रणधीर, सुरावत और दूसरे भी कई काम आये। (रणमल के पुत्र) जोधा, सीहा, नापा तलहटी में थे भाग निकले। उनके पकड़ने को फौज भेजी गई, जिसने आडावला (अर्वली) पहाड़ के पास उन्हें जा लिया और वहां युद्ध हुआ, जहां चरड़ा, चांदराय, अरडकमलोत, पृथ्वीराज, तेजसिंह आदि और भी राठौड़ों के सर्दार मारे गये परन्तु जोधा कुशलतापूर्वक मंडोवर पहुँच गया।

नर्बद सतावत ने राणाजी को आंख दी जिसकी बात—जब राणा मोकल और राव रणमल मंडोवर पर चढ़ आये (सत्ता के पुत्र) नर्बद ने युद्ध किया और घायल हुआ। उस वक्त उसकी बांई आंख पर तलवार बही, जिससे वह आंख फूट गई। राणा नर्बद को उठा कर अपने साथ लाया, घाव बंधवाये और मरहमपट्टी करवाये उसको चंगा किया। लाख रुपये की वार्षिक आय का कायलाणे का ठिकाना उसे जागीर में दिया। राणा मोकल चाचा मेरा के हाथ से मारा गया और राणा कुम्भा पाट बैठा, उसने राव रणमल को चूक कर मरवाया। नर्बद तब भी दीवाण ही के पास रहता था। एक दिन दीवाण दर्बार में बैठे थे तब किसी ने कहा कि "आज नर्बद जैसा राजपूत दूसरा नहीं है" राणा ने पूछा कि उसमें क्या गुण है जो इतनी प्रशंसा की जाती है? उत्तर दिया कि दीवाण उनसे कोई भी चीज मांगी जावे वह तुरन्त दे देता है। राणा ने कहा हम उससे एक चीज मांगते हैं, क्या यह देगा? अर्ज हुई कि देगा। नमर्द उस दिन मुजरे को ही नहीं आया था। दीवाण ने अपने एक खवास को उसके पास भेज कहलाया कि "दीवाण ने तुमसे आंख मांगी है।" नर्बद बोला– दूंगा। खवास की नजर बचा पास ही भलका पड़ा हुआ था, जिससे आंख निकाल रूमाल में लपेट उसके हवाले की। यह देख खवास का रंग फक हो गया क्योंकि दीवाण ने खवास को पहले समझा दिया था कि यदि नर्बद तेरे कहने पर आंख निकालने लगे तो निकालने मत देना, परन्तु नर्बद ने तो आंख निकाल हाथ में दे दी। खवास ने वह रूमाल दीवाण के नजर किया और दीवाण ने आंख देखकर बहुत ही पश्चाताप किया। आप नर्बद के डेरे पधारे, उसको बहुत अश्वासन देकर उसकी जागीर ड्योढ़ी करदी।

मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १ अनुवादक श्री राम नारायण दूगड़, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय टिप्पणी

मुहणोत नेणसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "मुहणोतनेणसीरी ख्यात" में राजस्थान के इतिहास पर विस्तार से लिखा है। मूल ग्रन्थ राजस्थानी भाषा में है जिसका प्रकाशन "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" में किया जा रहा है। इस ख्यात का हिन्दी रूपान्तर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

"वीरवांण" सम्बन्धी कई घटनाओं के विषय में भी मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है। मुहणोत नेणसी के वक्तव्य से काव्य के ऐतिहासिक पक्ष को समझने में बहुत सहायता मिलती है। साथ ही वीरमजी, गोगाजी आदि काव्यगत चरित्रों के सम्बन्ध में कई नवीन सूचनायें प्राप्त होती हैं। इसलिये मुहणोत नेणसीरी ख्यात के सम्बन्धित अंशों को यहां प्रकाशित किया गया है।

परिशिष्ट ५

शब्दार्थ

अखा = सौंपकर ।
अखंदा = कहा ।
अछरां = अप्सराएँ ।
अछक्की = अतृप्त ।
अणचिंत्या = अचानक ।
अणी = फौज ।
अपती = अविश्वसनीय ।
अबखी = दुःख के समय ।
अबीह = निडर ।
अरक = सूर्य ।
अरिगंज खाग उठाय = शत्रु को नष्ट करने वाली तलवार उठाकर ।
अवलिया = औलिया ।
अस = अश्व ।
असमर = तलवार ।
असफड़ = घोड़ों का चीरा हुआ भाग ।
अहराव = सर्पों का राजा ।
अहि = सर्प ।
आसंग=शक्ति ।
आरांण = युद्ध ।
आयस = आज्ञा ।
आमष = आमिख ।
आफू=अफीम ।
आपो = देवो ।
आपांणी = पुरुषार्थी ।
आदू = आरंभ से ।
आजोका = जिसको जक (चैन) ही न पड़े ।
इल = पृथ्वी ।
ईख = देखकर ।
उकती=सूझ ।
उजीर = वजीर ।
उथपै = हटाना ।
उपाध = बखेड़ा ।
उमियां = उमा ।
ऊंधी = उलटी ।
उनांणी = नंगी तलवार ।
उलिये गड्डे = गाड़ी उलटने पर ।
उरस = आकाश ।
ऊरिया = घोड़े से हमला करना ।
ऐराकियां = घोड़े ।
ओडां = तरफ ।
ओध = खानदान ।
ओलादीला = आसपास

ओसके = पांव पीछे हटा दिये।
कत्थ = बात।
कमीण = विवाह में नेग लेने वाले व्यक्ति जैसे नाई, कुम्हार, बढ़ई आदि।
कमंधा = राठौड़ जाति के राजपूत।
करग = हाथ।
करलाया = क्रन्दन किया।
कर तेगां नंगा = नंगी तलवारें हाथ में लेकर।
कलह = युद्ध।
कव = कवि।
कांण = मर्यादा।
कांमेती = कर्मचारी।
किरमिर = तलवार।
किरणाला = तेजस्वी।
किलमा = मुसलमान।
कूक – फरियाद, शोर।
कूक कराणी = पुकार की।
कूकाऊ = पुकारू।
कूड़ = झूट।
केकांण = घोड़ा।
केवांण = तलवार।
केवि = कई।
कोड़ीधर = करोड़ों के मूल्य वाले।
खगवाढ़ खिराणी = तलवारों की धारें खिर गईं।
खड़िया = चला
खथ्ये = तेजी से
खल = शत्रु।
खांगां खलकायां = तलवारों से काट डाले।
खांचा तांणां = खींच तान कर।
खाजरू = बकरे।
खापां = तलवार।
खाफर = काफिर।
खामंद = खाविंद।
खिम खून = कितने ही।
खिताई = अपराधों को क्षमा किया।
खिमंदे = सहन करेंगे।
खूनियों = अपराधियों।
खूर चलाया = घोड़े बढ़ाये।
खेचर = आकाश पर विचरने वाले।
खैंग = घोड़ा।
खैंगां = घोड़े
खोज = चिन्ह।
खोलड़ = झोंपड़ी।
ग्रभ = गर्व।
गल = बात
गवराये = गीतों में गाये गये।
गह में भरियोड़ा = घमंड में भरा हुआ।
गायणिया = गाने वाली स्त्रियां।
गिलणकूं = गिरने को।
गुणियण = गुनी जन।
गेरिया = होलीपर डंडों से खेलने वाला।
गैण = गयण, आकाश।
गैब = अदृष्य।
घड़ा = सेना।
घमोड़ी = जोर से मारी।
घोरां घलवाया = कब्रों में सुलादिया।
चखलल्ले = लाल आंखे।
चवे = कहना।
चिगायो = बहकाया।
चित्त विटालिया = बुद्धि बिगड़ गई।
चूक = धोखे से मारना।
चोहटां = बजार।
चंचल = घोड़ा।
छांनै = छिपकर।

छिवंता – स्पर्श करते हुए।
छोरू – बच्चे ।
ज्याग – यज्ञ।
जरंदा – पच सकेगा ।
जरां – तव।
जळ चाढां – आव चढ़ायें।
जहुवांर – जुहार, मुजरा
जाव – जवाव।
जारिया – सहन किया।
जीण करे – जीन कसना।
जेज – देर।
जेवड़ा – रस्से।
टोळा – ऊँटों का भुण्ड।
टिल्ला – धक्का।
ठाला – वेकार।
ठहके – ठहर जाना।
डंवर – वादल।
डांणी – कर वसूल करने वाला अहलकार।
डूमड़ा – ढोली।
डोकर – वुढिया।
डोफा – वेवकूफ।
डोळी – डोली जिसमें घायलों को उठाया जाता है।
तरवारी – तलवार।
तवाई – आपत्ति की जांच।
तागा – मरने को तैयार होना।
ताजण – घोड़ी।
तेरू – तैराक ।
तेरे तुगां – फोजों का समुह।
तिरसां – प्यासे।
तोखार – घोड़ा ।
थट – समूह।
थपै – स्थापित करना।
थान – स्थान।
दाटिया – रोका।
दाठै – रोकता है ।
दिन घोळै – दिन दहाड़े।
दिहाडां – दिन।
दुझाल – योद्धा ।
दुथणी – दो स्तनों वाली से उत्पन्न मनुष्य मात्र ।
दोयण – शत्रु।
धकचाळा – युद्ध ।
धज – ध्वज।
धन – गोधन ।
धणियाप – स्वामीत्व ।
ध्राह – आतंक।
धारू – एक प्रसिद्ध भक्त।
धींव – झड़ी।
धू – मस्तक।
धूड़ – धूलि।
धूप – खांडा।
धूंसवा – ध्वंस करने को।
धूंसै – रण के नक्कारे।
धेख – वैर।
धोवा – अंजलि भरकर।
धोम – क्रोधित।
नखतेत – अच्छे नक्षत्रों वाला ।
नंगारे वंवापड़ – नक्कारे पर चोव पड़ी।
नाठा – भगे ।
नालेर – नारियल।
नाळियां – वन्दूकें।
नेजा – भाला।
नेम – नियम।
पख – पक्ष।
पखराळा – पाखर से युक्त।
पड़प्पंण – वूता ।
पड़ै – चित्र।
पण – प्रतिज्ञा।
पमंग – घोड़ा।
परदलो – कमर में बांधने का पट्टा जिसमें तलवार रहती है।

परत – बिलकुल ।
पल – मांस ।
पलचर – मांस भक्षी ।
पलाणी – घोड़ों पर जीन कसे ।
पाखती – पार्श्व ।
पाखर – घोड़े के लोह के कवच ।
पाणां – हाथ ।
पाडव – चरवादार ।
पाड़िया – मारे ।
पाणी राळियो – आंसू बहाये ।
पालवा – मना करने को ।
पाळा – पैदल ।
पालिया – मना किया ।
पिंड – शरीर ।
पेटो – भेद ।
पोहर – एक पहर ।
पोहता – पहुँचे ।
पोह – उषा काल ।
पखरिणगा – मांसाहारी पक्षी ।
पंखराव – गरूड़ ।
पंचौल – पंचायत ।
फणधर – शेषनाग ।
फरहास – एक प्रकार का वृक्ष ।
फाचरा – लकड़ी के टुकड़े ।
बगतर कुठां वीड़िया – बख्तर की कड़ियां कसकर ।
बकारे – ललकारना ।
बटका – टुकड़े ।
बड़नाळ – एक प्रकार की बन्दूक ।
बडाला – बड़ाई युक्त ।
बक्के – कहते हैं ।
बधाया – स्वागत किया ।
बपसक बडाळा – जिससे बड़े-बड़े भी भयभीत हो जावें ।
स – वर्ष ।
बाकर – बकरे ।
बामण – ब्राह्मण आदि ।
बारठ – बारहठ, चारण ।
बारा – समय ।
बागी झाट – जोर से तलवारें चली ।
बाहर – छोटी फौज ।
बीजळ – तलवार ।
बीजाई – दूसरा ।
बिरदा रूख वाळा – यश के रक्षक ।
बूडसी – डूब जायगा ।
बेली – साथी ।
भथ्थे – तूणीर ।
भाण – सूर्य्य ।
भाजिया – भग गये ।
भारात – युद्ध ।
भाळवा – देखने को ।
भिड़ज – घोड़ा ।
भुजपांण – भुजबल ।
भूंड – बदनामी ।
भूतावळ – भूतों से ।
म – मत ।
मन वेठियो – मन रखा ।
मलफाणी – शेर की उछल ।
महल – स्त्री ।
मांगे खासां – मांगकर खायेंगे ।
माणस – मनुष्य ।
मिणधारी – मणिधारी ।
मियानां – म्यांनों से ।
गुंजावर – मजाफर ।
मुझ हंदा – मेरा ।
मुसकण – मुश्की घोड़ा ।
मोकलूं – भेजूं ।
मंगरै – मेला ।
मंडलीक – बड़ा राज ।
रकेबां – रकाब ।
रणतूर – रण के बाजे ।
रत – रक्त ।

राइका – रैबारी जाति जो ऊंट चराती है।
राड़धरा – मारवाड़ के गांव का नाम है।
रावत – बहादुर।
रीमां – शत्रु।
रूंक – तलवार।
लाणत – लानत।
लिगार – बिलकुल।
लियो वडाय – कटा लिया।
लीह – लकीर।
लूण उजाळियो – नमक हलाली की।
लंगर – योद्धा।
वनराव – सिंह।
वरमालतां – विवाह करते समय।
वळ – खाद्य सामग्री।
वासख – वासुकि नाग।
वागां ढोलांरी विगत – ढोल बजाने का वृत्तान्त।
वाळियो – वैर लिया।
वासै – सहायक।
विडंगां – घोड़े।
विमाह – विवाह।
विय्याह – विवाह।
वींटिया – घेर लिया।
वीराद वीरांणी – वीरों में भी उत्तम वीर।
वीहगेस – गरूड़।
वीहडै – मारना।
सखरी – अच्छे।
श्रग – स्वर्ग।
सतावी – जल्दी के।
सपतास – सूर्य का सपताश्व घोड़ा।
समसेर संभाई – तलवार उठाई।
समापो – देवो।
समीयांण – सज्जन।
सलखाणयां – सलखेजीं के पुत्र।
सल्ला – सलाह।
साकण – एक प्रकार की डाकिन।
साकुर – घोड़ा।
साख – फसल।
साखत – घोड़े का साज।
सांणी – तबेले का दरोगा।
सादूलो – शार्दूल।
साधिया – जोड़ दिये।
सावळ – भाला।
सामठा – बहुत।
सामेळ – स्वागत।
सायर – सागर।
सावंत – योद्धा।
सिरगळ – शृगाल।
सिलग्गी – सुलगी।
सींचांणे – बाज पक्षी।
सोण – श्रोणित।
सोबायत – सूबेदार।
सोहडां – योद्धा।
हणसी – मारेगा।
हेरू – तलास करने वाले।
है – हय, घोड़ा।
हैकण – एक।
हैवर – घोड़ा।
होकार – हूंकार।
त्रामंक – नक्कारां।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी



प्रकाशित राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित । सम्पादक—प्रो. के. बी. व्यास, एम. ए. । मूल्य १२.२५
२. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित । सम्पादक—डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द, भंवरलाल नाहटा । मूल्य ४.७५
३. लावारासा, चारण कविया गोपालदान विरचित । सम्पादक—श्री महतावचन्द खारैड़ । मूल्य ३.७५
४. वाँकीदासरी ख्यात, कविवर वाँकीदास । सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग १, सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य २.२५
६. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत । सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य १.७५
७ कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य कृत । सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य २.००
८. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत । सम्पादक—श्री उदैराज उज्ज्वल । मूल्य १.७५
९. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग १ । मूल्य ७.५०
१०. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २ । मूल्य १२.००
११. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १ मुंहता नैणसी कृत । सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया । मूल्य ८.५०
१२. रघुवरजसप्रकाश, किसनाजी आढ़ा कृत । सम्पादक—श्री सीताराम लाळस । मूल्य ८.२५
१३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १ । मूल्य ४.५०
१४. वीरवांण, ढाढी बादर कृत । सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य ४.५०

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.